पुरुषोत्तम मास साधना विशेषांक
सितम्बर 2020
मूल्य – 40/–
वर्ष 10
अंक-12
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
•सालिग्राम साधना
•श्री यंत्र रहस्य
•रतिप्रिया साधना
पुरुषोत्तम मास में सम्पन्न करें
कुछ सरल साधनाएं

नारायण ध्यान

- कभी तुमने सोचा है, जब तुम्हारा अंतस् बेचैन हो उठता है, तुम्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता है, जब इस संसार में सब कुछ बेमानी सा लगने लगता है तुम क्या करते हो?
- तुम बेचैन से इधर-उधर भटकते फिरते हो, यदि तुम्हारा बेटा, तुम्हारी पत्नी तुमसे कुछ पूछ ले, तो तुम झल्ला जाते हो, यदि दोबारा पूछ ले, तो तुम क्रोध की प्रतिमूर्ति बन बेटे को मार देते हो, पत्नी को फटकार देते हो? क्या यह उचित है?
- तुमने कभी सोचा ही नहीं इस बारे में, क्योंकि तुम अपने आपसे बात करने की क्रिया भूल गये हो।
- और यही क्रिया तो मैं तुम्हें सिखाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।
  क्या तुम मेरे प्रयत्न को सार्थक करोगे?
- हाँ! तो मेरी बात ध्यान से सुनो और ऐसा ही करने की आदत बना लो। तुम्हें रोज सोने से पहले यह कार्य करना ही होगा।
- हाथ-पैर धो-पोंछ कर अपने दिनभर के पहने कपड़े उतार कर साफ-स्वच्छ और ढीले वस्त्र पहन लो। यदि किसी परिस्थिति से मजबूर होकर, ऐसा नहीं कर पाते हो तब भी तुम इस क्रिया को कर सकते हो।
- आंख बंद कर पूरे शरीर को ढीला छोड़ते हुए लेट जाओ। अपने दिमाग और पूरे शरीर को आज्ञा दो, कि 'वह बिल्कुल शांत हो रहा है।', गुरु मंत्र का 16 बार उच्चारण करो फिर सिर्फ पांच बार 'नारायण, नारायण' बोलो।
- फिर बिल्कुल शांत हो जाओ, तुम सोचो कि तुम्हारे मस्तिष्क का तूफान शांत हो गया है।
- धीरे-धीरे तुम शांत हो जाओगे, ऐसे समय में तुम्हारा शरीर और मन एक हो जायेंगे, फिर तुम जो भी आज्ञा दोगे, शरीर और मन दोनों को मानना ही होगा।
- यदि नींद आ जाये, तो परेशानी की बात नहीं है, सुबह उठते समय पुनः 'नारायण, नारायण' मंत्र का पांच बार उच्चारण करो।
- यदि तुम सोना नहीं चाहते हो, तो तुम मस्तिष्क से क्रोध समाप्त हो रहा है यह भाव लाओ। पांच मिनट में तुम सफल हो जाओगे। 'नारायण' मंत्र का पांच बार उच्चारण करो।
- तुम नये जोश, उमंग, प्रेम और अपनत्व के भाव से परिपूर्ण हो जाओगे।

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम: ||

व्यापार में अभूतपूर्व सफलताप्राप्ति के लिए : श्री यंत्र स्थापन

यौवन को बरकरार रखें : रतिप्रिया साधना

शारदीय नवरात्रि के प्रत्येक दिन के लिए विशिष्ट : नवदुर्गा साधना

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता

सद्‌गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग

उपहार दीक्षा
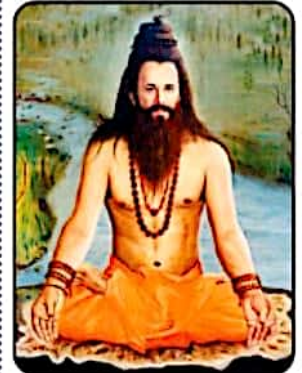
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन नं.: 011-79675768, 79675769, 27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं.: 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

तन्त्रात्मकं जगदिदं कमनीयकान्तं,
सन्दूषितं परमिदं निजस्वार्थ लुब्धैः
सौम्येन तन्त्रविधान। परमार्थ चिन्त्यं
तन्त्रेश्वरंच निखिलं सततं प्रणम्यम।

इस सुखद और सौन्दर्य पूर्ण संसार की रचना तंत्र के द्वारा ही संभव हो पाई है। स्वार्थलोलुप तथाकथित तांत्रिकों ने इसे दूषित कर दिया था। आप ने इसे सौम्य विधि से पूर्ण चन्द्र की तरह निर्मल बनाकर लोकोपकार किया है, आप तन्त्रेश्वर हैं, निखिलेश्वर हैं, अतः सतत् प्रणम्य हैं।

सच्ची पुकार

एक बार गजराज अपने झुण्ड के साथ वन में विचरण कर रहा था। प्यास बुझाने के लिए वहीं सरोवर में उतर गया। उसी सरोवर में रहने वाले ग्राह ने गजराज का पैर पकड़ लिया तथा पानी में खींचने लगा। गजराज को अपने बल का बड़ा घमण्ड था। बहुत देर तक दोनों में संघर्ष होता रहा। धीरे-धीरे ग्राह गजराज को पानी में खींचने लगा।

अन्त में गजराज ऐसी स्थिति में आ गया, कि वह स्वयं के जीवन की आशा से निराश हो गया। पूर्व जन्म की स्मृति के कारण आखिरी समय में उसने आर्त-भाव से नारायण स्तुति की। अब तक उसके बल का घमंड चूर हो चुका था, अतः सच्चे हृदय से पुकार की।

तत्क्षण चक्रपाणि भगवान नारायण अपने भक्त की रक्षा के लिए प्रकट हो गये तथा ग्राह को मारकर गजराज की रक्षा की।

आज भी उस चक्र की धार उतनी ही पैनी है। आज भी भगवान नारायण किसी और रूप में भक्तों एवं शिष्यों की क्षण-प्रतिक्षण रक्षा कर रहे हैं, क्योंकि यह तो उनका व्रत है, संकल्प है।

आवश्यकता इस बात की है, कि हम उन्हें सच्चे हृदय से पुकार सकें। अपनों की आर्त पुकार सुनकर वे रुक नहीं सकते। एक क्षण की भी देरी सम्भव नहीं है। उन्हें आना ही होगा, क्योंकि यह तो उनका वचन है

हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मोरी,
यह व्रत टरत न टारे।

Scanned with CamScanner

आज गणेश चतुर्थी के अवसर पर मैं गणेश उपनिषद् के श्लोक से अपनी बात प्रारंभ कर रहा हूं। इस श्लोक में कहा गया है कि लक्ष्मी, रूद्र और गणपति तीनों एक ही पर्याय है। यह अलग बात है कि हम देवताओं को अलग-अलग टुकड़ों में बांटकर देखने के आदी हो चुके हैं। जो हमारे जीवन में सुख देने वाले हैं और इससे भी बड़ी बात जो हमारे जीवन के अभाव, दुखों और कष्टों को दूर करने वाले हैं, वे गणपति हैं। साधना करना तब सार्थक होता है जब हमारी समस्याओं का निपटारा हो। भगवान गणपति, लक्ष्मी और रूद्र सभी साधकों एवं शिष्यों का कल्याण करें, ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूं, कल्याण कामना करता हूं।

हम जो कुछ भी बोलते हैं वह शब्दमय और ब्रह्ममय होता है। इसलिए हमारे बोलने के पीछे हमारी चेतना का, हमारी तपस्या का, हमारे व्यक्तित्व का अभ्यास होना चाहिए। यदि हमारे पास तपस्या का अंश नहीं है, साधना का अंश नहीं है तो हमारा जीवन व्यर्थ है और साधना, तपस्या और सिद्धियां उम्र के साथ साथ नहीं मिलतीं। अनुभव एवं कर्म से मिलती हैं। जीवन में बड़ा आदमी उम्र से नहीं आंका जा सकता।

आयु वृद्धोपि न वृद्ध, ज्ञान वृद्धोपि वृद्ध!

जो ज्ञान से बड़ा है उसे बड़ा कहते हैं, जो आयु से बड़ा है उसे बड़ा नहीं कहते। इसलिए जब शुकदेव प्रवचन करने बैठे, बारह साल के शुकदेव थे और 126 साल के उनके पिता थे। पिता नीचे बैठे जमीन पर और मंच पर, व्यास पीठ पर शुकदेव बैठे जो केवल बारह वर्ष के थे। ऋषियों ने कहा वह अनर्थ हो रहा है। पिता नीचे बैठ रहा है और पुत्र ऊपर गद्दी पर बैठा है। ऐसा कैसे संभव है? यह तो हमारी भारतीय परंपरा के विपरीत है।

शास्त्रों ने कहा नहीं। शास्त्र की मर्यादा ही यही है। गुरु को उम्र से नहीं आंका जाता, उनके ज्ञान से आंका जा सकता है। निश्चय ही उनके पिता के अनुभव, ज्ञान, सिद्धियों और साधनाओं की अपेक्षा शुकदेव ज्यादा अनुभवी है, ज्यादा ज्ञानवान हैं और व्यास पीठ के अधिकारी हैं।

इसलिए जीवन के किसी भी क्षण में ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है, अनुभव की प्राप्ति हो सकती है, साधना की प्राप्ति हो सकती है और मैंने पहले भी यही बात की थी कि वैदिक मंत्र के माध्यम से भी और साबर मंत्र के माध्यम से भी सिद्धि और सफलता प्राप्त हो सकती है यदि उस मंत्र के माध्यम से भी सिद्धि और सफलता प्राप्त हो सकती है यदि उस मंत्र के पीछे तपस्या का भाव हो, यदि वह मंत्र बिल्कुल प्रामाणिक हो और वह मंत्र सही व्यक्तित्व से ही प्राप्त हो, ये तीनों बातें जरूरी हैं। दान में प्राप्त रुपया तो एक जैसा होता है गलत कार्यों द्वारा कमाये गये धन में से प्राप्त पांच रुपये दक्षिणा मिलना और गरीब आदमी के पास से आठ आने मिलना, इनमें आठ आने ज्यादा मूल्यवान हैं, ज्यादा महत्वपूर्ण हैं क्योंकि

उसके पीछे उस व्यक्ति की पवित्रता का भाव है।

हम गुरु को किस रूप में आंकते हैं? हमारे अंदर कितना पवित्रता का भाव है, कितनी श्रद्धा का भाव है, कितनी चेतना का भाव है उससे हम गुरु को आंक सकते हैं। आंकने के लिए कोई और पैमाना नहीं है, बुद्धि नहीं है। बुद्धि के माध्यम से तो आप ज्ञान को आंक ही नहीं सकते और पूरा जीवन बीत जाएगा आप बुद्धि से कुछ प्राप्त भी नहीं कर सकते और पूरा जीवन अगर बीत गया तो एक बहुत बड़ा मूल्यवान अवसर आपके हाथ से निकल जाएगा। ऐसा लगेगा कि खोया कुछ नहीं, पर मिलेगा भी कुछ नहीं।

और यदि इसी को आप जीवन कह देंगे तो फिर आपके द्वारा जीवन को समझने की परिभाषा अलग है। प्रत्येक के जीवन की परिभाषाएं अलग अलग होती है। सोचने का तरीका अलग अलग होता है। सुनने का भाव तो एक ही होता है परंतु आप उसे ग्रहण किस प्रकार से करते हैं वह महत्वपूर्ण है। जब बुद्ध अपना प्रवचन समाप्त कर चुके, तो समाप्त करने के बाद बोले कि आगे का घंटा आपके लिए बहुत शुभ है। जाओ और कुछ करो, सिद्धि प्राप्त होगी।

श्रोताओं में एक बनिया भी बैठा था, उसने सोचा - बुद्ध ने बिल्कुल सही समय बताया है। अब डंडी मारने का सही टाईम आ गया है। इस एक घंटे में उन्होंने कहा है सिद्धि मिल जाएगी मुझे, सफलता मिल जाएगी। वह सीधा गया शेयर मार्केट और भाव ताव ऊंचा नीचा करके आ गया। एक वेश्या भी प्रवचन सुन रही थी। उसने सोचा - बुद्ध ने बिल्कुल सही कहा है, जरूर मुझे जाते ही ग्राहक मिल जाएगा। उन्होंने कहा है सिद्धि मिल जाएगी। पैसा मिल जाएगा। वह सीधी अपने घर गई बीच में रुकी नहीं। गई तो ग्राहक मिल गए। उसने कहा - बुद्ध बहुत ज्ञानवान है। बिल्कुल सही, प्रामाणिक बात कही है।

श्रोताओं में एक ज्ञानी भी बैठा था। उसने सोचा यह बिल्कुल सही समय है साधना करने का, समाधि लगाने का और वह उसी समय समाधि में लीन हो गया। बात तो एक व्यक्ति ने एक ही कही थी, समझने के भाव अलग-अलग थे। मैं कहूंगा तो एक ही बात परंतु आप में से हर एक अलग-अलग रूप में समझेगा। जैसी आपकी बुद्धि है, जैसे आपके विचार हैं, जैसी आपकी धारणा है, जैसा आपका चिंतन है उसी प्रकार से आप समझ सकेंगे। इसलिए गुरु को आंकने के लिए एक आत्म चक्षु चाहिए। ये चर्म चक्षु जो हमारे पास हैं। जो मैं ज्ञान दे रहा हूं उससे ज्ञान चक्षु जाग्रत हो सकते हैं, और उन ज्ञान चक्षुओं के माध्यम से दिव्य चक्षु जाग्रत हो सकते हैं, फिर आपका अंदर देखने का भाव हो सकेगा और दिव्य चक्षु के बाद आत्म चक्षु जाग्रत हो सकेंगे जहां कुण्डलिनी जागरण की क्रिया होती है, जहां अपने आप में पूर्णता की प्राप्ति होती है और अपने आपमें श्रेष्ठता की प्राप्ति होती है। यह तो एक क्रिया है। मगर गुरु से संपर्क में रहना भी एक बहुत

हम गुरु को किस रूप में आंकते हैं? हमारे अंदर कितना पवित्रता का भाव है, कितनी श्रद्धा का भाव है, कितनी चेतना का भाव है उससे हम गुरु को आंक सकते हैं। आंकने के लिए कोई और पैमाना नहीं है, बुद्धि नहीं है। बुद्धि के माध्यम से तो आप ज्ञान को आंक ही नहीं सकते और पूरा जीवन बीत जाएगा आप बुद्धि से कुछ प्राप्त भी नहीं कर सकते और पूरा जीवन अगर बीत गया तो एक बहुत बड़ा मूल्यवान अवसर आपके हाथ से निकल जाएगा। ऐसा लगेगा कि खोया कुछ नहीं, पर मिलेगा भी कुछ नहीं।

महत्वपूर्ण और मूल्यवान बात है।

क्योंकि एक चंदन का टुकड़ा भी एक बिल्कुल सूखी हुई खेजड़ी की लकड़ी के संपर्क में आ जाता है तो खेजड़ी की लकड़ी जिसमें कुछ नहीं होता वह भी अपने आप में सुगंधमय हो जाती है, चाहे वह चंदन की जाति से पैदा भी नहीं भी हुई हो। एक संगति का प्रभाव भी पड़ता है, परंतु यह आवश्यक नहीं कि एक ही बार में आपके दिव्य चक्षु या ज्ञान चक्षु जाग्रत हो जाएं। हो भी सकता है परंतु ठोकर लगने की अवश्यकता है, समझने की आवश्यकता है, अपने अंदर ज्ञान को उतारने की आवश्यकता है। इसीलिए मैंने कहा कि साधना इतनी सरल है, इतनी सामान्य है परंतु आपने उसको हऊवा बना रखा है। आपने सोचा कि साधना बहुत कठिन होती है और आपने ही नहीं, आपको जो गुरु मिले उन्होंने कहा - अरे! यह साधना तुम नहीं समझ सकते बच्चे! तुम इन चीजों को नहीं समझते, हम समझते हैं। हम बहुत बड़े योगी हैं, तुम क्या समझोगे।

आप अगर उनसे कहो - अच्छा महाराज समझाओ।

तो वे कहेंगे - अरे तुम नहीं समझ सकते।

वे खुद नहीं समझे और आपको कहते हैं तुम नहीं समझ सकते। अब तुम समझ नहीं सकते और यों ही जिंदगी बीत जाएगी।

और आप पीछे भी पड़े उनके तो वे कहेंगे - अच्छा बेटा लंगोट धोओ। कभी तुम्हें ज्ञान दे देंगे।

अब लंगोट धोते-धोते दो साल बीत गए, चार साल बीत गए, न महाराज को कुछ आए और न आपको कुछ दें और यूं ही जिंदगी चली जाती है।

साधना इतनी कठिन है ही नहीं। साधना तो बहुत सरल है। देवताओं का सामीप्य पाना तो बहुत सरल है, बिल्कुल आसान है। आपका सामीप्य पाना फिर भी कठिन है। किसी मनुष्य को अपने अनुकूल बनाना बहुत कठिन है। प्यार भरे शब्दों को बोलकर उनको अपना बना लेना आसान नहीं होता। मगर देवताओं को अपने अधीन बनाना बहुत सरल है। एक टैक्नीक चाहिए, एक क्रिया चाहिए।

अगर आपको कुछ ज्ञान नहीं है और इस कार में बैठेंगे तो कार का स्टीयरिंग पकड़ने से कार चलेगी ही नहीं। मगर एक छोटी सी टैक्नीक है कि पांव दोनों कहां रखने हैं, हाथ कहां रखने हैं, आंखें कहां रखनी हैं। एक सेटिंग है थोड़ी-सी और सेटिंग अगर आ जाएगी तो कार चल जाएगी। सेटिंग आ गई तो साधना संपन्न हो जाएगी। सेटिंग समझाने की बात है। जो इस रास्ते पर चला है, जिसने इस रास्ते का अनुभव किया है वही यह सब समझ सकता है।

इसीलिए कहा गया है कि जीवन में सौभाग्यदायक क्षण हैं कि गुरु प्राप्त हो जाएं। मगर सौभाग्य सिर्फ गुरु पूजन से नहीं होता

एक संगति का प्रभाव भी पड़ता है, परंतु यह आवश्यक नहीं कि एक ही बार में आपके दिव्य चक्षु या ज्ञान चक्षु जाग्रत हो जाएं। हो भी सकता है परंतु ठोकर लगने की आवश्यकता है, समझने की आवश्यकता है, अपने अंदर ज्ञान को उतारने की आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

है।

अब मैं तो बिल्कुल विपरीत बात कर रहा हूं। लोग तो कहते हैं गुरु की पूजा करनी चाहिए। गुरु को चंदन लगाना चाहिए, गुरु को अक्षत चढ़ाने चाहिए, गुरु को पुष्पों का हार पहनाना चाहिए। यह भी जरूरी है। मगर इससे भी ज्यादा जरूरी है कि गुरु के हृदय में उतर जाने की क्रिया हो। उनके होठों पर तुम्हारा नाम आ जाए। कुछ ऐसी साधना हो, कुछ ऐसा चिंतन हो। गुरु तो एक है और आप शिष्य लाखों हैं। और एक के होठों पर लाखों नाम अंकित नहीं हो सकते। यह जीवन का सौभाग्यदायक क्षण होता है कि गुरु मिलें। गुरु मिलना और गुरु के होठों पर अपना नाम अंकित करना बहुत कठिन काम है। इतना आसान या सरल नहीं है।

इसलिए सरल नहीं है कि मरे हुए गुरु के पीछे चलना तो बहुत आसान होता है, सुखदायक होता है। ऐसा गुरु तकलीफदायक होता ही नहीं क्योंकि वह तुम्हें कुछ बोल ही नहीं सकता बेचारा। उसका चित्र लगा दिया, अगरबत्ती, धूप, दीप लगा दिया और गा दिया - जै गुरुदेव दया निधि दीनन हितकारी...। एक सुबह आरती गा दी, एक शाम को गा दी। अब वह मूर्ति कुछ बोलेगी नहीं और आप भी खुश कि गुरु जी की आरती कर दी।

इसलिए श्लोक में कहा गया है कि अत्यंत सौभाग्यदायक क्षण वो हैं जब हम जीवित जाग्रत गुरु के संपर्क में हों। हर एक के नसीब में यह बात नहीं हो सकती। हो सकता है आज से कुछ साल बाद की पीढ़ी ऐसा गुरु शायद नहीं मिल पाएगा।

जीवित और जाग्रत गुरु खतरनाक भी होता है। वह तुम्हें डांट भी सकता है, वह तुम्हें यह भी कह सकता है ऐसा नहीं करो यह गलत है और तुम्हारे अहंकार को चोट पहुंचेगी। तुम सोचोगे - ये गुरुदेव कमाल हैं। उनको क्या जरूरत है कहने की कि हम ऐसा करें, ऐसा न करें। हम जो कर रहे हैं सही कर रहे हैं।

मगर जीवन का आनंद भी वह है कि हम जीवित जाग्रत गुरु के पास रह सकें, उनकी सामीप्यता अनुभव कर सकें, उनकी सेवा कर सकें, उनके प्रति श्रद्धा पैदा कर सकें, उनके प्रति समर्पण पैदा कर सकें। और यह सबसे कठिन काम है। आप आज मिले हैं, दो दिन साथ रहेंगे फिर तीन दिन बाद पता चल जाएगा क्यों कठिन काम है। आप चले जाएंगे, अपने घर मैं चला जाऊंगा आपने घर। मैं आपको आवाज भी दूंगा तो आप आएंगे नहीं। नहीं आएंगे तो फिर वापस वे क्षण नहीं मिल पाएंगे। आएंगे ही नहीं संभव ही नहीं होंगे। वो क्षण मिलें और हम उनका लाभ उठा पाएं यही सबसे बड़ा सौभाग्य है जीवन का।

और जब गुरु को प्राप्त कर लिया, तो सब कुछ प्राप्त कर लिया क्योंकि शास्त्र कहते हैं -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु:देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।

फिर भी या तो शास्त्र झूठे हैं, यह लाइन उन्हें लिखनी ही नहीं

चाहिए थी और लिखी है कि गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु रुद्र हैं तो फिर अलग-अलग देवताओं की पूजा करने से कोई फायदा भी नहीं। फिर एक गुरु तो हैं ही। हम उनकी साधना, उनकी आराधना, उनकी पूजा करें और जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लें।

गणपति ने भी ऐसा ही किया। जब एक बार देवता सब इकट्ठे हुए तो सब देवताओं ने कहा कि जब पूजन क्रम आरंभ हो तो सबसे पहले किसकी पूजा की जाए। विष्णु ने कहा – मैं बड़ा हूं, शंकर ने कहा – मैं तो सबसे बड़ा हूं ही, सबसे पहले मेरी पूजा होगी। ब्रह्मा ने कहा – मैं तो आदि कर्त्ता हूं जगत की उत्पत्ति मैंने की है। सबसे पहले मेरी पूजा होनी चाहिए। इन्द्र ने, वरुण ने, कुबेर ने, यम ने सबने अपने अपने दावे पेश किए। फिर किसी ने कहा – नहीं ऐसा नहीं, यह कोई कसौटी नहीं है। कसौटी यही होगी कि जो पहले पूरी पृथ्वी की परिक्रमा कर लेगा और जो पहले परिक्रमा करके यहां वापस आ जाएगा वह सबसे प्रधान देवता माना जाएगा और फिर जो भी पूजन क्रम होगा देवताओं में, दानवों में, मनुष्यों में तो सबसे पहले पूजा उसी की होगी।

सबने कहा - यह कौन सी बड़ी बात है। सबके पास अपना-अपना जो वाहन था उसको लेकर चल पड़े। कोई गरुड़ के ऊपर बैठकर उड़ा, कोई बैल के ऊपर बैठ कर चला, किसी के पास कोई वाहन था, किसी के पास कोई वाहन था। सब चल पड़े, मगर गणपति रह गए पीछे क्योंकि उनके पास था चूहा। अब चूहे पर बैठकर के उस पूरे ब्रह्माण्ड की कब तो परिक्रमा करें और कब पहुंचे? वे खड़े-खड़े सोचने लगे कि यह तो बड़ी गड़बड़ हुई। यह कसौटी क्या रखी। मेरा नाम तो बैठ ही नहीं सकता। इन देवताओं में।

फिर उनके मन में एक विचार आया, एक चिंतन आया। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में कहा है कि –

> **ब्रह्माण्ड वै वदतां दत्तं गुरुर्वै**
> **सदां सदां सद सदयां गुरतं परैवः।**

पूरा ब्रह्माण्ड तो गुरु में समाहित है। जब गुरु को ब्रह्माण्ड कहा ही गया है और यदि शास्त्र सही हैं तो पूरा ब्रह्माण्ड गुरु में समाहित है ही। आज इस बात का भी निर्णय हो जाएगा कि क्या वास्तव में ही गुरु में पूरा ब्रह्माण्ड समाहित है या नहीं है।

कुछ ही दूरी पर गणपति के गुरु बैठे हुए थे। उन्होंने गुरु के चारों ओर परिक्रमा की और परिक्रमा करके आकर के उस जगह बैठ गए सबसे पहले। और बाकी देवता तो बेचारे उड़ रहे थे, भाग रहे थे, दौड़ रहे थे और गणपति बस गुरु की परिक्रमा करके बैठ गए। अब जहां जहां भी गरुड़ जा रहा था विष्णु का, उन्होंने देखा कि आगे-आगे चूहे के पैर दिखाई दे रहे हैं। विष्णु ने कहा - कमाल है यह चूहा इतनी तेज कैसे दौड़ कर चला गया?

उन्होंने और तेज गरुड़ को दौड़ाया। शिव ने अपने बैल को दौड़ाया, उसकी पूंछ पकड़ी और कहा - दौड़ तेज दौड़। मगर

जहां भी वे देखें तो आगे आगे चूहे के पैर के निशान।

घूमघाम करके सभी देवता वापस आए तो देखा कि गणपति बैठे हुए थे। एक देवता आए, दूसरे आए, चौथे आए सभी आ गए। फिर सब ऋषि एकत्र हुए। देवताओं ने कहा - हमने परिक्रमा कर ली है। सबसे पहले विष्णु आए, फिर ब्रह्मा आए, फिर रुद्र आए, फिर इंद्र आए, फिर वरुण आए।

ऋषियों ने पूछा - हमें एक बात पूछनी है कि आपको मार्ग में कुछ दिखाई दिया?

देवताओं ने कहा - दिखाई तो क्या दिया क्योंकि हम तेजी से भागते रहे, मगर चूहे के पैर बराबर दिखाई देते रहे, यह हमें आश्चर्य है थोड़ा और आश्चर्य यह है कि हमने पूरी पृथ्वी की परिक्रमा की और हम जहां जहां भी गए आगे आगे उन्हें देखते ही रहे।

ऋषियों ने कहा - इसका मतलब पूरी पृथ्वी की परिक्रमा गणपति ने सबसे पहले की है क्योंकि आप सब देवताओं ने खुद अनुभव किया है, देखा है और आप ध्यानस्थ होकर देख लें कि क्या उन्होंने पृथ्वी का चक्कर लगाया है या नहीं लगाया है। विष्णु ध्यान में बैठे, ब्रह्मा ध्यान में बैठे, रुद्र ध्यान में बैठे। उन्होंने देखा कि वास्तव में पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए गणपति उस स्थान पर आकर बैठ गए। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा वास्तव में ही गणपति हम सबसे श्रेष्ठ हैं क्योंकि उन्होंने पूरी पृथ्वी का चक्कर हमसे पहले लगाया है।

और उसके बाद से गणपति का सबसे पहले पूजन होने लगा। जहां भी कोई उत्सव होगा, विवाह होगा, कोई शुभ कार्य होगा तो गणपति का पूजन पहले होता ही है क्योंकि वे विघ्नों का नाश करने वाले हैं, समस्याओं का समाधान करने वाले हैं।

आपके पास पैसा है और विघ्न हैं, समस्याएं हैं तो पैसा कोई काम का नहीं है। तुम्हारे पास पत्नी है, पुत्र है और तुम खुद पड़े हो बीमार खाट पर और आंसू बहा रहे हो तो वे पत्नी और पुत्र क्या करेंगे, खड़े हो जाएंगे, पंखा लगा देंगे, ज्यादा से ज्यादा एक नर्स का इंतजाम कर देंगे, मगर दर्द तो तुम्हें ही भोगना पड़ेगा। समस्याएं तो आपको ही भोगनी पड़ेगी। इसलिए कुछ प्राप्ति से पहले हमारे जीवन के अभाव दूर हो जाएं। हमारे जीवन में जो अविद्या है, हमारे जीवन में जो कुतर्क हैं, हमारे जीवन में जो कमी है, न्यूनता है, वह दूर हो जाए। वह दूर हो जाए तो सब कुछ प्राप्त हो जाएगा और इन सबको दूर करने के लिए एकमात्र देव गणपति हैं। इसलिए गणपति की साधना देवताओं ने भी श्रेष्ठ कही है।

इस जीवन में आपको दो तीन चीजों की आवश्यकता है। बहुत लंबी चौड़ी आवश्यकताएं हैं ही नहीं। एक व्यक्ति चंदूलाल जी ने तपस्या की। उन्होंने सोचा चलो एक साधना कर ही लेते हैं। उन्होंने साधना की तो घनघोर साधना की। सालभर साधना की। लक्ष्मी प्रकट हुई। लक्ष्मी की साधना की थी। लक्ष्मी ने कहा

विष्णु ध्यान में बैठे, ब्रह्मा ध्यान में बैठे, रुद्र ध्यान में बैठे। उन्होंने देखा कि वास्तव में पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए गणपति उस स्थान पर आकर बैठ गए। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा वास्तव में ही गणपति हम सबसे श्रेष्ठ हैं क्योंकि उन्होंने पूरी पृथ्वी का चक्कर हमसे पहले लगाया है।
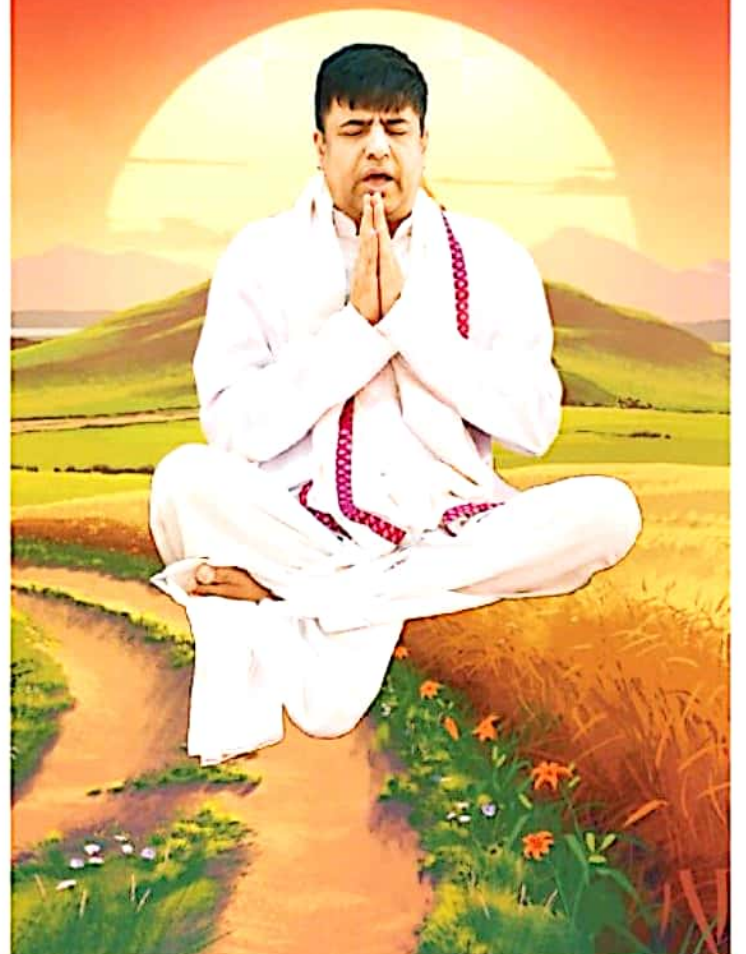
– बोल क्या मांगता है? क्या इच्छा है? एक वरदान दूंगी। जो कुछ मांगना है मांग ले।

चंदूलाल ने सोचा – समस्याएं तो मेरी बहुत है, पच्चीस हैं। अब इन्होंने कह दिया एक इच्छा मांग ले। अब एक से कैसे काम चलेगा। यह तो मामला बैठेगा नहीं।

उसने कहा – मैं कल आपसे वरदान मांग लूंगा। मुझे चौबीस घंटे का समय दे दीजिए। आप अचानक आ गई। मुझे मालूम होता आप आ रही हैं तो मैं तैयार होता। आप एकदम से आ गई। ऐसा मत करिये। कल मांग लूंगा।

लक्ष्मी ने कहा – अच्छा कल मांग लेना मगर एक मांगना।

चंदूलाल ने सोचा – हम भूखे मर रहे हैं, खाने को रोटियां नहीं है, चलो पैसा मांग लेते हैं। बीस, पच्चीस, पचास लाख मांग लेते हैं। वह घर गया, पत्नी से कहा – मैं जिंदगी में तुमसे सलाह लिए बिना कोई काम नहीं करता लेकिन क्या है मैंने एक साधना कर ली थी चुपचाप और लक्ष्मी आ गई।

पत्नी ने कहा – यह लक्ष्मी कौन है? पड़ोस में रहती है? यह कहां से आई? यह नाम तो सुना नहीं।

चंदूलाल ने कहा – तू शक मत कर, जगदंबा लक्ष्मी आई थी। उसने कहा एक वरदान मांग ले।

पत्नी ने कहा – हमें शादी किए अट्ठारह साल हो गए। लड़का एक भी हुआ नहीं। जैसे तुम थे ठूंठ की तरह मैं भी ठूंठ की तरह रह गई। तुम एक लड़का मांग लो।

चंदूलाल ने सोचा – अब लड़का मांगें या पचास लाख मांगें? समस्याएं दो और लक्ष्मी ने कहा वरदान मांगो एक।

चंदूलाल ने कहा – लड़के का क्या करना है?

पत्नी ने कहा – तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। मरने के बाद अग्नि कौन देगा जब लड़का ही नहीं है तो तुम पर धिक्कार है। तुम से शादी करनी ही बेकार हो गयी। कहीं और शादी करती तो दस बारह बच्चे होते मेरे।

चंदूलाल ने कहा – अच्छा तू हल्ला मत कर, शांत रह, चौबीस घंटे तो बीतने दे शांति से। मैंने साधना की है और मेरा दिमाग थका हुआ है। अब तू चुप रह।

चंदूलाल ने सोचा – मां घर में बैठी हुई है, मां से पूछते हैं। वह अनुभवी है, सत्तर साल की है।

मां के पास गया और उसने कहा – मां! मैंने लक्ष्मी की साधना की और वह प्रकट हो गई। उसने एक वरदान मांगने के लिए कहा है। क्या मांगूं?

मां ने कहा – बेटा मेरी आंखें नहीं हैं, अंधी हो गई हूं मैं और आंखों के बिना कुछ भी नहीं है, ठोकरें खाती रहती हूं, तेरी पत्नी तो कोई सेवा करती नहीं ज्यादा। मुझे कितनी तकलीफ होती है, बाहर जाना होता है कपड़े पहनने होते हैं। तू लक्ष्मी से मेरी आंखें मांग ले। तू सपूत बेटा है।

अब चंदूलाल सोचने लगा – बेटा मांगें, इसकी आंखें मांगें या धन मांगे, क्या मांगे?

इतने में कर्जदार आ गए। वे बोले – चंदूलाल क्या हुआ? पैसा देना है या नहीं देना है।

चंदूलाल ने कहा – आठ दस घंटे और ठहर जाओ।

वह बैठा-बैठा सोचने लगा कि लक्ष्मी से कुछ मांगकर बहुत गड़बड़ हो गया। इससे तो पहले ही ठीक थे। रात भर सोया नहीं। फिर माइंड में आया कि गुरु जी बता सकते हैं क्या मांगें। गुरु के घर जाते ही नहीं हैं – या गुरु पूर्णिमा पर जाते हैं या जन्मदिन पर जाते हैं। जाते हैं और खा पीकर वापस आ जाते हैं। आज मुसीबत आ गई तो थोड़ा गुरुदेव के पास जाकर पूछ लेते हैं। यह साधना भी तो उन्हीं ने बताई थी या तो उन्हें बतानी नहीं चाहिए थी। मुझे क्या मालूम था लक्ष्मी आएगी ही आएगी। मैं तो बस साधना कर रहा था। क्या पता था सामने आकर खड़ी हो जाएगी। गुरुजी ने देना था तो ऐसी लक्ष्मी देते जिससे पंद्रह बीस वरदान मांग लेते। हमारी कोई एक या दो समस्याएं थोड़े ही हैं।

वह गया और कहा – गुरुदेव आपने बहुत गड़बड़ कर दिया।

क्या गड़बड़ कर दिया? मैं तो बहुत सीधा-सीधा आदमी हूं भई।

उसने कहा – नहीं आप गुरुजी हैं ही नहीं।

अरे हुआ क्या? क्या बात हुई?

चंदूलाल ने कहा – लक्ष्मी आ गई।

गुरु ने कहा – फिर इसमें तकलीफ क्या हुई? साधना दी और लक्ष्मी आ गई।

उसने कहा – लक्ष्मी आई वह तो कोई तकलीफ नहीं गुरुजी मगर वह फिर दो घंटे बाद आने वाली है वापस। उसने कहा है एक वरदान मांग ले। अब बस एक वरदान?

गुरु ने कहा – तू एक वरदान मांग ले। तू बहुत गरीब और दरिद्र है, धन तेरे पास नहीं है। धन मांग ले।

चंदूलाल बोला – धन तो मैं मांग लूंगा गुरुजी मगर घर जाते ही बस वहां एक शेरनी मुझे छोड़ेगी नहीं। शेरनी देखी है आपने? अट्ठारह साल से शेरनी पाल रहा हूं गुरुजी। अभी आपने देखा नहीं है। हुंकार करती हुई आती है और जगदंबा का वाहन है गुरुजी।

गुरु ने कहा – मैं भी भुगत रहा हूं भइया इसमें कोई नई बात नहीं है। इस मामले में तू और मैं समान हैं। इसकी तो कोई साधना ही नहीं है।

चंदूलाल ने कहा – पत्नी कहती है बेटा मांग। धन मांगूंगा तो बेटा रह जाएगा गुरुजी। अट्ठारह साल हो गए गुरुजी एक भी बेटा नहीं हुआ। मैं तीन चार बेटे मांग लेता हूं।

गुरुजी ने कहा – तू पागल है। उन्हें खिलाएगा क्या? तीन का पेट पाल नहीं सकता, छः हो जाएंगे तो कैसे पालेगा?

मगर गुरुजी नहीं मांगूंगा तो पत्नी छोड़ेगी नहीं मुझे और मां कहती है उसके लिए आंखें मांगूं। तो आप बताएं गुरुजी मैं क्या करूं।

गुरुजी ने कुछ देर सोचा, फिर कहा - अच्छा एक तरीका है। तू ऐसा कर लेना और क्या मांगना है उसे अच्छी तरह समझा दिया।

वह आया वापस घर। जब लक्ष्मी आई चौबीस घंटे बाद और उसने कहा कि एक वरदान मांग तो चंदूलाल ने कहा - मैं एक वरदान चाहता हूं कि मेरी मां अपनी आंखों से अपने पोते को सोने के कटोरे में दूध पीता हुआ देखे।

लक्ष्मी ने कहा - तू मांग क्या रहा है?

चंदूलाल ने कहा - मैं गया था गुरुजी के पास यह युक्ति उनसे सीख कर आया हूं।

लक्ष्मी ने कहा - मुझे बहुत लोग मिले चंदूलाल मगर तुम जैसा नहीं मिला।

अब मैं भी सोचता हूं कि शिष्यों की समस्याएं तो सैकड़ों हैं। एक समस्या तो है नहीं। चंदूलाल वाली समस्या है सबकी। किसी के पास धन नहीं है, किसी के पास यश नहीं है, किसी को गाड़ी चाहिए, बंगला चाहिए। कोई ऐसी साधना हो जिसके माध्यम से ये सारे कार्य संपन्न हो जाएं।

जो गणपति उपनिषद् का मैंने श्लोक कहा उसमें ऐसी ही बात है। उसमें कहा है कि गणपति, लक्ष्मी और रूद्र तीनों एक ही शब्द के पर्याय हैं। हमने ही उन्हें अलग-अलग देखा है। हमने देवता अलग-अलग बांट लिए। कोई लड़ाई करनी हो तो बजरंग बली को याद करने लगते हैं कि **जै हनुमान ज्ञान गुण सागर जै कपीश.....।**

कोई ताकत का काम है तो बजरंग बली। वहां लक्ष्मी को याद करते ही नहीं। और जब पैसे की जरुरत हो तो लक्ष्मी की साधना करते हैं। तब बजरंग बली बैठे रह गए एक तरफ, **जै लक्ष्मी मैया जै लक्ष्मी मैया।**

हमारे पास देवताओं की कमी है ही नहीं, तैतीस कोटि देवी देवता हैं।

एक बार चंदूलाल जी एक राम मंदिर में गए। अंदर दर्शन करने गए। भगवान राम खड़े थे, लक्ष्मण खड़े थे, सीता खड़ी थी। राम खड़े थे धनुष बाण लिए हुए।

चंदूलाल ने प्रार्थना की - **श्रीराम चंद्र कृपालू भजनम....।**

राम ने कहा - क्या बात है? क्यों स्तुति कर रहा है?

उसने कहा - बात यह है कि मेरी पत्नी गुम गई है और आज पंद्रह दिन हो गए हैं। वह मिली ही नहीं। आप कुछ उपाय बताएं।

रामचंद्र जी ने कहा - देख भई। इस कार्य के लिए तो हनुमानजी के पास जा। यहां से एक मील दूर हनुमान जी का मंदिर है। तू उनके पास चला जा। यह काम मेरा नहीं है।

तो हमारे जीवन में कई काम हैं तो बहुत देवता हैं, हनुमान जी हैं, भैरव जी हैं, लक्ष्मी हैं, हमने देवताओं को अलग-अलग टुकड़ों में बांट लिया है। वे अलग-अलग हैं ही नहीं, एक ही चिंतन है और अगर मैं कहता हूं कि गणपति, लक्ष्मी और रुद्र एक ही है तो आपको यह समझ आ नहीं रही है बात। आप कहते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है। आप कहते हैं कि लक्ष्मी की अलग प्रतिमूर्ति है, रुद्र की अलग प्रतिमूर्ति है और गणपति की अलग प्रतिमूर्ति है। यह संभव कैसे हो सकता है कि सब एक हैं।

मगर तीनों का कार्य एक है। रुद्र का अर्थ है हम रोग मुक्त हों, महामृत्युंजय, हमारे यहां रोग नहीं रहें, जीवन में अभाव नहीं रहें, पीड़ा नहीं रहे, कष्ट नहीं रहे, समस्याएं नहीं रहें, बाधाएं नहीं रहें। उनके लिए रुद्र की साधना ही सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। हम अपनी मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकें। हम ही नहीं हमारी पत्नी भी, पुत्र भी, बंधु बांधव भी। घर में अकाल मृत्यु नहीं हो, कष्ट नहीं हो, पीड़ा नहीं हो। हम जो भुगत रहे हैं वह भुगतें नहीं और इसके साथ ही घर में दरिद्रता भी नहीं रहे। धन रहे, ऐश्वर्य रहे। यह सब कुछ हो, संपन्नता हो, प्रभुता हो, श्रेष्ठता हो। धन-यश, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, ये सब कुछ हो और इसके साथ ही साथ समस्त आने वाले विघ्नों का नाश होता रहे। आने वाली बाधाएं पहले से ही दूर हो जाएं। हमारे जीवन में समस्या आए ही नहीं, कष्ट नहीं आए और हम एकदम पूर्णता के साथ जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें।

ऐसा ही एक प्रयोग या साधना केवल गणेश चतुर्थी को संपन्न हो सकती है। साल में और कभी नहीं हो सकती। इसलिए शास्त्रों में गणेश चतुर्थी का अपना एक बहुत बड़ा महत्व है। यह जीवन का सौभाग्य होता है कि गणेश चतुर्थी हो और गुरु सामने हों और उनसे ऐसा प्रयोग प्राप्त हो जाए। यह अलग बात है कि हमारी बुद्धि या तर्क इस बात को स्वीकार नहीं करे। मगर मैं कहता हूं आप एक बार साधना के पथ को आजमा कर देखें, एक बार कोई साधना करके देखें आप। ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप बिल्कुल शुद्ध भाव से करें और सफलता नहीं मिल पाए।

गणपति तो अपने आपमें ऐसे देवता हैं जो सभी विघ्नों का नाश करते ही हैं। मुझे अपने संन्यासी जीवन में एक संन्यासी मिले थे। अत्यंत ही उच्चकोटि के संन्यासी। आज भी जीवित हैं और उनमें विशेषता यह थी कि वे बैठे रहते थे और एक छोटी सी लाल कपड़े की झोली थी उनकी, बगल में लटकी रहती थी और आप उनसे जो भी मांगें उसमें से निकाल कर दे देते थे। रुपये मांगें तो रुपये, लड्डु या कोई और चीज मांगें तो कोई और चीज उस झोली से निकाल कर देते ही रहते थे।

मैं उनके साथ कोई सात-आठ महीने रहा और उन्होंने बताया कि यह गणपति की साधना का परिणाम है। उन्होंने अपनी आंख में एक छोटे से पारद गणपति को स्थापित कर रखा था। आंख की पुतली के अंदर ! वे उसे रोज बाहर निकालते, उनकी पूजा

रुद्र का अर्थ है हम रोग मुक्त हों, महामृत्युंजय, हमारे यहां रोग नहीं रहें, जीवन में अभाव नहीं रहें, पीड़ा नहीं रहे, कष्ट नहीं रहे, समस्याएं नहीं रहें, बाधाएं नहीं रहें। उनके लिए रुद्र की साधना ही सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। हम अपनी मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकें। हम ही नहीं हमारी पत्नी भी, पुत्र भी, बंधु बांधव भी। घर में अकाल मृत्यु नहीं हो, कष्ट नहीं हो, पीड़ा नहीं हो। हम जो भुगत रहे हैं वह भुगतें नहीं और इसके साथ ही घर में दरिद्रता भी नहीं रहे। धन रहे, ऐश्वर्य रहे। हमारे जीवन में समस्या आए ही नहीं, कष्ट नहीं आए और हम एकदम पूर्णता के साथ जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। ऐसा ही एक प्रयोग या साधना केवल गणेश चतुर्थी को संपन्न हो सकती है।

करते और वापस अंदर स्थापित कर देते। यह मेरी आंखों की देखी हुई घटना है।

इसका मतलब गणपति की साधना जीवन में समस्त पूर्णता देने वाली है। मगर साथ ही साथ पारद गणपति की साधना तो अपने आपमें अद्वितीय है। पारद को अपने आपमें ठोस बनाना तो बहुत कठिन है। उनका दर्शन करना ही जीवन का एक बहुत पुण्यदायक क्षेत्र है। यदि ऐसे गणपति घर में स्थापित हों तो वह तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक पुण्यदायक बात होती है। वह दर्शनीय चीज होती है।

जो हमारे प्रधानमंत्री हैं वे स्वयं पारद गणपति के साधक हैं, दक्षिण में गणपति साधना का बहुत प्रचलन है। मुंबई में तो गणपति का ही पूजन होता है। महाराष्ट्र में जितना गणपति का पूजन चिंतन होता है उतना कहीं पूरे भारत वर्ष में होता ही नहीं।

और उस श्लोक के अनुसार गणेश चतुर्थी का दिन गणपति साधना का श्रेष्ठतम दिन होता है, लक्ष्मी को भी स्थापित करने और प्राप्त करने का दिन होता है, लक्ष्मी को सामने प्रत्यक्ष करने का दिन होता है। अपने जीवन में लक्ष्मी अनुकूल बनी रह सके, अभाव रहें ही नहीं, जो चीज चाहें वह प्राप्त हो और पारद शिवलिंग भी हमारे सामने हो क्योंकि उन तीनों का अपने आपमें पूर्ण संबंध है। उन तीनों को अलग करके नहीं देखा जा सकता। मेरे हाथ का मात्र पूजन करने से गुरु पूजन नहीं हो सकता, केवल ललाट के पूजन से गुरु का पूजन नहीं हो सकता। गुरु तो पूरा शरीर है, किसी अंग विशेष का पूजन करने से उसका पूरा गुरु पूजन नहीं हो सकता।

इसलिए इन तीनों को स्थापित करें - पारद गणपति, पारद शिवलिंग और पारद लक्ष्मी और फिर मैं जो मंत्र दूं उस मंत्र की साधना आप संपन्न करें क्योंकि वह मंत्र अपने आपमें गणेश उपनिषद् से प्राप्त है, अपने आपमें अद्वितीय है। जिस संन्यासी की मैंने बात कही कि जो आंख में गणपति की छोटी सी मूर्ति रखते थे, उन्होंने मुझे मंत्र बताया था उसी मंत्र से फिर साधना संपन्न की जाए तो पूर्णता प्राप्त होगी ही।

यह भी मेरे जीवन का कर्त्तव्य है कि मैं अपने शिष्यों के जीवन के अभाव, परेशानियों और बाधाओं को दूर करूं। अब आपकी बाधाएं दूर हो पाएंगी तो फिर आप उच्चकोटि की साधनाएं कर सकेंगे और साधनाओं के द्वारा ही आपमें चैतन्यता पैदा हो सकेगी। परंतु साधनाओं में सफलता के लिए श्रद्धा भाव आवश्यक है। श्रद्धाभाव अगर जाग्रत है तो फिर कोई भी साधना कठिन है ही नहीं। साधना तो इतनी आसान है कि आप सफलता प्राप्त करते ही हैं अगर आपमें और गुरु के बीच में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास है। मंत्र के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।

मंत्रे तीर्थेद्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे तथा।
यादृशी भावना यस्य सिद्धि र्भवति तादृशी।।

जिसकी जैसी भावना होती है उसको वैसा ही फल मिलता है।

हम जब हरिद्वार जाते हैं तो बहुत पवित्र अनुभव करते हुए गंगा में डुबकी लगाते हैं और जो हरिद्वार में रहते हैं वे महीने भर तक स्नान करते ही नहीं गंगा में जा कर के। वे नल के नीचे स्नान करते हैं। यह तो भावना है। आपकी भावना कैसी है, श्रद्धा कितनी है उस पर निर्भर है। आवश्यकता है कि आपका कितना विश्वास है उस मंत्र के प्रति, उस देवता के प्रति, उस गुरु के प्रति और जिस साधना का मैं उल्लेख कर रहा हूँ, वह कोई साधारण साधना नहीं है, अपने आप में अद्वितीय साधना है उस संन्यासी की दी हुई साधना है जिसने वह सिद्ध की थी और उस संन्यासी से प्राप्त होने के बाद मैंने खुद उस साधना को करके देखा है, अनुभव किया है कि वह साधना गणपति की साधना होते हुए भी, रुद्र की साधना भी है, लक्ष्मी की साधना भी है।

एक अद्वितीय साधना है। मैंने उनसे कहा भी कि गणपति की साधना में यह पारद शिवलिंग का क्या महत्व है। उन्होंने कहा कि गणपति का तात्पर्य है कि हम समूह के अधिपति बनें, श्रेष्ठ बनें। अगर आयु ही नहीं होगी तो श्रेष्ठ क्या बनेंगे? आप चाहते हैं कि संपन्न बनूं। पर संपन्न तो तब होंगे जब आपकी आयु होगी। जब आयु होगी ही नहीं, आप जर्जर होंगे, आप बीमार होंगे, खाट से उठ नहीं पाएंगे, चार घंटे पालथी मारकर बैठ नहीं पाएंगे, आप मंत्र उच्चारण कर नहीं पाएंगे तो वह गणपति, वह धन, वह संपत्ति, वह ऐश्वर्य कैसे प्राप्त हो सकेगा? क्या लाभ हो पाएगा? सबसे पहला आधार तो जीवन है, लंबा जीवन, हमारा, पत्नी का, पुत्र का, संबंधियों का और लंबे जीवन के लिए भगवान शिव साधना ही श्रेष्ठ है और जीवन में सम्पन्नता हो, भोग हो, ऐश्वर्य हो, सुख हो, सुविधाएं हों और उसके बाद कोई विघ्न न हो। जीवन में तो राज्य की ओर से बाधा आ सकती है, समस्याएं आ सकती हैं, अफसर की समस्या हो सकती है, नौकरी व्यापार की समस्या हो सकती है। समस्याओं की कोई कमी नहीं। उन सभी समस्याओं का निपटारा गणपति की साधना के माध्यम से हो सकता है।

मगर यह साधना केवल गणेश चतुर्थी को ही संपन्न की जा सकती है और गुरु के प्रवचन सुनने से ही कुछ नहीं हो पाएगा। आपको उठकर साधनाएं संपन्न करनी ही पड़ेंगी और मैं चाहता हूं कि मुझे साधनाओं का अद्वितीय ज्ञान मिला है वह मैं आपको दूं और आप वे साधनाएं कर सकें। कई-कई ग्रंथों में इसे सर्वार्थ सिद्धि कारक प्रयोग भी कहा गया है। यह तांत्रिक प्रयोग भी है और मांत्रिक प्रयोग भी है। सर्वार्थ सिद्धि का अर्थ है कि सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हों, सब प्रकार की इच्छाएं पूरी हों और यह प्रयोग गणेश चतुर्थी को ही संपन्न हो सकता है।

और इस साधना का मंत्र भी अपने आप में अद्वितीय है क्योंकि वह बीज मंत्र युक्त है। अगर आप एक पेड़ को देखें तो वह इतना विशाल दिखाई देता है। मगर वह पूरा पेड़ एक दिन एक छोटे बीज के अंदर समाया हुआ था, छोटा सा बीज था। इस हथेली में भी रख सकते थे। एक हजार वैसे बीज हथेली में आ सकते थे। उनमें से केवल एक बीज के माध्यम से इतना बड़ा पेड़ बना। ठीक इसी प्रकार बीज मंत्र होते हैं और दस पेज का मंत्र भी एक बीज मंत्र में समाहित हो सकता है यदि बीज मंत्र सही हो तो।

बीज मंत्र का उच्चारण सही होना चाहिए और पूरी क्षमता के साथ मंत्र का उच्चारण करते हैं तो सफलता मिलती ही है। मगर मंत्र बिल्कुल शुद्ध
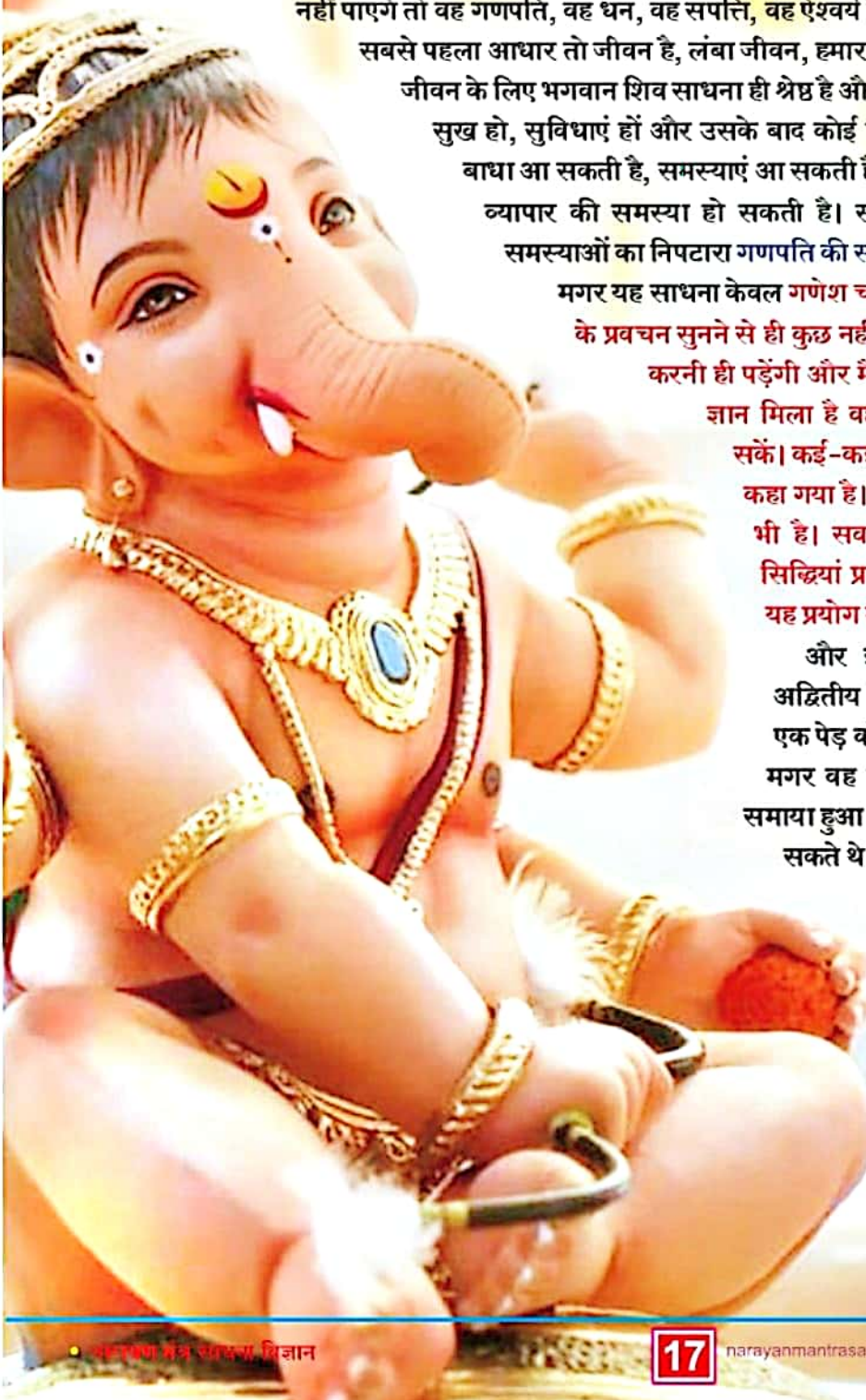
पहला आधार तो जीवन है, लंबा जीवन, हमारा, पत्नी का, पुत्र का, संबंधियों का और लंबे जीवन के लिए भगवान शिव साधना ही श्रेष्ठ है

ऐश्वर्य हो, सुख हो, सुविधाएं हों और उसके बाद कोई विघ्न न हो। जीवन में तो राज्य की ओर से बाधा आ सकती है, समस्याएं आ सकती हैं, अफसर की समस्या हो सकती है, नौकरी व्यापार की समस्या हो सकती है। समस्याओं की कोई कमी नहीं। उन सभी समस्याओं का निपटारा गणपति की साधना के माध्यम से हो सकता है।

उच्चारण करना चाहिए। बहुत तेज मंत्र उच्चारण करने से कोई जल्दी सफलता नहीं मिल जाएगी। उससे तो आप आधा मंत्र बोलेंगे और आधा छूट जाएगा और इतना धीरे-धीरे भी जप न करें कि आपकी गाड़ी स्टेशन से आगे चले ही नहीं। एक ही जगह खड़ी रहे। ऐसा भी नहीं हो। शुद्धता के साथ उच्चारण करें और इतना जोर से बोलें कि आपके कान को सुनाई दे। मंत्र स्फुट हो, स्फुट का अर्थ है कि आपके कानों को सुनाई दे। जोर से चीखने की जरूरत नहीं है। ऐसे भी शिष्य मैंने देखे हैं। एक से एक बढ़कर एक हैं। छाती पर मुक्का मार-मार कर मंत्र बोलते हैं ऐसे भी मिले हैं शिष्य। एक था शिष्य उसे मंत्र बताया तो उसने चीख कर मंत्र बोला 'ॐ गं...म और अपनी छाती पर मुक्का मारा। मैंने कहा भई क्या कर रहा है? गम तो होगा, मैं अभी बीमार हो जाऊंगा, इतनी जोर से मुक्का तू मार रहा है। ऐसे चीखने-चिल्लाने की जरूरत नहीं है।

मैं कुछ साल पहले हैदराबाद गया किसी कार्य से। मेरा दुर्भाग्य था जो मैं हैदराबाद चला गया। कभी-कभी दुर्भाग्य के क्षण भी आ जाते हैं। वहां तेज नारायण भी एक शिष्य है मेरा। आपने उस मूर्ति, महान विभूति को देखा नहीं है। अब शिष्य है तो शिष्य है उसने दीक्षा ली हुई है और बड़ा ही उसमें भाव है। गुरु के प्रति भावना है, उसकी श्रद्धा है, हैदराबाद में उसकी कपड़े की दुकान है। तो जब मैं जोधपुर से रवाना हुआ तो पत्नी ने कहा आप हैदराबाद जा ही रहे हैं तो तेज नारायण से मिल लेना। मैंने कहा मैं तेज नारायण से नहीं मिल सकता क्योंकि वह नहीं मिले तो ठीक है।

पत्नी ने कहा आप जा रहे हैं उसे नहीं मिले तो उसे बहुत दुख होगा। इसलिए आप मिल लेना।

अब पत्नी की बात मैंने मान ली, मगर मैं पछता रहा हूँ। आप न मानें यह अनुभव की बात बता रहा हूँ। जो पत्नी कहे उसे कहने दीजिए क्योंकि वह आई इसलिए है घर में कि कहती रहे। पतिव्रता शब्द आपने सुना होगा, पतिव्रता का अर्थ है जो पति को व्रत कराती रहे। वह कहती है आज भूखे मरना है तुझे।

वह बेचारा कहता है अरे मैं क्यों भूखा रहूं?

वह कहती है नहीं मैं पतिव्रता हूँ, तुझे व्रत करना ही है।

पतिव्रता का मतलब ही यही है, जितने ज्यादा पति को व्रत कराएगी उतनी ज्यादा पतिव्रता श्रेष्ठ।

मैं जब हैदराबाद पहुंचा तो सोचा चलो तेज नारायण से भी मिलकर आ जाते हैं। तो बाजार में चार मीनार से आगे बाजार है, वहां पर उसकी दुकान थी। मैं पटरी के ऊपर चल रहा था सामने दुकान थी पटरी के उस पार। उसने एक दम से देखा मुझे दूर से कि गुरुजी आ रहे हैं। उसने सोचा गुरुजी एकदम से हैदराबाद में कैसे आ गए? कोई चिट्ठी नहीं, समाचार नहीं, सूचना नहीं। पर है तो गुरुजी ही। आंख फाड़कर देखा उसने।

वह वहां से उचका। तीस बत्तीस साल का था, ऐसा कोई

बच्चा नहीं था। और दौड़कर दोनों हाथ मेरे पकड़ लिए, ताकतवान बहुत है और झझोड़ा पहले मुझे और कहने लगा आ गया, तू आ गया, तू आ गया।

और एक मेरी छाती में मारा और बोला तू कब आया, तू कब आया।

छाती में एक लगा, दूसरा लगा, मैं पीछे सरका। मैंने कहा तेज नारायण मैं मर जाऊंगा। मगर तेज नारायण तो बस भावना में मारे जाए छाती पर। लाल सुर्ख हो गई छाती और जोर-जोर से मारे जाए और बोले जाए तू कहां जा रहा है, तू कहां जा रहा है? तू कैसे आ गया, तू कैसे आ गया? तू कब आया, तू कब आया?

लोग इकट्ठे हो गये कि इसकी कपड़े की दुकान है और यह आदमी शायद कपड़ा लेकर भाग रहा है। उन्होंने कहा मारो इसको मारो। यह ठीक पकड़ में आया। यहां कई दुकानों में चोरियां हुई हैं।

मैंने कहा कपड़ा कोई चोरी नहीं किया यह तो गुरु शिष्य का मिलन है, कोई ऐसी बात नहीं है।

उन्होंने कहा ऐसा मिलन तो हमने कभी देखा नहीं। यह कैसा मिलन है?

बड़ी मुश्किल से पांच-सात लोगों ने उस तेज नारायण को खींच कर अलग किया।

मेरी सारी छाती लाल सुर्ख हो गई। इतने बड़े-बड़े उस गूमड़ हो गए।

मैंने कहा तेज नारायण यह क्या है?

उसने कहा गुरुदेव! आप दुकान पर चलिए।

मैंने कहा यहां तो लोगों ने छुड़वा दिया, यह अच्छा किया। दुकान पर मैं नहीं जाऊंगा। अभी मेरे बच्चे छोटे हैं, मैं तेरे साथ नहीं आ सकता।

तो शिष्य मेरे अनेक हैं। आप भी मंत्र जप करें तो ऐसा नहीं कि तेज नारायण की तरह मंत्र जप करने लगें। मजाल है कि कोई सामने बैठा हो जब वह मंत्र जप कर रहा हो।

मंत्र इस प्रकार से बोलें कि केवल आपके कानों को सुनाई दे और मंत्र जप करते हुए हिले नहीं। निष्कंप भाव से। ऐसा नहीं कि आप झूमते रहें। मंत्र जप का अर्थ है कि निश्छल भाव से बिना हिले आप जप करें। एक आसन पर बैठ कर, निष्कंप भाव से मंत्र जप करें और मंत्र जप के बीच में उठे नहीं। तभी सफलता मिल सकती है साधना में।

बीज मंत्र का उच्चारण सही होना चाहिए और पूरी क्षमता के साथ मंत्र का उच्चारण करते हैं तो सफलता मिलती ही है। मगर मंत्र बिल्कुल शुद्ध उच्चारण करना चाहिए। बहुत तेज मंत्र उच्चारण करने से कोई जल्दी सफलता नहीं मिल जाएगी। उससे तो आप आधा मंत्र बोलेंगे और आधा छूट जाएगा और इतना धीरे-धीरे भी जप न करें कि आपकी गाड़ी स्टेशन से आगे चले ही नहीं।

यह साधना जिसके बारे में मैंने आपको बताया वह अद्वितीय है और मैंने स्वयं इसे सिद्ध किया हुआ है। यह साधना अवश्य ही आपको जीवन में उपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि इससे आपके जीवन की सभी बाधाएं, समस्याएं दूर हो सकती हैं। इसलिए यह मंत्र और यह साधना अद्वितीय है और प्रत्येक साधक को इसे जीवन में एक बार तो करना ही चाहिए। अवश्य ही इस साधना के माध्यम से हम जीवन के सारे अभाव, परेशानियों, अड़चनों, कठिनाइयों से मुक्त हो सकते हैं। आवश्यक है केवल यह कि आपमें गुरु के प्रति श्रद्धा हो, मंत्र के प्रति श्रद्धा हो, साधना के प्रति श्रद्धा हो और जिस देवी या देवता की साधना कर रहे हैं उसके प्रति श्रद्धा हो।

आप अपने जीवन में गुरु से यह अद्वितीय साधना और मंत्र प्राप्त कर सकें, आप पूर्णता के साथ इस साधना को संपन्न कर सकें और अपने जीवन में सभी समस्याओं से मुक्त होते हुए धनवान, ऐश्वर्यवान, सुखी और संपन्न हो सकें, ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ।

सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
(डॉ. नारायण दत्त श्रीमालीजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

व्यापार में सफलता कैसे मिले? अर्थात् इस जगत-व्यापार में सफलता कैसे मिले, यह जान लेना और भली-भांति आत्मसात कर लेना भी एक साधना ही है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन के इस पक्ष को नहीं समझ पाता और न अपने जीवन में वे सूत्र उतार पाता है जिनसे उसे सहज आर्थिक सफलता प्राप्ति की दशा बन सके। जिस प्रकार आध्यात्मिक जगत में साधना के निश्चित सूत्र होते हैं, सफलता-प्राप्ति के सरल उपाय होते हैं, उसी प्रकार व्यवहारिक जगत में भी सरल सूत्रों को प्राप्त किया जा सकता है और उन्हें अपने दैनिक जीवन में एक स्थान देकर अपना भौतिक जीवन संवारा जा सकता है।

व्यापार में सफलता कैसे मिले?

जीवन के व्यवहारिक पक्ष अर्थात्

अर्थोपार्जन

को यदि जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया

अथवा उसकी उपेक्षा की गयी तो जीवन का दूसरा पक्ष अर्थात् पारलौकिक पक्ष भी नहीं संवर सकता,

क्योंकि जिस आधार पर खड़े होकर हम क्रियाशील हैं, वह भौतिक ही तो है........

यह भी एक साधना है, यह भी तो एक योग है। निरन्तर गतिशील रहते हुए भी आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सचेत रहना, यही वास्तविक कर्मयोग है और ऐसे कर्मयोगी के समक्ष साधना और सिद्धियां एक प्रकार से आत्मसमर्पण करने को विवश हो जाती हैं। व्यक्ति न तो इस संसार के व्यवहारिक चक्र से अलग हो सकता है और न उसे ऐसा करने की मिथ्या धारणा ही दी जा सकती है। इस प्रकार के कोरे उपदेश देने से व्यक्ति का न तो भरण-पोषण हो सकता है, न ही उसके अन्य आवश्यक खर्चों की पूर्ति हो सकती है और जो भी इस प्रकार का उपदेश देते हैं वे एक प्रकार से मिथ्याचार को ही बढ़ावा देते हैं। ऐसे मिथ्याचारों से ही विसंगतियां, छल, पाखण्ड, धूर्तता और व्यभिचार का जन्म होता है। ध्यान, धारणा और समाधि की स्थितियों को प्राप्त करने के भी पहले की साधना अर्थ-साधना ही है जो देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से प्रमुख स्वरूप महालक्ष्मी की ही आराधना है।

श्री यंत्र की संरचना इस प्रकार से है कि एक त्रिकोण के ऊपर दूसरा त्रिकोण निर्मित होकर एक नयी शक्ति का निर्माण कर देता है जिससे यह जहां भी स्थापित होता है वहीं अपना प्रभाव, अपनी शक्ति प्रदर्शित करने लगता है। योगी नित्यानन्द, देवप्रयाग

जिस देश ने श्रीयंत्र जैसी दुर्लभ रचना की हो जीवन की सभी स्थितियों को इस प्रकार अंकित करने की चेष्टा की हो फिर भला वह देश दरिद्री रह भी कैसे सकता था? सर जॉन वुडरोफ प्रख्यात पाश्चात्य तंत्र विशेषज्ञ

जीवन में महालक्ष्मी की साधना-आराधना प्रत्येक साधक को करनी पड़ती ही है। दैनिक रूप से जीवन-यापन करने वाले साधक को भी और नियमित रूप से आय प्राप्ति का साधन रखने वाले अर्थात् वेतन भोगी साधक को भी, क्योंकि जीवन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति केवल अर्थ की उपासना से ही सम्भव है। अर्थ की साधना वास्तव में जीवन की एक प्रबल आवश्यकता है न कि भोग-विलास, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु की गयी साधना। महालक्ष्मी का वरदायक स्वरूप प्राप्त किए बिना कोई भी तो अपने जीवन को परिपूर्ण नहीं कर सकता। व्यवसायी वर्ग के लिए महालक्ष्मी की साधना का विशेष अर्थ होता है। केवल व्यापार की वृद्धि के लिए अथवा धन की प्रबल प्राप्ति के लिए ही नहीं वरन् इस रूप में भी कि उसके दैनिक क्रिया-कलाप में पग-पग पर कठिनाइयां और अड़चनें न आएं। व्यवसायी वर्ग को चौतरफा ध्यान देकर अपने को निरन्तर गतिशील बनाए रखना पड़ता है। व्यापार में प्रतिद्वन्द्विता और दामों में उतार-चढ़ाव को सहना तो उसके लिए रोजमर्रा की बात ही होती है किन्तु उसका मन तब टूट जाता है, जब उसके ग्राहक टूट जाते हैं या किसी कारणवश साख पर कोई विपरीत बात आ जाती है अथवा वह ऋण के लेन-देन मे फंस जाए। ऐसी कठिन परिस्थितियों के पीछे कारण केवल यही होता है कि उसकी दुकान अथवा व्यवसाय स्थल में 'श्री' का वास नहीं होता, 'श्री' की स्थापना एवं साधना नहीं होती।

व्यापार से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के कार्य स्थल पर लक्ष्मी का स्थापन और पूजन तो अवश्य होता है, विघ्न-विनाशक श्री गणपति का भी पूजन होता है तथा श्रद्धा के अनुसार अन्य देवी-देवताओं के भी चित्र लगे होते हैं, जिनका नियमित पूजन करके ही वे अपना दैनिक व्यापार आरम्भ करते हैं किन्तु केवल इतने से ही व्यवसाय में सफलता मिल जाए, यह सुनिश्चित और बाध्यकारी नहीं होता जबकि सफलता और अर्थ प्राप्ति का ऐसा उपाय होना चाहिए जो एक प्रकार से बाध्यकारी हो अर्थात् ग्राहक को जहां अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हो वहीं लक्ष्मी को विवश कर दे कि वह उसके व्यापार स्थल में आकर स्थापित ही हो। यह बाध्यकारी उपाय या विवश कर देना किसी बल प्रयोग से नहीं विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा ही किया जा सकता है। अधिकांश व्यवसायी बंधु इस बात का रहस्य नहीं जानते अतः उन्हें नित्य-प्रति के जीवन में अभाव व तनाव का सामना करना ही पड़ता है।

लक्ष्मी की इस रूप में स्थापना, 'श्री' का आह्वान सम्भव करने की युगों-युगों से केवल एक ही विधि, एक ही उपाय प्रमाणिक माना गया है और वह है 'श्री यंत्र'। श्री यंत्र एक प्रकार से भारतीय साधना-चिन्तन का पर्यायवाची बनकर केवल भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में विख्यात हो चुका है और

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान, भारतीय यंत्र विद्या के अन्वेषक सर जॉन वुडरोफ ने इसकी सम्भावनाओं और शक्तियों का विश्लेषण करने के पश्चात् हतप्रभ होकर स्वयं को केवल इतना ही कहने में समक्ष पाया कि जिस देश में ऐसे दुर्लभ यंत्र का निर्माण किया गया हो वह भला सोने की चिड़िया क्यों न कहलाता और वास्तव में सत्य भी यही है। भारत के वैभवशाली मंदिरों, प्रसिद्ध व्यवसायियों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर श्रीयंत्र को उत्कीर्ण करना कोई नई बात नहीं रही। देश के सुविख्यात उद्योगपति घराने की सफलता का रहस्य भी यही श्री यंत्र है जो उनकी पुश्तैनी गद्दी में कई पीढ़ियों पूर्व किसी घुमक्कड़ साधु द्वारा स्थापित किया गया था। सर जॉन वुडरोफ की प्रेरणा पर ही इस यंत्र को पश्चिमी विद्वान अपने देश ले गये और जब वे इसके सामान्य अध्ययन में सफल नहीं हो पाए तब अत्याधुनिक कम्प्यूटरों की मदद से इसकी रचना को समझने का प्रयत्न किया। इसके विभिन्न त्रिकोणों में निहित शक्तियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया। और वे जितना ज्यादा इसको समझने का प्रयास कर रहे हैं, उतना ही अधिक आश्चर्य में भरते जा रहे हैं क्योंकि श्री यंत्र का स्वरुप इसी प्रकार से है।

श्री यंत्र का स्वरूप

मध्य में बिन्दु-भगवती पराम्बा के प्रतीक स्वरूप में, उसके ऊपर त्रिकोण जो लक्ष्मी का प्रतीक है, त्रिकोण के ऊपर अष्ट त्रिकोण अष्ट लक्ष्मियों का प्रतीक, अष्ट त्रिकोण के ऊपर दस त्रिकोण दस सम्पदाओं के प्रतीक तथा इसके भी ऊपर चतुर्दश त्रिकोण जो 14 शक्तियों के प्रतीक हैं। तदुपरान्त अष्टदल एवं अष्टदल के ऊपर षोडश पद्मदल जीवन की आठ सम्पत्तियों और षोडश कलाओं के प्रतीक हैं। यंत्र के चतुर्दिक तीन शक्तियों के प्रतीक में तीन परिधियां। यदि गणना करके देखा जाए तो श्री यंत्र 2816 शक्तियों का समन्वित स्वरूप है। श्री यंत्र का रहस्य केवल उसके स्वरूप में ही नहीं उसके निर्माण में भी छुपा है सिद्धि प्राप्ति के लिये अलग ढंग से तथा दारिद्र्यनाश के लिये सर्वथा भिन्न प्रकार से श्री यंत्र का अंकन किया जाता है। जब तक इसको सही ढंग से उत्कीर्ण नहीं किया जाता तब तक इसका प्रभाव भी प्राप्त नहीं होता।

जीवन की विभिन्न दशाओं हेतु मुख्यत: आठ प्रकार के श्रीयंत्र माने गए हैं 1. मेरु पृष्ठीय श्रीयंत्र, 2. कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र, 3. धरा पृष्ठीय श्रीयंत्र, 4. मत्स्य पृष्ठीय श्रीयंत्र, 5. ऊर्ध्वरूपीय श्रीयंत्र, 6. मातंगीय श्रीयंत्र, 7. नवनिधि श्रीयंत्र, 8. वाराहीय श्रीयंत्र।

भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के श्रीयंत्र का प्रयोग किया जाता है किन्तु गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तथा व्यवसाय स्थल पर स्थापित करने के हेतु कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र ही सर्वोत्तम माना गया है।

केवल व्यवसाय स्थल में ही नहीं वरन् घर के पूजा-स्थान में भी ऐसे श्रेष्ठ यंत्र की स्थापना सौभाग्यदायक कही गयी है क्योंकि यह केवल लक्ष्मी का ही आधारभूत यंत्र नहीं वरन् 'श्री' का आधार यंत्र है, जिसकी स्थापना से विभिन्न प्रकार के तनाव, बाधाएं और अड़चनें समाप्त होने की स्थितियां बनने लगती हैं। यह यंत्र जहां एक ओर वरदायक है वहीं विघ्न-विनाशक भी है अत: व्यवसाय स्थल में इसका स्थापन तो निश्चित रूप से आवश्यक हो जाता है। साधक जहां कुबेर यंत्र की स्थापना करता है वहीं उसे श्रीयंत्र की स्थापना भी करनी चाहिए। श्रीयंत्र, कुबेर यंत्र एवं कनकधारा यंत्र इन तीनों यंत्रों की स्थापना से सौभाग्य का एक क्रम बनता है और यदि श्रीयंत्र पर अष्टलक्ष्मी सम्पुट व प्राणसंजीवनी क्रिया सम्पन्न की गयी हो तो वह यंत्र भावी पीढ़ियों के लिये भी लाभदायक सिद्ध होता है। जो अपने व्यापार में धन, यश, मान, पद प्रतिष्ठा सभी कुछ प्राप्त करने के इच्छुक हो, समाज में अपना स्थान मनाने का आतुर हो उन्हें ऐसा धातु निर्मित यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए।

आगामी दिनों में आने वाले पुरुषोत्तम मास की एकादशी 27.9.20 को या किसी भी बुधवार को इस यंत्र को स्थापित किया जा सकता है। इसी यंत्र पर एक छोटा सा प्रयोग सम्पन्न कर लेने से अधिक अनुकूलता रहती है। साधक को चाहिए कि वह ऐसे यंत्र को बहुत पहले से ही प्राप्त कर लाल कपड़े पर स्थापित कर यदि कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप ग्यारह दिनों तक करे तो यह यंत्र सम्पूर्ण रूप से भावी पीढ़ियों तक के लिए चैतन्य व परिवार से सम्बन्धित हो जाता है।

मंत्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नम: ।।

बाजोट पर, समतल भूमि पर या लाल कपड़ा बिछाकर श्री यंत्र स्थापित कर दें। नित्य प्रति एक बार इसके दर्शन करना और श्रद्धाभाव से यदि सम्भव हो तो सामान्य पूजन कर लेना उपयोगी रहता है। इस यंत्र को बार-बार इधर से उधर नहीं ले जाना चाहिए। ऋण मुक्ति, रोग निवृत्ति, स्वास्थ्य लाभ, पारस्परिक सौजन्य, पारिवारिक सुख-संतोष के लिये भी इस यंत्र से श्रेष्ठ कोई भी यंत्र नहीं माना गया है।

साधना सामग्री - 570/-

• यौवन को बरकरार रखें •

यौवन तो यौवन ही होता है, समुद्र की उफनती लहर की तरह आता है और गरजता बरसता लौट जाता है
जीवन के तट पर यादों की सीपियाँ छोड़ कर... ये लहरें थमे नहीं, लहरों पर लहरें आती ही रहें यह संभव है

रति-प्रिया साधना से

वृद्धावस्था जीवन का एक कड़वा सच है।

नहीं चाहते हुए भी व्यक्ति इसे ढोने के लिए मजबूर होता है। मानव शरीर के आन्तरिक जीवन-चिह्न की शक्ति में कमी या शिथिलता आना वृद्धावस्था के प्रारम्भ होने का संकेत है।

रति-प्रिया साधना यौवन को बरकरार रखने का एक सर्वश्रेष्ठ उपाय है, जिससे साधक साधना पर्यन्त अपने भीतर युवा की भांति शक्ति अनुभव करने लगता है

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

छोटे-छोटे क्रोमोसोम से मिलकर बना है मानव शरीर। इन क्रोमोसोम के विभाजन के फलस्वरूप ही मानव शरीर का विकास होता है। कुछ निश्चित क्रम पूरा होने के बाद क्रोमोसोम का विभाजन रुक जाता है और मानव शरीर की एक विशेष आकृति निर्धारित हो जाती है। इस निर्माण प्रक्रिया के साथ ही साथ विनाश प्रक्रिया भी मानव देह में चलती रहती है। विनाश क्रम में कुछ ऐसे तत्वों का निर्माण हो जाता है जो कोषों के आवरण को भेद कर अन्दर प्रवेश कर जाते हैं और क्रोमोसोम को नष्ट करके कोषों को समाप्त कर देते हैं।

इन्हीं कारणों से मानव देह की जैविक शक्ति क्षीण होने लगती है और मानव शरीर यौवन से वृद्धता की ओर अग्रसर हो जाता है। जैविक शक्ति में कमी व्यक्ति के अन्दर यौवन काल में भी उत्पन्न हो सकती है, जो व्यक्ति युवावस्था में ही वृद्ध दिखने लगे उस को अपने आप में ग्लानि महसूस होने लगती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, उस की सबसे बड़ी इच्छा रहती है कि वह पूर्ण यौवन युक्त बना रहे। भले ही वह प्रौढ़ावस्था में कदम रख चुका हो किन्तु अपने आप को ज्यादा से ज्यादा आकर्षक व यौवन युक्त प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। **बचपन में आनन्द के हिंडोले में झूला हुआ, यौवन के सुगन्ध से सराबोर व्यक्ति 40 वर्ष के बाद जब इस अवस्था में पहुंचता है तो वह जीवन से अवश्य ही थोड़ी निराशा महसूस करने लगता है।**

इसके लिए कई उपायों का प्रयोग करते हैं, योग की कक्षाओं में भाग लेते हैं। इसके अलावा कभी किसी समाचार पत्र या पत्रिका में विज्ञापन (यौवन पुन: प्राप्त करें चेहरे की झुर्रियां मिटाये) पढ़ता है तो व्यक्ति उन्हें भी अपनाने में पीछे नहीं रहता। इन सबका परिणाम होता है शरीर में कुछ नयी बीमारियाँ, चेहरे पर कुछ भद्दे दाग, इन्हें दूर करने के लिए व्यक्ति फिर प्रयासरत होता है। अन्त में हार कर असमय ही बुढ़ापे के चंगुल में फँस जाता है।

पहले तो यह समझना आवश्यक है कि 'यौवन' शब्द का तात्पर्य क्या है? गुलाब का एक पुष्प कली से पूर्ण पुष्प बनने के बीच का समय, ऐसा समय एक ऐसा स्वरूप जिसे बार-बार निहारने को जी चाहता है उस पुष्प में होती है ताजगी, सुगन्ध। ऐसे पुष्प को तो देख कर ही आनन्द आ जाता है। 'यौवन' शब्द का यही अर्थ है। यौवन केवल जवानी के आयु से ही सम्बन्धित नहीं है, यह तो शरीर के भीतर उत्पन्न हुए विविध भावों का शरीर के माध्यम से प्रकटीकरण है यदि यौवन काल को प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति के शरीर में ताजगी नहीं है, रूप, प्रेम और आनन्द नहीं है तो ऐसे व्यक्ति का जीवन अपनी लाश को अपने ही कंधों पर ढोने के समान है।

चाहे संस्कृत के काव्य हों अथवा तंत्र के ग्रन्थ, उपनिषद् हो या पुराण प्रत्येक में स्त्री स्वरूप को 'रति' तथा पुरुष स्वरूप को 'कामदेव' की शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री जन्म से ही आकर्षक और सौन्दर्य युक्त हों, लेकिन क्या ऐसा संभव है कि 'रति-प्रिया' साधना द्वारा कामदेव व रति के समान बना जा सकता है? असम्भव व अप्राप्त को संभव व प्राप्त करना ही 'साधना सिद्ध' करने का मूल उद्देश्य होता है।

किन कारणों से करे - रति-प्रिया साधना

1. जब अपने आप में उदास रहने लगें, हर समय सुस्ती छायी रहे, किसी काम को करने में मन न लगे।
2. जब आप चालीस वर्ष में ही 60 वर्ष के लगने लगें।
3. जब आप सामने वाले को आकर्षित करने में अपने आप को असमर्थ महसूस करने लगे।
4. जब बिना कारण के जीवन नीरस लगने लगे।
5. जब जीवन का सुखद सम्बन्ध और सौन्दर्य बिखरने लगे।

ऐसी अन्य अनेक परिस्थितियाँ जहाँ दवा या योग के द्वारा लाभ नहीं मिलता है तब एकमात्र उपाय रति-प्रिया साधना सम्पन्न करना ही शेष रह जाता है।

रति-प्रिया साधना - कैसे सम्पन्न करें -

इसके लिए आप 'रति प्रिया यंत्र' तथा 'रति प्रिया माला' प्राप्त कर लें। इसका विशिष्ट मुहूर्त में सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठित होना आवश्यक है। शुक्रवार को रात्रि में नौ बजे के बाद स्नान करके अपनी इच्छानुसार सुन्दर व आरामदायक वस्त्र पहन लें। साधना कक्ष का वातावरण अगरबत्ती जलाकर सुगन्धयुक्त बना लें। एक चौकी पर गुलाब के फूल की पंखुड़ियों से स्वस्तिक बना कर रतिप्रिया यंत्र स्थापित करें। दोनों हाथों में इत्र लगा कर माला पर इत्र मलें और रतिप्रिया यंत्र के चारों तरफ रख दें। हाथ जोड़ कर कामदेव व रति के रूप का ध्यान करें और उनसे आप अपनी इच्छा पूरी करने के लिए प्रार्थना करें। फिर रति प्रिया माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप सम्पन्न करें। ऐसा सात दिन तक करें। प्रत्येक दिन यंत्र के नीचे रखी पंखुड़ियों को बदलते रहें। धीरे-धीरे अपने व्यक्तित्व में आने वाले निखार को देखकर आप स्वयं आश्चर्य चकित रह जायेंगे।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं रति प्रियायै पूर्ण सौन्दर्य देहि देहि फट्

प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें, या मन्दिर में भगवान के आगे समर्पित कर दें। निश्चय ही उसी दिन से सौन्दर्य अपने आप निखरने लगेगा।

साधना सामग्री- 450/-

जीवन है, तो सब कुछ है, आयु है, स्वास्थ्य है, तभी संसार में किसी अन्य वस्तु की कल्पना की जा सकती है, इसी को कहा गया है – 'जान है तो जहान है।' और इसी तथ्य को बहुत समय पूर्व ही ऋषियों ने अनुभव कर जड़ी-बूटियों एवं अन्य पदार्थों के औषधीय गुणों को संकलित किया और जन्म दिया एक अद्‌भुत शास्त्र को जिसकी तुलना वेद जैसे सर्वोच्च ग्रंथ से की गई और नाम दिया गया आयुर्वेद।

गिलोय

नाम – संस्कृत-गुडूची, अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, सोमवल्ली, अमृता इत्यादि। हिन्दी-गिलोय। बंगाली-गुलच। गुजराती-गलो। मराठी-गुड़वेल। तेलगू-तिप्पतिरगा।

वर्णन – आयुर्वेद की यह सुप्रसिद्ध वनस्पति सारे भारतवर्ष में पैदा होती है। यह बेल बड़ी और बहुवर्ष जीवी होती है। यह दूसरे वृक्षों के आसरे से चढ़ती हैं जो गिलाय नीम के ऊपर चढ़ती है वह नीम गिलोय कहलाती है और औषधि प्रयोग में वही सबसे उत्तम मानी जाती है। इसके पत्ते हृदय की आकृति के और लम्बे डण्ठल के होते है। फूल बारीक, पीले रंग के झूमकों में लगते हैं। फल लाल रंग के होते हैं ये भी झूमकों में लगते हैं। इस लता का तना अंगूठे के बराबर मोटा होता है। शुरु-शुरु में यह हरे रंग का होता है मगर पकने पर धूसर रंग का हो जाता है इस बेल का तना ही औषधि प्रयोग के काम में आता है। इस सारी वनस्पति का स्वाद कड़वा होता है। गरमी के दिनों में इस बेल को इकट्‌ठी करने से यह ज्यादा गुणकारी होती है।

गुण, दोष और प्रभाव – आयुर्वेदिक मत से गिलोय कसैली, कड़वी उष्णवीर्य, रसायन, मलरोधक, बलकारक, अग्निदीपक, हलकी, हृदय को हितकारी, आयुवर्धक तथा प्रमेह, ज्वर, दाह, तृष्ण, रक्तदोष, वमन, वात, भ्रम, पाण्डुरोग, कामला, आँव, खाँसी, कोढ़, कृमि, खूनी बवासीर, वात रक्त मेद, पित्त और कफ को दूर करती है। यह घी के साथ बात को, शक्कर के साथ पित्त को, शहद के साथ कफ को और सोंठ के साथ आमवात को दूर करती है।

गिलोय और मानव शरीर की व्याधियाँ – गिलोय में शामक, ज्वर नाशक, पित्तशामक, मूत्रल और शोधक गुण रहते हैं। इसका शामक गुण अत्यंत आश्चर्यजनक है। आयुर्वेद के मतानुसार शरीर में पैदा होने वाली प्रत्येक व्याधि में वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषों में एक या दो का प्रकोप अवश्य रहता है। गिलोय में शामक गुण होने की वजह से वह प्रत्येक कुपित हुए दोष को समानता पर ला देती है। जिस दोष का प्रकोप होता है उसको वह शांत कर देती है और जिसकी कमी हो जाती है, उसको प्रदीप्त कर देती है इस प्रकार घटे-बढ़े दोषों को समान स्थिति में लाकर प्रकृति को निरोग बनाने का गुण दूसरी किसी भी वनस्पति में नहीं है। इसलिये इसका नाम अमृता रक्खा गया है। यह एक ही वनस्पति है जो प्रत्येक प्रकृति के मनुष्य को प्रत्येक रोग में दी जा सकती है।

ज्वर पर गिलोय के प्रभाव – ज्वर नाशक गुण होने की वजह से यह हर एक जाति के ज्वरों में निशंकता से दी जा सकती है। यद्यपि मलेरिया के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति इसमें बहुत कम है और इस रोग में यह क्विनाइन का मुकाबला तो नहीं कर सकती, फिर भी शरीर की दूसरी क्रियाओं को व्यवस्थित करने में यह बहुत सहायता पहुँचाती है, जिसके परिणामस्वरूप मलेरिया ज्वर पर भी इसका असर दिखलाई देता है। क्विनाइन के साथ

इसका भी उपयोग किया जाए तो मलेरिया ज्वर में विशेष फायदा हो सकता है। क्षय रोग पर भी इसका अत्यंत प्रभाव होता है।

जीर्ण ज्वर और टायफायड ज्वर में (मोतीज्वर) – जहाँ कि क्विनाइन इत्यादि औषधियाँ कुछ भी काम नहीं आ सकतीं वहाँ भी गिलोय आश्चर्यजनक फायदा करती है। इसमें पित्त को शांत करने का गुण रहता है और जीवर्ण ज्वर तथा मोती ज्वर में विशेषकर पित्त का ही प्रकोप रहता है। इसलिये ऐसे ज्वरों में यह बहुत अच्छा लाभ बतलाती है।

ऐसे बुखारों में तुलसी काली मिर्च के साथ इसका काढ़ा बना कर देने से अथवा घन सत्व मिलाकर उसको त्रिफले के चूर्ण और शहद के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

यकृत रोग, मन्दाग्नि और गिलोय – यकृत अर्थात् लीवर और तिल्ली की खराबी की वजह से शरीर में जलोदर, कामला, पीलिया इत्यादि जितने भी रोग होते हैं उन सबको दूर करने के लिये गिलोय एक अत्यंत चमत्कारिक दवा है। मन्दाग्नि की ऐसी पुरानी शिकायतों में भी गिलोय में आश्चर्यजनक लाभ बतलाये हैं जो लोग पेट के रोगों से ग्रसित हों, जिनकी तिल्ली और यकृत बिगड़ रहे हों, जिनको भूख न लगती हो, शरीर पीला पड़ गया हो, वजन कम हो गया हो, और जो बड़ी-बड़ी औषधियों से निराश हो गये हों वे भी इस आश्चर्यजनक औषधि का सेवन करके लाभ उठा सकते है। ऐसे रोगों में इसके प्रयोग की विधि इस प्रकार है। नीम के ऊपर चढ़ी हुई ताजी गिलोय 12 ग्राम, अजमोद 2 ग्राम, छोटी पीपर 2 दाने, नीम की पत्ती की सलाइयाँ 7, इन सब चीजों को कुचल कर रात को पाव भर पानी में मिट्टी के बरतन में भिगो दें। सवेरे इन चीजों को ठण्डाई की तरह सिल पर पीस कर उसी पानी में छान कर पीलें। इस प्रकार 15 से लेकर 30 दिनों तक पीने से पेट के सब रोग दूर होते हैं।

रक्त विकार और गिलोय – गिलोय में रक्त विकार को नष्ट करके शरीर में शुद्ध रक्त प्रवाहित करने का गुण भी विद्यमान है। इसलिये खाज, खुजली, वातरक्त इत्यादि रोगों में इसको गूगल के साथ देने से अत्यंत लाभ होता है।

गिलोय और मूत्ररोग – सुजाक, प्रमेह, पेशाब की जलन इत्यादि मूत्र रोगों में भी अपने मूत्रल गुण की वजह से यह अच्छा लाभ बतलाती है। अरण्डी के तेल के साथ इसका काढ़ा बनाकर देने से कष्टसाध्य समझे जाने वाले संधिवात में भी अच्छा लाभ होता है।

गिलोय का सत्व निकालने की विधि

नीम पर चढ़ी हुई ताजी, रसदार और चमकदार गिलोय को लाकर उसके एक-एक दो-दो इंच के टुकड़े कर उन टुकड़ों को पत्थर से कुचल कर एक मिट्टी के बरतन में पानी के अंदर गला देना चाहिए। जब चार घण्टे तक वे टुकड़े अच्छी तरह गल जाय, तब उनको हाथों में मल-मल कर बाहर निकाल कर फेंक देना चाहिए। उसके बाद उस पानी को कपड़े से छानकर तीन-चार घण्टे तक पड़ा रहने देना चाहिये। जिससे गिलोय का सब सत्व उस बरतन की पेंदी में जम जाएगा। उसके बाद धीरे-धीरे उस पानी को दूसरे बरतन मे निकाल लेना चाहिए और नीचे जो सफेद रंग का सत्व जमा हो उसको निकाल कर धूप में सुखा लेना चाहिए। यही गिलोय का सत्व है। जो अनेक रोगों में काम में आता है।

गिलोय का घन सत्व बनाने की विधि – सत्व निकालते समय सत्व के ऊपर के पानी को आग पर चढ़ा कर खूब औटाना चाहिए। जब औटाते-औटाते रबड़ी सरीखा हो जाए तब उसको उतार कर या उसको थाली में डालकर धूप में सुखा लेना चाहिए। यही गिलोय का घन सत्व है।

यह घन सत्व भी अत्यंत प्रभावशाली औषधि है और जहाँ जहाँ गिलोय सत्व और गिलोय को लेने का विधान है, वहाँ-वहाँ उसके बदले में इसका उपयोग बेधड़क होकर किया जा सकता है।

उपयोग

गठिया – इसका क्वाथ पिलाने से पुरानी गठिया और पेशाब की बीमारियों में बड़ा लाभ होता है।

श्वेत प्रदर – शतावरी के साथ इसको औटाकर काढ़ा पिलाने से स्त्रियों का श्वेत प्रदर मिटता है।

पित्त ज्वर – गिलोय के काढ़े में शक्कर मिलाकर पीने से पित्त का ज्वर छूट जाता है।

कफ ज्वर – गिलोय के क्वाथ में छोटी पीपल का चूर्ण मिलाकर पिलाने से कफ का ज्वर छूट जाता है।

अरुचि – गिलोय के रस में पीपल का चूर्ण और शहद मिलाकर पिलाने से तिल्ली के रोग आराम होते है, भूख और रुचि बढ़ती है और खाँसी में लाभ होता है।

पीलिया – इसके पत्तों को पीसकर मट्ठे में मिलाकर पीने से पीलिया दूर होती है।

हिचकी – इसके और सौंठ के चूर्ण को मिलाकर सुँघाने से हिचकी बन्द हो जाती है।

वातरक्त (1) इसके काढ़े मे अरण्डी का तेल और गूगल मिलाकर नियमित रूप से सेवन करने से वात रक्त मिटता है। (2) 3 या 5 छोटी हर्रे के चूर्ण को गुड़ में गोली बनाकर खाने से और ऊपर से गिलाये का काढ़ा पिलाने से बढ़ा हुआ वात रक्त भी शांत होता है।

अनेक रोग – गिलोय को गुड़ के साथ खाने से कब्जियत दूर होता है। मिश्री के साथ लेने से पित्त का कोप शांत होता है। शहद के साथ खाने से कफ के विकार शांत होते हैं। सौंठ के साथ लेने से आमवात मिटता है।

गिलोय की मात्रा – हरी हालत में 20-25 ग्राम तक की है। सूखी गिलोय की मात्रा 4 से 6 ग्राम तक और गिलोय सत्व की मात्रा आधा ग्राम से 2 ग्राम तक की है। इतनी ही मात्रा गिलोय के घनसत्व की होती है।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें।)

पुरुषोत्तम मास का फल

(18.9.20 से 16.10.20)

संक्रान्ति रहित मास को 'अधिक मास' के अतिरिक्त अधि मास, मलमास एवं आध्यात्मिक विषयों में अत्यन्त पुण्यदायी होने के कारण 'पुरुषोत्तम मास' आदि नामों से भी जाना जाता है। यह लगभग प्रत्येक 32 मास 16 दिनों में आता है। इस प्रकार हर तीसरे वर्ष में अधिक मास की पुनरावृत्ति होती है।

श्रीमद् भागवत की कथा के अनुसार पुरुषोत्तम मास के स्वामी स्वयं भगवान पुरुषोत्तम हैं। एक समय जब प्रारम्भ में इस मास का कोई अधिकृत स्वामी न होने के कारण इसे हीन माना जाने लगा और ऐसा माना जाने लगा कि इस मास का कोई स्वामी न होने से इस मास में किये गये किसी भी शुभ कर्म का कोई फल प्राप्त नहीं होगा और इसे मल मास नाम दिया गया तब इस मल मास की पुकार पर परम पुरुष भगवान पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ने इस मलमास की करुण पुकार सुनकर कहा कि, हे अधिमास, तुम दुखी मत हो, मैं गुणों से, कीर्ति से, पराक्रम से, भक्तों को वर देने से और जो भी मेरे गुण हैं उनसे ही मैं पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। वैसे ही तुम भी लोकों में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध होंगे।

मैंने अपने गुण आज तुझे प्रदान किये अब से तुम पुरुषोत्तम जो मेरा नाम है आज से तुम भी इसी नाम से जगत में जाने जाओगे। मैं स्वयं तुम्हारा स्वामी हुआ।

अब मेरे समान ही तुम जगत में मेरी समानता पाकर सब मासों के अधिपति कहलाओगे। जगत में वंदनीय होंगे।

इस मास में की गई साधना से भगवान विष्णु एवं शिव दोनों की अलौकिक शक्तियां प्राप्त होती है

जो भी इस मास में व्रत, पूजा, साधना करेंगे। उनके दुःख और दारिद्रय का नाश होगा। इस मास में नियमपूर्वक, संयमित रहकर भगवान विष्णु एवं शिव की पूजा-अर्चना करने से अलौकिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। शिव पुराण में भी इसका उल्लेख है।

सम्यक चीर्णेन तपसा शतवर्षमितेन च।
यत्फलं लभते विप्र मासेऽस्मिन्नेक वासरात॥

(पुरुषोत्तम मास महा.)

अर्थात् अधिक मास के आने पर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक व्रत, उपवास, साधना, श्री विष्णु पूजन, दानादि शुभ कर्म करता है वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है और अन्त में भगवान श्रीकृष्ण की कृपा एवं सानिध्य का अधिकारी होता है।

प्रत्येक तीसरे वर्ष यह पुरुषोत्तम मास आता है अतः इस मास का आदर करते हुए जप, तप, साधना में इसका उपयोग करना चाहिए एवं भगवान पुरुषोत्तम की कृपा प्राप्त करनी चाहिए। उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि यह मास भगवान को कितना प्रिय है इस मास में की जाने वाली साधनाओं का फल कई गुणा प्राप्त होता है।
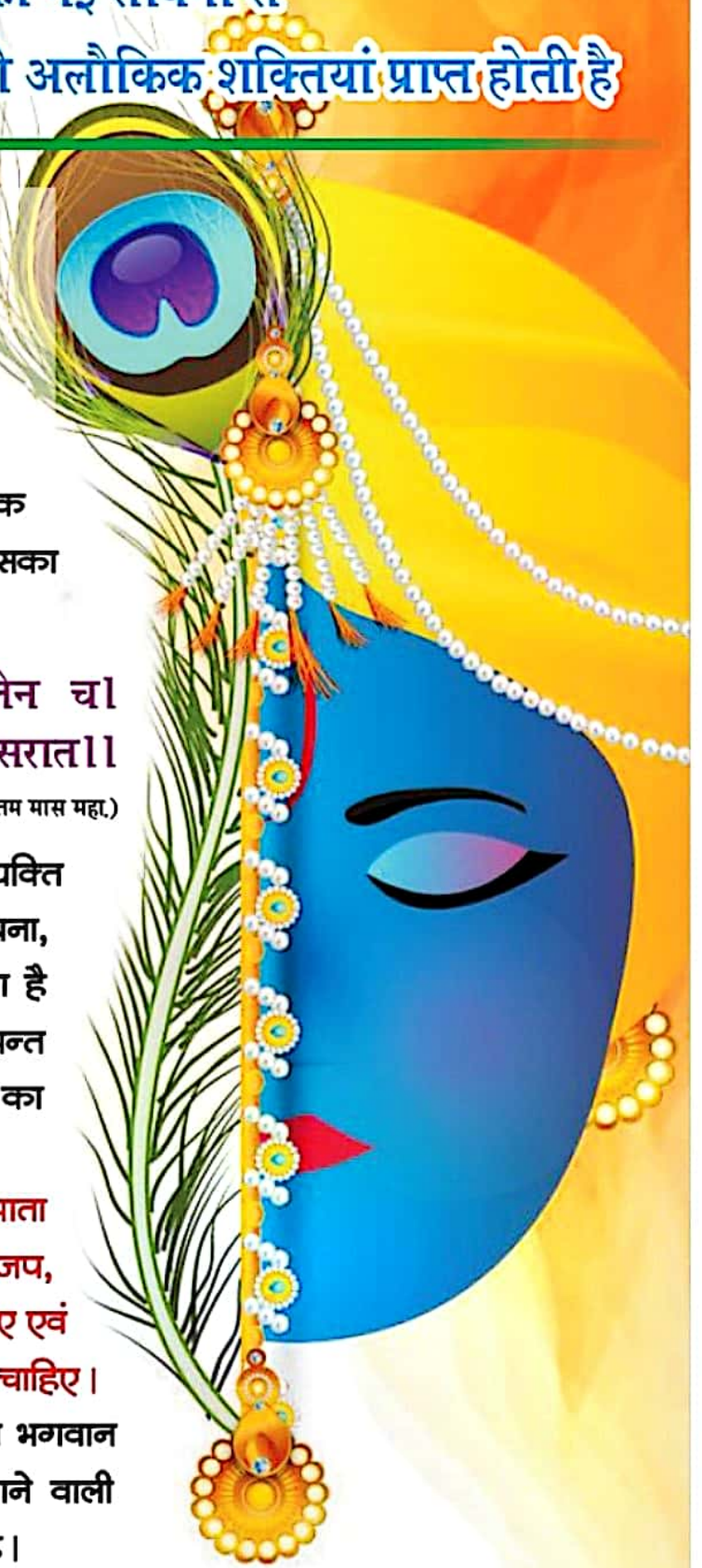
यमराज का न्याय

मनोज ने ज्यों ही आँखें खोलीं, अगल-बगल सींगधारी दो भयंकर प्रेत खड़े दिखायी दिये। रोम-रोम सिहर उठे उसके। पैर डर से काँपने लगे और जबान पर तो मानो ताला जड़ दिया गया।

फिर मनोज ने कुछ साहस बटोरा और इधर-उधर आँखें फेरनी शुरु कर दीं। वह समझ जरूर रहा था कि वह किसी बहुत बड़े दरबार में खड़ा है। लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर वह है कौन-सा दरबार!

सामने एक विशाल सिंहासन पर नजर पड़ी ! सिंहासन रत्नजटित और बहुत ही सुन्दर था और उसकी बगल में कुछ हटकर एक दूसरा आसन भी दिखाई पड़ा, किन्तु दोनों आसन खाली थे। पर तब तक मनोज की सारी तन्द्राएं समाप्त हो चुकी थीं और जब उसने संभलकर आँखें चारों ओर घुमायीं, तब तो मारे भयके उसकी हालत खराब होने लगी। बड़ी बड़ी कटारें लिये भयंकर प्रेत दरबार के चारो ओर खड़े थे। उधर अचानक उसकी आँखे अपनी बगल में खड़े प्रेत पर जा टिकीं, मानो उसकी आँखें उस प्रेत से पूछ रही हों - 'भई', जल्द बताओ, यह प्रेतों का तो दरबार नहीं?'

'मुझे धर्म-अधर्म नहीं मालूम देवता! किन्तु हाँ, जानते भर मैंने सदा कर्त्तव्य का पालन किया, भगवान के सभी जीवों से सदा प्रेम करता रहा। जहाँ तक बना, भगवान के सब जीवों के सुख-हित का ध्यान रखा और उन्हें भरसक प्रेम किया। अपनी स्त्री छोड़कर परायी औरतों को सदा माँ-बहन ही समझा। हाँ, भगवान् ने मुझे धन तो इतना नहीं दिया, पर चरित्ररूपी अमूल्य धन उनकी कृपा से मुझे प्राप्त रहा।'

प्रेत मनोज का मनोभाव समझकर बोल उठा - 'घबराओ नहीं; यह महाराज यम की पुरी है!'

'तो मैं यमपुरी में हूँ !' हकलाते हुए मनोज ने पूछा।

'हाँ, इसमें डरने की क्या बात हैं यहाँ तो सभी जीवों को पहले आना ही पड़ता है!'

'क्यों, मैंने कौन-सा पाप किया है भैया?'

'पाप-पुण्य का निर्णय यहीं होता है।'

'कौन करेगा मेरे पाप-पुण्य का न्याय?'

'ब्रह्मा-पुत्र भगवान् चित्रगुप्त।'

'और दण्ड-पुरस्कार कौन देगा?'

'भगवान् यम, प्रतापी भगवान् सूर्य के छोटे बेटे। यह काम उन्हीं के जिम्मे का है और हम सब उन्हीं के आज्ञाकारी दूत हैं।'

'कैसे हैं तुम्हारे स्वामी, भैया?'

'बड़े ही अच्छे हैं, दूध का दूध और पानी का पानी न्याय करते हैं।' उसी समय मनोज को दफ्तर की याद आ आयी और वह बोल उठा - 'भई! देखो, मुझे घर जल्द पहुँचा दो, दफ्तर का समय हो गया है। आजकल इमरजेंसी है, बड़ी कड़ाई है।'

प्रेत मुस्कराकर पूछ बैठा - 'यह इमरजेंसी कौन-सी बला है जी?'

मनोज बोला - 'मेरे भारत पर पाकिस्तान और चीन के आक्रमण का हमेशा खतरा बना हुआ है, इसलिये भारत सरकार ने संकटकाल घोषित कर दिया है। इसमें देश की रक्षा के लिये पूरे जोर-शोर से काम होते हैं, जरा भी ढिलाई बरदाश्त नहीं।'

'तो जमीन वाले आपस में ही कटते-मरते हैं?'

'क्यों, इसमें कुछ नयी बात तो नहीं, हमेशा से आदमी आपस में इसी तरह लड़ते-मरते आये हैं! यही तो वीरता का परिचय है।'

इसी बीच दूसरे प्रेत ने बड़े जोरों से अट्टहास किया, जिससे सारा दरबार दहल उठा। फिर मौन होते हुए वह बोला - 'अरे यार, मृत्यु लोक के लिये यह नयी बात नहीं। वहाँ तो असत्य, अधर्म, अन्याय, अनाचार, अकर्म आदि का ही बोलबाला रहता है, जिसके चलते हमारी नाक में हमेशा दम आया रहता है।'

'तो क्या तुम्हारे यहाँ पाप-पुण्य नहीं होते?' खीझते हुए मनोज पूछ बैठा।

'नहीं जी, वह लोक पाप-पुण्य से बिल्कुल मुक्त है।'

'छोड़ो इस बकवास को। भई, मुझे घर पहुँचा दो, दफ्तर की देर हो रही है।' मनोज चिढ़ते हुए बोला। उसी समय सहसा घंट बज उठे और शंखध्वनि होने लगी तथा एक दूत जोर से बोल उठा - 'सावधान ! भगवान् यम और भगवान चित्रगुप्त पधार रहे हैं।'

यम और चित्रगुप्त अपने-अपने आसन पर आकर बैठ गये। भगवान् यम थे तो सुन्दर, पर सूरत भयावनी बना रक्खी थी और भगवान चित्रगुप्त एक वृद्ध और संभ्रांत व्यक्ति प्रतीत होते थे। उनमें बुद्धि और विवेक झलक रहे थे। सहसा हिम्मत बटोर मनोज बोल उठा - 'दुहाई है भगवान यम की। आपके दूत मुझे पकड़ लाये। मेरे दफ्तर का समय हो रहा है और ये मुझे घर नहीं पहुँचा रहे हैं!' मनोज की बातें सुनकर भगवान यम ने मुस्कराते हुए कहा - 'चित्रगुप्त देवता ! धरती का मनुष्य भी अजीब जीव होता है; उसे शरीर छूटने पर भी उस शरीर का मोह बहुत दिनों तक बना रहता है।'

'तो क्या मेरा शरीर छूट गया?' घबराकर मनोज पूछ बैठा। भगवान् चित्रगुप्त बोले - 'कोई भी शरीरधारी यहाँ आ नहीं सकता।' और फिर वे बहीं के पन्ने उलटने लगे तथा कुछ देखने लगे। उसी बीच मनोज रोनी सूरत बनाकर बोल उठा - 'हाय-हाय ! मेरे बाल-बच्चों का क्या हाल होगा, देवता?'

चित्रगुप्त बोले - 'जब तुम्हारा जन्म धरती पर हुआ था, तब तुम्हें बाल-बच्चे थे ?'

'नहीं'

'जब तुम्हारा शरीर छूटा, तब तुम्हारे किसी परिवार ने तुम्हारा साथ दिया?'

'नहीं'।

'तुम्हारा जब जन्म धरती पर हुआ, क्या तब तुम्हें मालूम था कि जन्म के पहले तुम कहाँ पर किस रूप में थे?'

'नहीं, देवता !'

'ऐसा सुन्दर मानव-तन तुम्हें मिला और तुमने कुछ परवाह नहीं की; बस बाल-बच्चे, परिवार करते रहे।'

सारी स्थितियाँ समझते हुए गंभीर होकर मनोज बोला - 'मुझे धर्म-अधर्म नहीं मालूम देवता ! किन्तु हाँ, जानते भर मैंने सदा कर्त्तव्य का पालन किया, भगवान के सभी जीवों से सदा प्रेम करता रहा। जहाँ तक बना, भगवान के सब जीवों के सुख-हित का ध्यान रखा और उन्हें भरसक प्रेम किया। अपनी स्त्री छोड़कर परायी औरतों को सदा माँ-बहन ही समझा। हाँ, भगवान् ने मुझे धन तो इतना नहीं दिया, पर चरित्ररूपी अमूल्य धन उनकी कृपा से मुझे प्राप्त रहा।' इसी बीच भगवान चित्रगुप्त पूछ बैठे - 'भगवान की पूजा करते थे?'

'नहीं देवता ! मुझे अवकाश नहीं मिलता, इससे न तो मैं मंदिर जाता और न विशेष पूजा-पाठ ही करता, परंतु मैंने कभी किसी से घृणा नहीं की; किसी को धोखा नहीं दिया और न किसी के कोमल हृदय को कुचलने की इच्छा या चेष्टा ही की।' मनोज बोलकर ज्यों ही मौन हुआ, भगवान् यम बोल उठे - 'तुम बड़े अच्छे जीव मालूम होते हो।' कुछ क्षण रुकते हुए वे फिर पूछ बैठे - 'तो क्या तुमने भगवान् की कभी पूजा नहीं की ?'

मनोज गंभीर होकर बोला - 'भगवान को तो मैंने कभी नहीं देखा, देवता ! हाँ, भगवान के बनाये हुए तमाम जीवों को मैं भगवान ही समझता रहा, उनकी बनायी हुई चीजों को देखता रहा और उन सारी चीजों से मैं बराबर प्रेम करता रहा और हृदय से प्रेम करता रहा।' जरा रुकता हुआ मनोज फिर बोल उठा - 'मेरा एक साथी है भास्कर, जो कहता था कि उसे भगवान् के दर्शन होते हैं और वह हमेशा पूजा-पाठ में रहता था। तिलक लगाता और मंदिर भी बड़ी पाबंदी से वह जाया करता। भगवान की प्राप्ति के लिये बड़े-बड़े जोग-जाप भी किया करता था वह। वह ऐसा कर सकता था; क्योंकि वह एक बड़ा अफसर था और काफी धन था उसके पास। उसे चिंता ही किस बात की थी।'

भगवान चित्रगुप्त इसी बीच बोल उठे-'उसे चिंता थी कामिनियों की मनोज ! यह धर्म उसका बाहरी दिखावे

का था, ढोंग था। ध्यान तो रात-दिन उसका परायी औरतों पर ही लगा रहता और साथ ही वह बड़ा बेईमान अफसर था, लाखों रुपये की उसने बेईमानी की है। कितने घर उसने तबाह कर दिये। अंदर से बड़ा स्वार्थी और क्रूर था वह।'

'क्या कह रहे हैं, देवता ?' मनोज ने चकित होकर पूछा। 'मैं ठीक कह रहा हूँ और यही कारण है कि वह रौरव नरक में पड़ा कराह रहा है आज।'

'तो क्या उसका भी शरीर छूट गया?' मनोज ने पूछा। इसी बीच भगवान् यम बोल उठे - 'हाँ' भास्कर का शरीर छूट गया।' फिर भगवान यम चित्रगुप्त से बोले - 'हे देवता! मनोज के संबंध में आपकी बही में क्या नोट है और आपका परामर्श क्या है?'

पन्ने उलटते हुए भगवान चित्रगुप्त बोले -

मनोज तो भगवान के सच्चे और सर्वोच्च सकाम भक्तों में से एक हैं'

'भगवान यम प्रसन्न होते हुए बोले - 'मनोज ! ऐसा ही है। जाओ मनोज ! तुम्हें अमरपुरी में रहने का आजीवन सुख दिया जाता है। तुम्हें वहाँ सारी राजसी सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी; क्योंकि हमारे मापदण्ड पर तुम बिल्कुल खरे उतरे।'

भगवान् यम का न्याय सुनकर मनोज थोड़ा प्रसन्न तो अवश्य हुआ, पर फिर गंभीर हो गया। भगवान यम ने फिर पूछा - 'क्यों मनोज ! तुम्हें प्रसन्नता नहीं हुई?'

'प्रसन्न हूँ, भगवन ! किन्तु भास्कर की दुर्दशा जानकर मन दुःखी हो गया।' मनोज ने उत्तर दिया।

'कर्मों का फल तो जीवों को भुगतना ही पड़ेगा मनोज !'

भगवान चित्रगुप्त बोले। मनोज का रोम-रोम काँप उठा। भगवान् यम की ओर मुख करके मनोज ने फिर पूछा - 'मेरा कोई पुण्य हो और मैं भास्कर के लिये उसे दे दूँ, इससे क्या भास्कर का कष्ट दूर नहीं किया सकता देवता?' भगवान यम ने जवाब दिया - 'किया जा सकता है, मनोज ! तुम जो कुछ चाहो, वहीं हो सकता है।'

'देवता !' मनोज के मुँह से निकला और उसकी आँखों से आँसू झरने लगे। भगवान यम प्रसन्न होते हुए बोले - 'तुम्हें जीवों से सच्चा प्रेम है, मनोज! एक दुष्ट का कष्ट भी तुमने सहन नहीं हो रहा है।' थोड़ा रुकते हुए भगवान यम फिर बोल उठे - 'रोओ मत मनोज ! तुम-जैसे भगवान के भक्त की आँखों के आँसू बरदाश्त नहीं हो रहे हैं। जाओ, अब तक के उसके सारे पापों के फल तुम्हारे आँसुओं से धुल गये और वह भी तुम्हारे साथ अमरपुरी में ही आजीवन रहेगा।' बात समाप्त होते ही मनोज ने देखा, सामने भास्कर सिर झुकाये खड़ा है। मनोज ने प्रसन्न हो भास्कर को प्रेमालिंगन में कसते हुए कहा - 'भास्कर ! हम दोनों अब आजीवन अमरपुरी में ही रहेंगे।' उसी समय सहसा भगवान यम बोल उठे - 'तथास्तु !'

त्वं विचिंतं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- गुरु से जुड़ने के पश्चात शिष्य का पहला और सर्वोच्च धर्म यही होता है कि वह गुरु द्वारा बताए गए पथ पर गतिशील हो। जो गुरु उसे बताए वैसा ही करे तथा औरों की बातों से या संसार की बातों से भ्रमित न हो।
- शिष्य व्यर्थ की चिन्ताओं में समय बेकार न करे तथा निरंतर सद्गुरुदेव का ध्यान करे। इससे न केवल उस का मन दृढ़ होगा अपितु इधर-उधर भटकेगा भी नहीं।
- एक शिष्य के लिए गुरु ही सर्वस्व है। वह तन, मन एवं आत्मा से गुरु के चरणों में समर्पित होता हुआ निरंतर यही सोचता रहता है कि गुरु कार्य को कैसे आगे बढ़ाएं।
- एक शिष्य के लिए गुरु से बढ़कर कोई भी इष्ट या देवी-देवता नहीं क्योंकि देवी-देवता तो प्रार्थना करने पर ही सहायता करते हैं, परंतु सद्गुरुदेव तो निरंतर अपने शिष्यों पर नजर रखते हैं। इसलिए शिष्य सदैव सद्गुरु का स्मरण कर अपने मन के तार उनसे जोड़े रखता है।
- एक शिष्य के लिए अतुलित धन कमाना या पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करना या मान-सम्मान प्राप्त कर लेना जीवन का उद्देश्य नहीं है। एक शिष्य का लक्ष्य होता है गुरु के हृदय पर अपनी सेवा द्वारा, श्रद्धा द्वारा, आज्ञाकारिता द्वारा अपना नाम अंकित कर देना।
- शिष्य गुरु की अर्चना, पूजा, आराधना केवल पुष्पों, कुंकुम इत्यदि द्वारा नहीं करता। वह गुरु चरणों का पूजन श्रद्धासुमन तथा प्रेमाश्रुओं द्वारा करता है। यही उसके लिए जीवन का सबसे बड़ा पूजन तथा सबसे बड़ी साधना है।
- शिष्य गुरु तक पहुंचने के लिए सभी बाधाओं को हंसते-हंसते पार कर जाता है। समाज, उसकी नीतियां, उसके विचार कोई भी गुरु प्रेम में उसके आड़े नहीं आते। वह समाज की परवाह किए बिना अपने आपको पूर्णत: गुरु चरणों में समर्पित कर देता है।

- जिस प्रकार से एक लोटे का जल समुद्र में डाल दिया जाता है, तो वह लोटे का जल भी समुद्र बन जाता है, ठीक उसी प्रकार जब सामान्य शिष्य गुरु की सेवा करता हुआ उनसे एकाकार हो जाता है, तो वह पूर्ण गुरुमय बन जाता है। इस गुरुमय बनने की क्रिया को ही सिद्धि कहते हैं।
- गुरु तो बहुत दूर की देखता है, वह देखता है कि शिष्य को जीवन की पगडण्डी पर कहां खड़ा करना है, और जहां खड़ा करना है उसके लिए आज इसको कौन सी आज्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आज्ञा पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।
- शिष्य तो वह है, जिसकी मन में हर समय यही इच्छा हो, कि मैं गुरु के पास दौड़कर पहुंच जाऊं। हो सकता है कोई मजबूरी हो, नहीं जा सके, यह अलग चीज है, मगर मन में उत्कण्ठा हो, तीव्र इच्छा हो, छटपटाहट बनी रहे कि उसे हर हालत में गुरु के पास पहुंचना है।
- गुरु से प्राणगत संबंध होना चाहिए, देहगत नहीं। यदि यहाँ गुरु की तबीयत ठीक नहीं है और आपका मन बड़ा बेचैन हो, बड़ी छटपटाहट महसूस होती हो, ऐसा लगे कि कुछ खाली-खाली सा है और मालूम नहीं होता कि यह वेदना क्यों है, यह छटपटाहट क्यों है, किस कारण से है... यही तो प्राणगत और आत्मा के संबंध होते हैं।
- परन्तु गुरु के प्रेम का रास्ता इतना आसान नहीं है, यह तो तलवार की एक धार है जिस पर चलने से पैर लहूलुहान हो जाते हैं। यह ऐसी पगडण्डी नहीं है, जिसके नीचे पुष्प बिछे हों, प्रेम करना तो बहुत कठिन है, तकलीफदायक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की क्रिया बिरले को ही आ पाती है।
- प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर और जब तक प्रेम के रस में भीगेंगे नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अंदर उतर कर प्रभु से साक्षात करने की क्रिया ही तो प्रेम है।
- यदि कोई शिष्य चाहे कि मैं गुरु को हृदय में समेट लूं, गुरु को अपने जीवन में पा लूं, गुरु को अपने में आत्मसात कर लूं और यदि उसके हृदय में प्रेम की सरिता नहीं है, यदि उसके हृदय में प्रेम रस नहीं है, तो वह अपने जीवन में, अपने हृदय में गुरु को उतार भी नहीं सकता। किसी को याद करना, किसी के चिंतन में डूबे रहना अपने आप में ईश्वर की साधना है।

भक्ति तथा शक्ति जब दोनों का मिलन होता है, तभी सिद्धि पूर्ण रूप से प्राप्त हो पाती है और स्थायी भाव से साधक के पास स्थित रहती है, केवल शक्ति पूजन से साधक एक ऐसे मार्ग पर दौड़ता है, जिसका कोई अन्त नहीं है, शक्ति को संकलित कर अपने कार्यों में उपयोग करने हेतु भक्ति भी आवश्यक है, भक्ति एक दिव्य भाव है, इस दिव्य भाव में साधक अपने आपको समर्पित कर देता है, यह भक्ति किसके प्रति हो, यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है।
भक्ति-शक्ति और समर्पण ही इस साधना का मूल है
सालिग्राम साधना
जो हर शुभ कार्यों में आवश्यक ही है
जिससे हर कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होता है
जो अत्यन्त सरल एवं सात्विक साधना है
• नारायण मंत्र साधना विज्ञान
• 36 • narayanmantrasadhanavigyan.org •
सितम्बर-2020 •

भक्ति का तात्पर्य है, पूर्ण रूप से समर्पित कर उसी विचार में ध्यान लगाना, भक्ति में साधक अपने आराध्य के गुण-अवगुण तथा अन्य किसी बात पर विचार नहीं करता, वह तो अपने मन-मस्तिष्क में जिस रूप को स्थिर कर लेता है, उसी के अनुसार हर समय पूजा-अर्चना, जप, ध्यान, प्रयोग करता रहता है, मन को शान्ति मिलती है, उसे एक आधार मिलता है, कष्टों में एक मार्ग दिखाई देता है, लेकिन क्या केवल भक्ति जड़ता नहीं है।

शक्ति तत्व व्यक्ति को चैतन्य करता है, उसे आगे बढ़ने की, कुछ ऐसा प्रयास करने की प्रेरणा देता है, जिससे उसके प्रयत्नों में उसे अनुकूलता मिलती है, शक्ति हर समय साधक को जाग्रत करती है और यही जागरण उसकी क्रियाशीलता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है, उसे कोई भी कार्य कष्टप्रद मालूम नहीं होता, शत्रु बाधा हो चाहे आर्थिक संकट हो, वह आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहता है, लेकिन केवल शक्ति हर समय व्यक्ति को एक अव्यक्त क्रिया में जगाये रखती है, संतुष्टि जिसे आत्मसुख भी कहा जाता है, वह नहीं मिल पाती।

जहाँ भक्ति तथा शक्ति दोनों का संयोग है वही आधार है आत्मसुख का और क्रियाशीलता का, इन दोनों का संयोग सुन्दर जीवन के निर्माण के लिए आवश्यक है, इसीलिए साधनाओं में जहाँ शिव की साधना होती है वहीं शक्ति की साधना भी आवश्यक है, क्योंकि शिव और शक्ति का मिलन ही पूर्णता की साधना है, जहाँ यज्ञ पुरुष है वहीं अग्नि भी है, जहाँ विष्णु हैं वहीं लक्ष्मी भी है और यही स्वरूप साधना के लिए भी आवश्यक है।

सालिग्राम विष्णु स्वरूप

सालिग्राम श्री विष्णु का साक्षात् मूर्तिमान स्वरूप है, और इनका पूजा विधान अत्यन्त सरल है जिस घर में भी पूजा की सामान्य प्रक्रिया भी सम्पन्न होती है, वहां सालिग्राम अवश्य स्थापित किये जाते हैं, मंगल कार्यों में चाहे वह गृह प्रवेश हो, विवाह हो अथवा अन्य कोई शुभ कार्य, सालिग्राम पूजा तो आवश्यक ही मानी गई है।

'शारदा तिलक' ग्रंथ में लिखा है कि यदि

कोई साधक प्रतिदिन सालिग्राम पूजन कर चरणोदक अर्थात् इस पर चढ़ाया गया जल ग्रहण करता है, तो उसे किसी तीर्थयात्रा की आवश्यकता नहीं है।

यदि किसी रोगी को 21 दिन सालिग्राम पूजन कर जल पिलाया जाय तो उसका रोग पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है।

यदि सालिग्राम का सात दिन पूजन कर नियमित जप किया जाय तो अकाल मृत्यु का दोष दूर हो जाता है।

सालिग्राम पूजन में एक विशेष विधान लक्ष्मी पूजा का भी है, सामान्य रूप से सालिग्राम मूर्ति विग्रह को तुलसी पत्र पर स्थापित करते हैं, यह तुलसी पत्र लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है, इसके बिना सालिग्राम पूजा अधूरी ही है, क्योंकि लक्ष्मी के बिना विष्णु का स्वरूप भी आधा ही माना गया है।

शास्त्रोक्त पूजा में 'सालिग्राम' के साथ ही 'श्रीचक्र' स्थापित किया जाता है और उसकी पूजा सम्पन्न की जाती है तथा प्रतिदिन यदि पांच मंत्र का जप कर साधक किसी भी कार्य के लिए रवाना हो तो उसे उस कार्य में निश्चित पूर्णता मिलती है।

विशेष नियम

1. सालिग्राम पूजा में चन्दन के साथ तुलसी पत्र रखना अत्यन्त आवश्यक है, इसके बिना पूजा असफल ही होती है।
2. सालिग्राम नुकीले, बेडौल अर्थात् विकृत मुंह वाला नहीं होना चाहिए।
3. ललाई युक्त भूरे रंग का सालिग्राम पूजा में पूर्ण रूप से वर्जित है।
4. सालिग्राम प्राणश्चेतना मन्त्रों से अभिमन्त्रित हो।

साधना का सम्पूर्ण विधान

इस महत्वपूर्ण साधना के लिए लक्ष्मी साधना भी अत्यन्त आवश्यक है, अतः लक्ष्मी स्वरूप श्री चक्र अर्थात् 'श्री यन्त्र' भी स्थापित कर दोनों का पूजन साथ-साथ करना चाहिए।

'अभिभाष्कर संहिता' के अनुसार सालिग्राम तथा श्री चक्र के दर्शन मात्र से ही सभी तीर्थों का फल प्राप्त होता है क्योंकि इन दोनों में ही सभी तीर्थ, देवता, पर्वत, समुद्र देवता तथा विष्णु की शक्तियों का वास है।

यह साधना पुरुषोत्तम मास में 27.09.20 से या किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है और विशेष बात यह है कि इस साधना का कोई अन्त नहीं है, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् प्रतिदिन दर्शन कर पांच बार भी मन्त्र जप करें तो पूर्ण पूजन का फल प्राप्त होता है।

बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें, अपने सामने एक ताम्रपात्र में पुष्प का आसन स्थापित कर शुद्ध जल सालिग्राम पर अर्पित करें, फिर पोंछ कर इसे दूसरे पात्र में पुष्प पर स्थापित कर दें, स्थापना के समय सालिग्राम का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र से आह्वान करें

ॐ अस्य श्री द्वादशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषितः गायत्रीश्छन्द, सालिग्रामः परमात्मा देवता, ॐ बीजं, नमः च शक्तिरस्ति। चतुर्विध सिद्धये, सर्व मनोरथ पूर्णाय च अस्य मन्त्रस्य विनियोगः करोम्यहम्।।

इस जल को अपने मस्तक, नेत्र, मुख, कान तथा हृदय पर लगाएं।

अब उसी पात्र में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'छोटा श्रीचक्र' भी स्थापित करें, श्रीचक्र के पूजन में उस पर कुंकुम, गुलाल अबीर, चावल इत्यादि अर्पित करें और एक घी का दीपक जलाएं, लक्ष्मी बीज मन्त्र द्वारा लक्ष्मी का आह्वान करें, सर्वप्रथम इस साधना में लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

'कमलगट्टा माला' से निम्न लक्ष्मी बीज मन्त्र की एक माला जप कर लक्ष्मी जी की आरती करें

लक्ष्मी बीज मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

अब एक दूसरे बड़े पात्र में जल लें, उसमें थोड़ा चंदन तथा सुगन्धित द्रव डाल दें और उस पात्र को एक हाथ में लें और दूसरे हाथ में घंटी लेकर उसे बजाते हुए सालिग्राम का अभिषेक प्रारम्भ करें।

अभिषेक का तात्पर्य है, जल को एक धारा के रूप में अर्पित करते हुए निम्नलिखित मंत्र जोर से बोलते रहें

मंत्र

ॐ नारायणाय नमः ॐ केशवाय नमः ॐ वासुदेवाय नमः।।

इस प्रकार 108 बार मंत्र जप सहित अभिषेक करने के पश्चात् जल पात्र को रख दें तथा विष्णु और लक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर इस जल में से स्वयं आचमन स्वरूप जल ग्रहण करें।

पूजन का यह जल अत्यन्त ही पवित्र होता है तथा इसके पान से शरीर तथा मन की व्याधि शान्त हो जाती है, यदि किसी रोगी को प्रतिदिन पूजन कर जल का पान कराया जाय तो पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

विष्णु तथा लक्ष्मी की यह साधना ऐसी सर्वोच्च साधना है, कि हर साधक को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए तथा प्रतिदिन अपने पूजा क्रम में पांच बार मंत्र का जप कर थोड़ा जल-अभिषेक अवश्य ही करना चाहिए।

साधना सामग्री (सालिग्राम व कमलगट्टामाला)-450/-

विवेक से निर्णय करें

**पुराणमित्येव न साधुसर्वं न चापि सर्वं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्याऽन्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्यनेयबुद्धिः।।**

कालिदास

कोई वस्तु प्राचीन होने से ही श्रेष्ठ नहीं होती और न कोई वस्तु नवीन (आधुनिक) होने से ही श्रेष्ठ होती है। विवेकयुक्त व्यक्ति ज्ञान से परीक्षा करके ही दोनों में से श्रेष्ठ को स्वीकार करते हैं जबकि मूढ़ व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के विश्वास के अनुसार चलता है।

अर्थात् कुछ लोग पुरानी बातों को रूढ़िवादी, दकियानूसी और पुरानी कह कर त्याज्य समझते हैं जबकि वे अच्छी और हितकारी हो सकती हैं और कुछ लोग नवीन तथा आधुनिक बातों को इसलिए ग्राह्य समझते हैं कि वे आधुनिक और प्रगतिशील होती हैं। ऐसा करना उचित नहीं बल्कि नई या पुरानी बातों को हित-अहित, शुभ-अशुभ और पथ्य-अपथ्य की दृष्टि से विवेकपूर्वक परीक्षा करके ही त्याज्य या ग्राह्य समझना चाहिए सिर्फ पूर्वाग्रह और हठवादिता के आधार पर निर्णय करना हानिकारक होता है।

पुरुषोत्तम मास 18.09.20 से 16.10.20
अब
मनोकामनाएं
अवश्य पूर्ण हो सकेंगी....
कुछ
सरल सर्वोत्तम
साधनाओं से
व्यक्ति का जीवन इच्छाओं एवं मनोकामनाओं से परिपूर्ण रहता है और प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाएं, लेकिन जीवन में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं, उसे हर पल संघर्ष करना पड़ता है। कर्त्तव्य के साथ-साथ मन्त्र साधना ऐसा माध्यम है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है।
कुछ विशेष साधनाएं आगे के पन्नों में स्पष्ट की जा रही हैं, जो कि निश्चय ही पत्रिका के प्रत्येक पाठक के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।
नारायण मंत्र साधना विज्ञान
39 narayanmantrasadhanavigyan.org
सितम्बर-2020
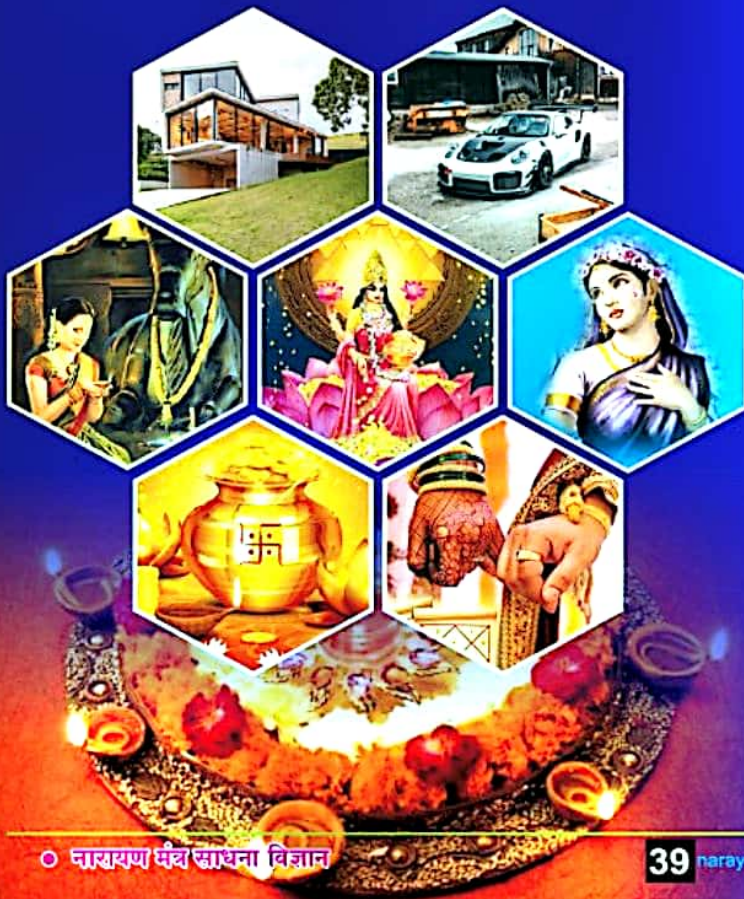
जहां जीवन संघर्षशील है, वहीं मनुष्य भी अपनी इच्छाएं एवं मनोकामनाएं बढ़ाता रहता है और सही मायने में देखा जाय, तो यही उसका कर्त्तव्य भी है, एक स्थान पर स्थिर होकर संतुष्ट हो जाना योग्य पुरुष का लक्षण नहीं है, बाधाओं को पूरा कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना तथा एक लक्ष्य प्राप्त हो जाने पर दूसरे लक्ष्य की ओर अपनी शक्ति एवं श्रम को लगा देना ही सही कर्त्तव्य है।

अपनी शक्ति एवं अपनी कार्यक्षमता के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित कर इच्छाओं की पूर्ति सम्भव है, लेकिन कई बार निरन्तर विपरीत बाधाओं के कारण कुछ सामान्य इच्छाएँ भी पूर्ण नहीं हो पाती हैं और व्यक्ति का जीवन निराशा से भर जाता है।

जीवन में उन्नति के लिए निराशा का कोई स्थान नहीं है, यदि एक मार्ग बन्द हो जाय तो दूसरे मार्ग की ओर प्रस्थान करें, अपने कर्त्तव्य के साथ-साथ कुछ ऐसी साधना शक्तियों का सहयोग लें, जो कि आपके कार्यपूर्ति में सिद्धि-कारक हो, मन्त्र तथा तन्त्र आपको अपने मूल मार्ग से हटाते नहीं हैं, अपितु आपको ऐसी प्रेरणा देते हैं और ऐसी शक्ति देते हैं, कि आपकी बाधाएं अपने आप ही दूर होने लगती हैं।

तन्त्र साधनाओं के सम्बन्ध में ऐसी धारणा व्याप्त है, कि साधना शुद्ध रूप से न हो सकी, तो उनका प्रभाव कहीं विपरीत न पड़ जाय, लाभ के स्थान पर हानि न हो जाए, कुछ विशेष साधनाओं में इस प्रकार का विचार निश्चय ही आवश्यक है, आगे के पृष्ठों में कुछ ऐसी सरल एवं श्रेष्ठ साधनाएँ दी जा रही हैं, जिन्हें सामान्य साधक अथवा साधिका सम्पन्न कर सकते हैं और इन साधनाओं के सदैव उचित फल प्राप्त हुए हैं, बाधाओं के निराकरण से जीवन में उमंग एवं उत्साह आता है, अतः जो साधक मन्त्र साधना में थोड़ी भी रुचि रखते हैं, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए, सामान्य जीवन तो सभी जीते हैं, कुछ ऐसा जीवन जिया जाय, जिसमें जीवन के प्रत्येक पल का आनन्द हो।

1. व्यापार उन्नति साधना

जो व्यक्ति व्यापार में लगा रहता है, उसे हर पल चिन्ता अवश्य बनी रहती है, कभी राजकीय बाधा, तो कभी कम बिक्री, तो कभी शत्रु द्वारा विरुद्ध प्रयोग, जिनके कारण या तो व्यापार में उन्नति नहीं हो पाती या घाटा पड़ने लगता है।

इस साधना में साधक ताम्र पत्र अंकित 'लक्ष्मी यंत्र' अपने घर में अथवा दुकान में स्थापित कर दें तथा 'स्फटिक माला' से नीचे दिये गये विशेष मन्त्र का जप करें, प्रतिदिन तीन माला इस मन्त्र का जप अवश्य करें, यह जप कार्य अपने कार्य स्थल पर जाने से पहले सम्पन्न करना चाहिए, मन्त्र जप पूर्ण कर साधक इस माला को अपने गले में धारण कर ले, 'लक्ष्मी यन्त्र' स्थायी रूप से उसी स्थान पर रहे, रात को सोते समय यह माला उतार दें तथा दूसरे दिन पुनः धारण कर लें, वैसे तो यह प्रयोग चालीस दिन का है, परन्तु साधक अपनी इच्छा से इसे आगे भी निरन्तर कर सकता है, जो उसके लिए और अधिक फलकारक ही रहता हैं

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे निवासय निवासय व्यापारे धन पूरय पूरय चिन्ताम् दूरय दूरय नमः।।

वास्तव में यह मन्त्र अत्यन्त सफलता कारक है और इससे यदि किसी के द्वारा आपके व्यापार पर तन्त्र प्रभाव किया हुआ है, तो वह भी दूर होता है।

साधना सामग्री- 450/-

2. मनोकामना-सिद्धि साधना

जहां तक मनोकामनाएं पूर्ण होने का प्रश्न है, साधक को अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं स्थिति के अनुसार ही मनोकामनाएं रखनी चाहिए, इस साधना में मन्त्र जप का विधान कुछ विशेष प्रकार का है तथा यह साधना यदि बुधवार को प्रारम्भ की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, साधना दिवस के दिन साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने **'देवी का चित्र', 'शक्ति चक्र'** स्थापित करें, यदि साधक अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु **'मनोकामना पूर्ति तावीज'** स्थापित करें तो उसके लिए और भी अधिक उपयुक्त है, इस साधना में लाल वस्त्र तथा लाल आसन और लाल पुष्पों का ही महत्व है, सर्वप्रथम देवी के सम्मुख लाल पुष्प समर्पित कर पश्चिम की तरफ मुंह कर नित्य प्रति निम्न मन्त्र की दस मालाओं का जप करें।

मन्त्र - ।। ॐ ह्रीं श्रीं मानस सिद्धिकरी ह्रीं नमः।।

जब दस माला मन्त्र जप हो जाय तो एक लाल पुष्प देवी को अर्पित कर दें, ताबीज को कुंकुम लगाएं और शान्त हृदय से अपनी मनोकामना व्यक्त करें, इस साधना में केवल मन्त्र सिद्ध 'मूंगा माला' का ही प्रयोग करें।

यह साधना सात दिवस की है, सात दिवस के पश्चात अगले बुधवार को साधक ताबीज धारण कर लें, यदि उसकी मनोकामना समय पर पूर्ण हो जाती है, तो दूसरी मनोकामना के लिए थोड़े समय उपरान्त यही साधना पुनः सम्पन्न करें।

साधना सामग्री- 450/-

3. मुकदमे में विजय हेतु साधना

यह साधना मंगलवार को प्रारम्भ करनी चाहिए तथा किसी विशेष शत्रु पर विजय प्राप्त करने हेतु ही इस साधना का प्रयोग करें, इस साधना में लाल वस्त्र, लाल आसन आवश्यक है।

किसी भी मंगलवार को अपने सामने सफेद कागज पर लाल कलम से अपने शत्रु का नाम लिख दें तथा उसे विशेष मन्त्र सिद्ध **'विजय ताबीज'** पर लपेट दें, एक तांबे के पात्र में थोड़ा तेल, सरसों, तिल तथा ये ताबीज रख दें और फिर नीचे दिये गये मंत्र का जप करें, इस मंत्र जप में विशेष बात यह है कि उसका जप केवल **'मूंगा माला'** से ही किया जा सकता है।

मन्त्र - ।। ॐ क्लीं मम शत्रुन् (अमुकस्य) पराजय क्लीं फट्।।

इस मन्त्र में अमुक के स्थान पर अपने शत्रु का नाम लें और यदि शत्रुओं का समूह हो तो जो प्रमुख शत्रु हो उसका नाम लिखें। वैसे तो यह साधना 40 दिन की है लेकिन मंत्र जप अधिक संख्या में पूर्ण विश्वास के साथ करने से जल्दी ही सफलता प्राप्त होती है, जब साधना पूर्ण हो जाए तब सामने पात्र में रखा हुआ ताबीज, कागज, तिल, सरसों इत्यादि सामग्री कहीं जंगल में अथवा एकान्त स्थान में जाकर गाड़ दें, इससे निश्चय ही शत्रु की शक्ति क्षीण होती है और आपका पराक्रम बढ़ता है।

किसी गलत कार्य के लिए इस मन्त्र का दुरुपयोग न करें इस बात का ध्यान रखे।

साधना सामग्री- 450/-

ऊपर जो साधनाएं दी गई हैं, वे सरल एवं कई साधकों द्वारा उपयोग में लाई गई है, आप भी पूर्ण विधि-विधान सहित इन साधनाओं को प्रयोग में लाएं तथा अपने जीवन को उन्नति की दिशा की ओर अग्रसर करें। हमेशा किसी का अहित न चाहते हुए ही मंत्र साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए।

आज का हमारा जीवन अत्यन्त संघर्षशील और बाधाओं से युक्त है, इस जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति को पग-पग पर संघर्ष करना होता है, इतना होने के बावजूद भी व्यक्ति अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता। जब मनुष्य श्रम और शक्ति के माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता है, तो उसे चाहिये कि वह कुछ ऐसी शक्तियों का सहयोग ले जो कि अपने आप में विशिष्ट शक्ति सम्पन्न और सिद्धिदायक हों। हमारे ऋषि-मुनियों ने शास्त्रों में साधना द्वारा समस्त इच्छाओं की पूर्ति एवं सफलता प्राप्ति का विधान दिया है।

कोई भी साधना क्लिष्ट या असम्भव नहीं होती है, कोई भी साधक साधना कर सकता है। इसमें गृहस्थ भी हो सकता है और संन्यासी भी, इसमें पुरुष भी हो सकता है और स्त्री भी। ये सभी अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु कर सकते हैं और जिसे सम्पन्न कर अपने जीवन में एक नवीन उत्साह, उमंग और ओज लाया जा सकता है; जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं तथा जीवन की न्यूनताओं को समाप्त कर समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ और सम्पन्न हो सकते हैं।

साधना में सफलता हेतु 21 स्वर्णिम सूत्र

मंत्र जप करते समय ध्यान केवल साधना से सम्बन्धित उपकरण की ओर होना चाहिये। ध्यान इधर-उधर भटकना नहीं चाहिये।

साधना में सफलता प्राप्ति हेतु

निम्नांकित सामान्य सूत्रों का पालन करने पर निश्चित परिणाम की प्राप्ति हो सकेगी

- सबसे पहले तो अपने अन्दर से दीनता के विचारों को तिलाञ्जलि देनी होगी और अपने भीतर प्रसन्नता और प्रफुल्लता के भाव को भरना होगा, क्योंकि यही जीवन-शक्ति होती है। जिससे आपको साहस, बल सब कुछ प्राप्त होता है। जो मन को प्रोत्साहित कर आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। आत्मविश्वास बनाये रखती है और संकल्पबद्ध होने की दृढ़ता प्रदान करती है।
- साधना से सम्बन्धित उपकरण और सामग्री पूर्णतया शुद्ध, मंत्र चैतन्य और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

- साधना आरम्भ करने से पूर्व साधक को गुरु दीक्षा या साधना से सम्बन्धित दीक्षा लेना आवश्यक है, जिससे कि साधना सफलता में गुरु मार्गदर्शक बन सके।
- साधना आरम्भ करने से पूर्व 'गुरु मंत्र' का जप अवश्य करना चाहिये तथा अपने इष्ट का ध्यान करना चाहिए। इष्ट के प्रति, श्रद्धा, विश्वास और समर्पण आवश्यक है।
- सभी साधनाओं के सूत्राधार तो गुरु ही होते हैं, ब्रह्म तक किसी जीव को पहुँचाने का माध्यम गुरु ही हैं, क्योंकि गुरु ही वह प्रत्यक्ष देवता हैं, जो दोनों तत्त्वों ईश्वर और जीव से परिचित हैं।
- जब तक साधक का अन्त:करण शुद्ध नहीं होता तब तब साधना में सफलता संदिग्ध रहती है। मन में गन्दे विचारों का समावेश नहीं होना चाहिए। जब तक मन में अंश मात्र भी दोष रहेगा, तब तक साधना से सम्बन्धित पूर्ण लाभ शीघ्र प्राप्त नहीं हो सकेगा।
- साधना से सम्बन्धित वातावरण अनुकूल न मिल पाने के कारण साधना में सफलता नहीं मिल पाती। आपके आसपास का वातावरण शांतमय होना आवश्यक है। अपने आपको तथा अपनी इन्द्रियों को संयमित करके वातावरण को अपने अनुकूल ढालना चाहिए।
- साधना से सम्बन्धित मंत्र का उच्चारण शुद्ध, सरल, सौम्य और मधुर भाषा में करना चाहिये। हड़बड़ाहट या कार्य निपटाने के हिसाब से नहीं करना चाहिये। मंत्र के प्रति श्रद्धा और विश्वास की भावना रहना आवश्यक है।

- मंत्र जप करते समय ध्यान केवल साधना से सम्बन्धित उपकरण की ओर होना चाहिये। ध्यान इधर-उधर भटकना नहीं चाहिये। मंत्र को एकाग्रचित्त एवं पूर्ण भावना के साथ जपना चाहिये।
- साधना काल में किसी तरह का अनुभव होने पर अथवा दृश्य दिखायी देने पर भयभीत नहीं होना चाहिये, निश्चिन्त रहें, इससे आपका कोई अहित नहीं होगा, क्योंकि आपने साधना आरम्भ करने से पूर्व उससे सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त कर ली है।
- साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन अवश्य करना चाहिये। आपके सामने चैतन्य गुरु चित्र अवश्य स्थापित हो। पूजन से सम्बन्धित कुंकुम, अबीर, गुलाल, सुपारी, केसर, यज्ञोपवीत, नारियल आदि सम्पूर्ण सामग्री अवश्य हो।
- साधना काल में दीपक, अगरबत्ती, धूप इत्यादि जलते रहना आवश्यक है।
- साधना में धुले हुए सूती वस्त्र पहने हुए हों, अर्थात् धोती धारण की हो और गुरु चादर ओढ़ी हुई हो। आसन ऊनी अथवा सूती हो सकता है।
- साधक पूजा स्थान में आसन बिछाकर पालथी मारकर बैठे, दीवार का सहारा नहीं लें।
- साधना निर्धारित दिवस और समय पर आरम्भ करनी चाहिये। जितना मंत्र जप निश्चित होता है उतना अवश्य करना चाहिये।

साधना काल में मंत्र जप तथा पूजन करते हुए किसी तरह का अन्न या जल ग्रहण नहीं करना चाहिये।

- मंत्र जप आरम्भ करने से पूर्व स्नान करके बैठना चाहिये। साधना काल में शौच इत्यादि के लिये बीच में उठना नहीं चाहिये। अत्यधिक आवश्यक होने पर यदि आप उठें तो पुनः स्नान कर पवित्रीकरण करने के बाद ही साधना पुनः प्रारम्भ करें।
- साधना आरम्भ करने से पूर्व गुरु चित्र के सामने यह प्रार्थना करें हे देव! आप समस्त विघ्न रूपी वनों को दहन करने में प्रबल हैं, आप समस्त विद्याओं, वैभव के अधीश्वर हैं, आप स्थान ग्रहण करें।
- साधना काल में जम्हाई लेना, शरीर को मोड़ना, हाथ-पैरों को झटका देना, झपकी लेना, परिवार के किसी सदस्य से बातचीत करना, निर्देश देना अथवा मंत्र उच्चारण जोर-जोर से करना वर्जित है।
- जितने दिन की साधना हो उस समय तक शुद्ध सात्विक भोजन करना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।
- साधना पूरी होने तक असत्य भाषण नहीं करना चाहिये, मंत्र जप में कभी कोई गलती भी हो सकती है, तो उससे किसी भी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं भोगना पड़ता।
- साधना करते समय धैर्य की अत्यन्त आवश्यकता होती है। साधना एक सतत करने वाली प्रक्रिया है। साधना पूर्ण होने के पश्चात सम्पूर्ण सामग्री का विसर्जन साधना में निर्देशित विधान के अनुसार कर देना चाहिये जिससे कि वह सामग्री सम्बन्धित देवता तक पहुंच जाये और हमें साधना में सफलता प्राप्त हो सके, अर्थात् सामग्री का विसर्जन करने पर ही साधना पूर्ण मानी जाती है।

उपरोक्त नियमों का पालन करने पर साधक को साधना में निश्चित परिणाम की प्राप्ति होती है तथा आप अपनी मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं और वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो आप चाहते हैं और अपने जीवन को वैभवशाली और श्रेष्ठ बना सकते हैं।

गुरु हि परमं गतिः

महर्षि याज्ञवल्क्य श्रेष्ठ तत्वदर्शक हैं, परन्तु उनका मन गृहस्थ से ऊब गया है। वे गृहस्थ में रहना नहीं चाहते, उनका चिन्तन ऊर्ध्वमुखी होता जा रहा है।

ऋषि की दो पत्नियाँ थीं मैत्रेयी और कात्यायनी।

ऋषि ने मैत्रेयी से कहा ''मैं जीवन का शेष भाग परम ज्योति के दर्शन हेतु लगाना चाहता हूँ इसलिये मैं ऊर्ध्वमुखी होकर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखता हूँ। मैं आज ही तेरा कात्यायनी के साथ बंटवारा कर देना चाहता हूँ, मेरे इस आश्रम में जो भी धन-सम्पदा है, उसके दो भाग कर देता हूँ, एक भाग तेरा और दूसरा कात्यायनी का।'

क्या इस धन से मैं अमर हो सकती हूँ? मैत्रेयी ने पूछा।

इस आश्रम की सम्पदा तो क्या, यदि पृथ्वी की सम्पूर्ण सम्पदा भी प्राप्त हो जाय तब भी तुम उससे अमर नहीं हो सकती, इससे परम पद या ब्रह्म ज्योति के दर्शन प्राप्त करना सम्भव नहीं है याज्ञवल्क्य का स्पष्ट उत्तर था।

तब उस सम्पदा को लेकर मैं क्या करूंगी? यह धन-दौलत, पुत्र, बान्धव, आश्रम आदि मेरे क्या काम के, जिससे कि मेरा कल्याण न हो सके, यह सारी सम्पदा मेरे जीवन में क्या काम की, यदि मैं स्वयं का कल्याण न कर सकूं और जीवन को ऊर्ध्वमुखी न बना सकूं, यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मुझे ऊर्ध्वमुखी होने की प्रक्रिया समझाइये, उस परम ज्योति के दर्शन करने की विधि बताइये, जिससे कि मैं अमर हो सकूं, वही मेरे हिस्से का सच्चा भाग होगा मैत्रेयी ने निश्चयपूर्वक याज्ञवल्क्य से निवेदन किया।

पर उस पथ का ज्ञान तो गुरु ही दे सकता है, मैं तेरा पति हूँ और जब तक तुझ में शिष्यत्व भाव जागृत नहीं होगा तब तक मैं वह ज्ञान नहीं दे सकूंगा, ज्ञान के लिये शिष्यत्व प्राप्त करना जरूरी है, इसके लिये आवश्यक है कि तुम पूर्ण समर्पण भाव से शिष्या बनो। अभी तक तो तुम मेरी पत्नी थी, शिष्या नहीं, पत्नी को भाग दिया जा सकता है, अमरत्व ज्ञान तो शिष्या बनने पर ही सम्भव है याज्ञवल्क्य ने स्पष्ट व्याख्या की।

तब मैत्रेयी ने शिष्यत्व स्वीकार किया और याज्ञवल्क्य को पति के स्थान पर गुरु के रूप में देखा, और उनसे ब्रह्म विद्या का उपदेश प्राप्त किया। याज्ञवल्क्य ने आत्मा का गूढ़ रहस्य खोलकर उसके सामने रख दिया।

कई उदाहरण देकर गुरु याज्ञवल्क्य ने शिष्या मैत्रेयी को आत्म तत्व का दर्शन कराया और मैत्रेयी ने उस गूढ़तम ब्रह्मज्ञान का रहस्य प्राप्त कर लिया।

और इतिहास साक्षी है कि कात्यायनी हमेशा-हमेशा के लिये धन-सम्पदा लेकर समाप्त हो गई, जबकि मैत्रेयी कुछ भी भौतिक सम्पदा न लेकर युगों-युगों तक के लिये अमर हो गई।

वस्तुतः जब शिष्य पूर्ण श्रद्धा, विश्वास के साथ समर्पण करता है तब मिलन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, समर्पण होता है बिना अहंकार के, बिना किसी लोभ के और पवित्र हृदय के साथ तब शिष्य पूर्णता के साथ गुरु में मिल जाता है तभी वह अमरत्व प्राप्त करने में सफल हो पाता है और यही जीवन की पूर्णता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष प्रथम सप्ताह में उचित परिणाम मिलेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। कोई छोटी सी बात वातावरण में कलह उत्पन्न करेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। काम का बोझ रहेगा। भाग्योदय के योग हैं। दो नम्बरों के सामान के व्यापार से रुपयों की प्राप्ति होगी परन्तु गलत कार्यों से बचें। माह के मध्य में किसी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी मानसिक रुप से परेशान रहेंगे। भाइयों से पुन: अच्छे सम्बन्ध होंगे। विद्यार्थी की पढ़ाई में मन लगेगा। तीसरा सप्ताह पक्ष में नहीं है, कार्यों में बाधाएं आयेंगी। आखिरी सप्ताह में रुके पैसे वसूल होंगे, आर्थिक स्थिति ठीक होगी। कठिनाइयों के बाद भी मंजिल प्राप्त होगी। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप इस माह सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 8, 9, 10, 17, 18, 19, 26, 27

वृष प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। उच्च अधिकारियों से सहयोग मिलेगा। गरीबों की सहायता करेंगे, तीर्थ यात्रा हो सकती है। काम का बोझ रहेगा। मानसिक रुप से चिंताग्रस्त रहेंगे। कोई छोटी बात कलह का वातावरण उत्पन्न करेगी। सम्बन्धों में खटपट रहेगी। दूसरे सप्ताह में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। अचानक ही किस्मत से सफलता मिलेगी। अच्छी कमाई होगी। यात्रा भी हो सकती है। माह के मध्य में स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। आर्थिक स्थिति भी गड़बड़ हो सकती है। अपनी गलतियों को दोहराने से टेंशन में आयेंगे, विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम है। परिवार में सभी के साथ प्रेम का वातावरण बनेगा। किसी भी कार्य को सोच-विचार कर करें। चलते-फिरते किसी से वाद-विवाद हो सकता है। गलत कार्यों से बचें, प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। आप गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 1, 2, 3, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30

मिथुन माह का प्रारम्भ शुभ है। मानसिक परेशानी दूर होगी, जीवनसाथी के साथ मधुरता का व्यवहार रहेगा। सोच-समझकर उठाये गये कदम लाभ देंगे। ज्यादा लालच में न पड़ें। घर में अन्य सदस्यों से अनबन हो सकती है। किसी भी कार्य में लापरवाही न करें, नशीले पदार्थों के सेवन से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यात्रा के दौरान ऑर्डर मिल सकते हैं। प्यार में सफलता मिलेगी। लोगों से मुलाकातों का लाभ होगा। व्यय की अधिकता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। परेशानियों के समय मित्रों की सहायता मिलेगी। बेरोजगार लोगों को परेशानियां रहेंगी। भाग्य साथ नहीं देगा, अटके हुए कार्य मित्रों की सहायता से पूरे होंगे। ऑफिस में वातावरण खराब हो सकता है। आप इस माह विघ्नहर्ता गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 3, 4, 5, 13, 14, 15, 21, 22, 23

कर्क सप्ताह का प्रारम्भ कष्ट भरा रहेगा। मान-प्रतिष्ठा पर भी आंच आ सकती है। कोर्ट कचहरी के मसले में उलझ सकते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ किसी महत्वपूर्ण योजना पर चर्चा होगी। इस समय वाहन या सम्पत्ति की खरीद लाभकारी होगी। प्यार में गलतफहमी दूर होगी। घर में भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी। सोचे गये कार्य पूरे होंगे। वाहन चालन में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। किसी व्यक्ति से मुलाकात नई योजना में सहायक होगी। बिना वजह झगड़े की स्थिति से बचें। पति-पत्नी में प्रेमभाव रहेगा। माह के अन्तिम सप्ताह में सोचे गये कार्य पूरे करने में सक्षम रहेंगे। इस समय संघर्ष तो रहेगा परन्तु कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 15, 16, 17, 23, 24, 25

सिंह माह का प्रारम्भ शुभ है। किसी व्यक्ति से मुलाकात व्यापार को उच्च स्तर पर उठाने में सहयोग प्रदान करेगी। आय के स्रोत बढ़ेंगे। महत्वपूर्ण पेपर पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। जीवनसाथी से गलतफहमियाँ दूर होकर प्यार में बदल जायेंगी। कोर्ट कचहरी के निर्णय अनुकूल होंगे। साझेदारी के कार्य में लाभ होगा। भाग्योदय का समय है, धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। अचानक कोई परेशानी चिंतित करेगी। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। लापरवाही से जीवन कष्टमय हो सकता है। विरोधियों से आप डटकर मुकाबला करेंगे। भलाई करने के चक्कर में स्वयं परेशानी में पड़ सकते हैं। नया वाहन की खरीदारी हो सकती है। आकस्मिक धन प्राप्ति सम्भव है। अचानक कोई शुभ सूचना मिल सकती है। अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 3, 9, 10, 17, 18, 19, 26, 27, 28

कन्या माह का आरम्भ संतोषप्रद है। प्रयास से कार्यों में सफलता मिलेगी। यह समय आपके लिए अच्छा है। लेकिन शत्रु पक्ष बदनाम करने की कोशिश करेगा। पीठ पीछे साजिश होगी, सावधान रहें। लापरवाही न करें अन्यथा नुकसान हो सकता है। शेयर बाजार से

लाभ के अवसर हैं। लेकिन ज्यादा लालच न करें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वांछित सफलता प्रसन्नता देगी। रुके कार्य पूरे होंगे, किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। वाद-विवाद से बचें, तीसरे सप्ताह में रुकावटें आयेंगी, उधारी के पैसे वसूल करने में दिक्कत होगी। अंत में कोई अशुभ घटना हो सकती है। नये भवन का सौदा हो सकता है। पैतृक सम्पत्ति मिलने की संभावना है। व्यवहार में नम्रता होगी, अपने साथ कार्य करने वाले संतुष्ट रहेंगे। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 1, 2, 3, 11, 12, 19, 20, 12, 28, 29

तुला माह का प्रथम सप्ताह सुखदायी रहेगा। अपनी जिम्मेदारियां अच्छी तरह निभायेंगे। कैरियर के लिए अच्छा समय है। आर्थिक उन्नति होगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, प्यार में सफलता मिलेगी। अहंकार से बचें। कोई अशुभ घटना घट सकती है। यात्रा हो सकती है, जिससे लाभ होगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। आप जिस कार्य की शुरूआत करेंगे पूरा भी करेंगे। तीसरा सप्ताह अनुकूल है परन्तु स्वास्थ्य के लिहाज से सावधान रहने की जरूरत है। विद्यार्थी वर्ग के लिए पढ़ाई का अच्छा समय है। रुके हुये रुपये वसूल होंगे। आप अपने लक्ष्य पर अडिग रहेंगे। रुपया उधार न देवें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी, मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। जिम्मेदारियों का अहसास रहेगा। आप इस माह भगवान विष्णु स्थापन दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 3, 4, 5, 13, 14, 15, 21, 22, 23

वृश्चिक माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है, सचेत रहें। कानून के दायरे में कार्य करें। शत्रुओं से सावधान रहें। सरकारी कर्मचारियों के लिए समय अच्छा है। आपकी वाणी के मधुरता से सभी आपकी सहायता हेतु तत्पर रहेंगे। कोई छोटी सी बात पर कलह का माहौल हो सकता है, जिससे टेंशन होगा और परेशानी से जूंझना पड़ेगा। दाम्पत्य जीवन सूखी रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। प्रयास करने पर बेरोजगारों को नौकरी के अवसर उपलब्ध होंगे। विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। शुभ समाचार चित्त में प्रसन्नता देंगे। अचानक आर्थिक लाभ होगा। तीसरे सप्ताह में कुछ विपरीत स्थितियाँ होंगी, आलस्य न करें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। थोड़ा समय अनुकूल नहीं है, कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। कैरियर चुनने का समय है। कोई बड़ी बीमारी परेशान कर सकती है। आप महामृत्युंजय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 15, 16, 17, 23, 24, 15

धनु माह का प्रारम्भ खुशियों से होगा। नौकरी मिलने के अवसर हैं, कोशिश करें। मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है, दोस्तों की तरफ से भी सचेत रहें। धोखा हो सकता है। जमीन के लेन-देन में लाभ होगा। बाधाएँ स्वत: समाप्त होगी। लेकिन घरेलू समस्यायें परेशान करेंगी। कोई छुपा राज खुल जाने का भय रहेगा, कानुन के शक के दायरे में आ सकते हैं। नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति के आसार हैं। वाहन चालन में सावधानी रखें। दाम्पत्य जीवन में तनाव एवं अनबन रहेगी। अपने ही साथ छोड़ देंगे। आप शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। पति-पत्नी में गलतफहमियाँ दूर होंगी। जमीन के कार्य में लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों से अधिकारी वर्ग सन्तुष्ट रहेगा। आप इस माह भगवान विष्णु की साधना करें।

शुभ तिथियाँ 8, 9, 10, 17, 13, 19, 26, 27, 28

मकर माह का प्रारम्भ अच्छा है। परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी, प्रयास सफल होंगे, मनोकामना पूर्ण होगी। किसी अपने का स्वास्थ्य

सर्वार्थ सिद्धि योग	- सितम्बर - 6, 8, 9, 14, 15
रवियोग	- सितम्बर - 8, 20, 22, 25, 26
रविपुष्य योग	- सितम्बर-13 (शाम 4.34 से प्रात: 6.27 तक)

चिंतित करेगा। शत्रुओं से सावधान रहें, कोई धोखा दे सकता है। बिना वजह किसी से उलझें नहीं, किसी अंजान व्यक्ति से बहस करके मूड खराब होगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। आय के नये स्रोत खुलेंगे। कोई अपरिचित व्यक्ति आपके जीवन में बदलाव लायेगा। संतान का व्यापार में साथ मिलेगा। प्रॉपर्टी के कार्य में झगड़ा हो सकता है। उधारी वसूल होगी। आखिरी सप्ताह में कुछ प्रतिकूलता है अत: सोच-समझकर कार्य करें। व्यापार में बाधा आ सकती है, सहयोगी लापरवाही करेंगे जिससे नुकसान हो सकता है। अन्तिम तारीख में रुके हुये रुपयों की प्राप्ति हो सकती है। आप भगवान शिव की साधना करें या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 1, 2, 3, 11, 12, 13, 19, 20, 21, 28, 29

कुम्भ माह का प्रथम सप्ताह श्रेष्ठ है। व्यापार में उन्नति होगी, आय के स्रोत बढ़ेंगे, उत्साह बढ़ेगा। शत्रुओं को जवाब देने में सफल रहेंगे, मंजिल तक पहुंचेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें, काम के प्रति लापरवाही न बरतें। वाहन धीमी गति से चलायें। नशे आदि से दूर रहें। किसी आकस्मिक मार्ग से धन की प्राप्ति सम्भव है। नौकरीपेशा को तरक्की के अवसर हैं। तीसरे सप्ताह में व्यापार कार्यों में रुकावट आ सकती है। शत्रु वर्ग फिर से परेशान करेगा, अपनों का सहयोग नहीं मिलेगा, व्यापार में नुकसान हो सकता है। किसी उच्चाधिकारी से मुलाकात सफलता देगी। आप साहस के साथ बाधाओं से मुक्ति पायेंगे। आखिरी सप्ताह अनुकूल है। आर्थिक उन्नति होगी। गलत सोहबत से दूर रहें। कोई व्यक्ति आपको अच्छी सीख देगा। आप अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 3, 4, 5, 13, 14, 15, 21, 22, 23

मीन प्रथम सप्ताह का प्रारम्भ प्रतिकूल है। शत्रु हावी रहेंगे, इस समय बिना वजह किसी से उलझें नहीं। किसी और की गलती आप पर थोपी जा सकती है। विद्यार्थियों के लिए उत्तम परिणामदायक समय है। प्रगति का अवसर है, अविवाहितों के विवाह की बात हो सकती है। आप दृढ़निश्चयी हैं, परिवार का सहयोग उन्नति प्रदान करेगा। माह के मध्य के समय सतर्क रहने की जरूरतहै। नौकरीपेशा लोगों का पदोन्नति के साथ'साथ स्थानान्तरण भी होगा। अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में वृद्धि होगी कोई नया कार्य शुरू करने से पूर्व पूर्ण सावधानी बरतें। आखिरी सप्ताह सम्पत्ति एवं वाहन के क्रय-विक्रय के लिये शुभ है। आर्थिक स्रोत बढ़ेंगे, आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखें अन्यथा कर्जदार भी हो सकते हैं। इस समय दुश्मनों के व्यंग बाण भी चुपचाप सहन करने पड़ेंगे। आप इस माह हनुमान दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ 6, 7, 8, 15, 16, 17, 23, 24, 25

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.09.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
02.09.20	बुधवार	पूर्णिमा श्राद्ध
17.09.20	गुरुवार	सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या
18.09.20	शुक्रवार	पुरुषोत्तमा एकादशी (अधिक मास) प्रारम्भ
27.09.20	रविवार	पुरुषोत्तम एकादशी

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर 6,13,20,27)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (सितम्बर 7,14,21,28)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (सितम्बर 8,15,22,29)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (सितम्बर 9,16,23,30)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरुवार (सितम्बर 3,10,17,24)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (सितम्बर 4,11,18,25)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (सितम्बर 5,12,19,26)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

सितम्बर 2020

11. किसी गरीब स्त्री को भोजन करायें और वस्त्र दान करें।
12. आज 11 बार निम्न मंत्र का जप करके जाएं - 'ॐ भं भैरवाय फट्'
13. प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
14. आज गुरु पूजन के बाद भगवान शिव के ॐ नमः शिवाय मंत्र का 1 माला मंत्र जप अवश्य करें।
15. श्री हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
16. खीर का नैवेद्य किसी देवी मन्दिर में चढ़ाकर प्रसाद बांटें। कार्यों में सफलता की संभावना बढ़ती है।
17. आज किसी ब्राह्मण को भोजन करायें एवं दक्षिणा दें।
18. किसी देवी मन्दिर में तेल का एक दीपक जलायें।
19. आज शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण करें।
20. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन का एक पाठ करें।
22. इलायची को अपने दाहिने हाथ में लेकर ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः का ग्यारह बार जपकरके अपने पास रखें। शाम को किसी पेड़ के नीचे रख दें।
23. आज किसी असहाय को भोजन करायें।
24. आज ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 11 बार जप करके जाएं।
25. चुटकी भर नमक दरवाजे के पास रखकर कार्य हेतु जाएं।
26. पीली सरसों लेकर बगलामुखी मंत्र करते हुए, अपने चारों ओर फेंकें।
27. आज जून पत्रिका-20 में प्रकाशित सूर्य स्तोत्र का 1 पाठ करें।
28. ॐ ह्रीं हुं शिवाय फट् मंत्र का ग्यारह बार जप करते हुए शिवलिंग पर जल चढ़ायें।
29. किसी हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगायें।
30. किसी कागज पर कुंकुम से 'श्रीं' लिखकर अपने पास दिनभर रखें। शाम को किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

अक्टूबर 2020

1. 'सोऽहं' मंत्र का जप दस मिनट तक करके कार्य पर जाएं।
2. पांच काली मिर्च के दाने अपने सिर पर तीन बार घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंककर कार्य पर जाएं।
3. आज सरसों के तेल में कुछ सिक्के डालकर दान करें।
4. घी का दीपक लगाकर उसका कुंकुम, अक्षत से पूजन करके कार्य पर जाएं।
5. एक सुपारी किसी पात्र में रखकर सिन्दूर से पूजन करके जाएं।
6. हनुमान बाहु (न्यौछा. 90/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
7. आज माँ गौरी का पूजन करें, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।
8. शिवलिंग पर ॐ नमः शिवाय बोलते हुये अभिषेक करें।
9. 'क्लीं' बीज मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करके जाएं।
10. 'ॐ भं भैरवाय नमः' का 21 बार जप करके जाएं।

नवदुर्गा साधना

पूरे नौ दिन अद्भुत सिद्धिदायक हैं

पूरे वर्ष के लिए आश्चर्यजनक,

उन्नतिदायक, श्रेष्ठ एवं पूर्ण सफलता प्रदायक

अनन्त शक्ति सम्वलित जगज्जननी भगवती दुर्गा, जो अपने समस्त रूपों में वरदायिनी स्वरूप से आपूरित होकर समस्त विश्व के कल्याण के लिए नवरात्रि की शुभ बेला पर भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने के लिए अपने करूणामयी स्वरूप में स्थित रहती हैं... ऋषियों, मुनियों और योगियों के द्वारा सतत उपास्या और आराध्या मां दुर्गा साधकों के लिए सिद्धिदात्री होती ही है।

नवरात्रि तो रात्रि का पर्व है,

जैसा की इसके शब्द से ही स्पष्ट है।

रात्रि का अर्थ है-जीवतंता, चैतन्यता, उल्लासमयता और यह प्राप्त हो सकता है साधनात्मक बल से प्राप्त संचित शक्ति को अपने अन्दर समाहित करने पर।

शक्ति को जानना ही पर्याप्त नहीं होता, शक्ति को जीवन में परिचय कराना ही पर्याप्त नहीं होता, शक्ति का जीवन में उतारना और उतारने के साथ-साथ उसे किस प्रकार से नियंत्रित किया जाय, यह आवश्यक है।

नवरात्रि का अर्थ यह नहीं है, कि हम रात्रि को जागरण करें, भजन-कीर्तन आदि करके दिन काट दें, रात्रि का तात्पर्य है, जब प्रकृति निस्तब्ध हो, शांत हो, उन क्षणों का हम भली-भांति उपयोग करें, उन क्षणों को अपने जीवन में उतारें, और वह सब कुछ प्राप्त कर लें, जो सामान्यत: प्रयत्नपूर्वक भी सम्भव नहीं हो पा रहा हो।

शास्त्रों में कहा गया है, कि साधक इस शक्ति पर्व पर वह सब कुछ प्राप्त करले, जो उसके भाग्य में नहीं लिखा है, क्योंकि हम ऋषि पुत्र हैं, शक्ति पुत्र हैं, अगर ऐसा न होता, तो नवरात्रि रची ही नहीं जाती, दुर्गा के विग्रह की पूजा-अर्चना क्यों की जाती... यह प्रतीक है, हमें स्मरण दिखाने का, कि हम शस्त्र धारिणी दुर्गा के तेजस्वी पुत्र हैं और हमें इस नवरात्रि पर्व पर साधना रूपी शस्त्र को उठाकर अपने जीवन के दु:खों को जड़ से काट देना है... और हम समर्थ हैं, यदि नौ दिन तक विशिष्ट मुहूर्तों का लाभ उठाकर उन शस्त्रों के माध्यम से जीवन के अभावों से मुक्त हो सकें।

1. जीवन में सुख हो, पूर्णत: स्वस्थ हों।
2. धनागम के स्रोत खुल सकें-व्यापार में वृद्धि हो, नौकरी में उन्नति प्राप्त हो।
3. पुत्र-सुख की प्राप्ति हो।
4. भवन निर्माण एवं वाहन सुख की प्राप्ति हो सके।
5. शत्रु परास्त हों।
6. स्त्री-पुरुष दोनों ही अखण्ड भाग्यवान बन सकें।
7. भाग्योदय हो।
8. राज्य सम्मान, राजनीतिक श्रेष्ठता व सफलता प्राप्ति के अवसर प्राप्त हो सकें।
9. समस्त मनोवांछित कार्यों की पूर्ति हो।

उपरोक्त नौ बिन्दु ही सही अर्थों में नवरात्रि की भावना है। नवरात्रि का तो एक-एक दिन प्रयोग करने वाला है, जब साधनाओं में सफलता मिलने लगती है... और वह सब कुछ भी पूरा होने लगता है, जैसा आप चाहते हैं।

केवल मात्र नौ दिनों तक एक ही मंत्र-जप को जपने से यह सब कुछ प्राप्त नहीं हो जाता, उसके लिए तो दुर्गा के नौ रूपों-1. शैलपुत्री, 2. ब्रह्मचारिणी, 3. चन्द्रघंटा, 4. कूष्माण्डा, 5. स्कन्द माता, 6. कात्यायनी, 7. कालरात्री, 8. महागौरी, 9. सिद्धिदात्री की साधना उपासना करनी ही होगी, तभी वह सब कुछ प्राप्त हो सकेगा, जो जीवन में आवश्यक है, महत्वपूर्ण है।

आज जो नवरात्रि मनायी जाती है, उसमें 'जय अम्बे, जय अम्बे करते-करते' हम नौ दिन यूं ही काट देते हैं, और उसका कोई अर्थ ही नहीं रह जाता.... अगर इसको सार्थक बनाना है, तो साधना के पक्ष को समझना होगा... तभी जीवन में जीवंतता व जाग्रति आ सकेगी, तभी आनन्द प्राप्त हो सकेगा।

नवरात्रि की इन्हीं सद्भावनाओं को एक समृद्धि पर्व बना देने के लिए, अपने जीवन में उतार लेने के लिए और स्थायी रूप से घटना बना देने के लिए साधक को चाहिए कि वह इस पर्व का लाभ उठाकर अपने जीवन को पूर्ण कर ले... और जब ऐसा हो जाता है, तब समस्त भौतिक स्थितियां उस साधक के सामने हाथ बांधे खड़ी रहती है।

इसके लिए साधकों को चाहिए, कि वे पहले से ही इन साधनाओं को सम्पन्न करने हेतु नवरात्रि पैकेट, जो कि मंत्रसिद्ध व प्राणश्चेतनायुक्त हो, मंगवाकर रख लें, वैसे तो इस सामग्री पैकेट का मूल्य बहुत अधिक है परन्तु अधिक से अधिक साधक इन नौ दिनों की इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न कर सके अत: गुरुदेव से प्रार्थना करके साधकों के लाभार्थ इन नौ दिनों की सारी सामग्री की न्यौछावर सिर्फ 660 रुपये कर दी गई है।

ये पैकेट बहुत ही कम उपलब्ध हो पाये हैं, अत: जिसका भी ऑर्डर पहले मिल जायेगा उसे ही यह दुर्लभ विशिष्ट पैकेट प्राप्त हो सकेगा।

नवरात्रि प्रयोग

नवरात्रि के पैकेट में उपलब्ध सामग्री है-

1. गोमती चक्र, 2. मनोकामनापूर्ति फल, 3. शंख, 4. नवशक्ति यंत्र, 5. रुद्राक्ष, 6. तांत्रोक्त नारियल, 7. लाल हकीक माला, 8. पारद गुटिका, 9 लघु नारियल।

साधक को चाहिए कि प्रातः या रात्रि, किसी एक समय को निश्चित करके ही इन प्रयोगों को सम्पन्न करें। इसके पश्चात् स्नान आदि से निवृत्त होकर पश्चिम या उत्तर दिशा की ओर मुख कर पीले आसन पर, पीले वस्त्र धारण कर गुरु चादर ओढ़कर ही प्रयोग सम्पन्न करे।

इसके बाद सामने एक चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर, उस पर एक चावल की ढेरी बनाकर 'नवशक्ति यंत्र' को जल से शुद्ध करके स्थापित कर दें, इसी प्रकार चावल की अलग-अलग ढेरियां बनाकर अन्य सामग्री को भी स्थापित कर दें, फिर कुंकुम, धूप, दीप, फूल, फल आदि से पूजन सम्पन्न कर, अपने बायीं ओर कुंकुम व अक्षत से 'स्वस्तिक' का चिह्न बनाकर उस पर जल से भरा कलश स्थापित कर उसमें 5 या 11 आम के या अशोक के पत्ते लगाकर, एक नारियल पर कलावा बांधकर उस पर स्थापित कर दें, तथा कलश और नारियल पर भी कुंकुम से 'स्वस्तिक' का चिह्न बनाकर, तत्पश्चात् शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित कर प्रयोग प्रारम्भ करें।

ध्यान रहे, कि दीपक शुद्ध घी का हो, और अखण्ड रूप से नौ दिन तक जलता रहे, बुझे नहीं, यह आवश्यक है।

साधक पूरे नौ दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, एक समय ही भोजन करें, जमीन पर ही सोयें, दिन में निद्रा अधिक न लें, यथासम्भव बातचीत कम ही करें, तो ज्यादा उचित रहेगा।

यह नवरात्रि पर्व तो अपने-आप में ही एक दिव्य पर्व होता है समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने का, यह माँ दुर्गा द्वारा उत्पन्न नौ शक्तियों से सम्बन्धित दिवस है, जिनकी साधना करने से शीघ्र लाभ होता ही है। शास्त्रों में भी दुर्गा के स्वरूपों की विवेचना करते हुए कहा गया है-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्;
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च,
सप्तमं कालरात्रि च महागौरीति चाष्टमम्;
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः।

साधना सम्पन्न करने से पूर्व सर्वप्रथम साधक अपने इष्ट का ध्यान करें, फिर गणपति का स्मरण करें तथा हाथ में जल लेकर मनोकामना पूर्ति हेतु संकल्प लें, फिर साधना सम्पन्न करें।

1. शैलपुत्री प्रयोग

यह दुर्गा का प्रथम उदात्तमयी शक्तिपुंज स्वरूप है, जो साधकों को अभीष्ट प्रदान करती है। अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति के लिए तथा स्त्री-पुरुष दोनों के लिए यह प्रयोग उपादेय है, अतः इसीलिए इसे 'अखण्ड सौभाग्यवती दिवस' भी कहा गया है। साधकों को चाहिए कि वे निम्न मंत्र का पांच माला जप करें-

मंत्र

ॐ ऐं अखण्ड सौभाग्यं शैलपुत्रीं देहि साधय स्वाहा।

2. ब्रह्मचारिणी

कई बार कई कारणों से व्यक्ति को कठोर परिश्रम करने के उपरांत भी अपने कार्यों में सफलता नहीं मिलती, वह जो भी कार्य अपने हितार्थ करता है, उसका विपरीत फल ही उसे प्राप्त होता है और अंत में वह हताश हो अपने जीवन को भार स्वरूप समझने लगता है।

ऐसे व्यक्तियों के लिए शास्त्रों में विशिष्ट ब्रह्मचारिणी दुर्गा का प्रयोग वर्णित है, जिसके द्वारा व्यक्ति सहज ही कठिनाइयों को पार करता हुआ पूर्ण भाग्योदय लाभ प्राप्त करता है। निम्न मंत्र का पाँच माला जप करें-

मंत्र

ॐ श्रीं पूर्णभाग्योदयं ब्रह्म चारिण्यै श्रीं नमः।

3. चंद्रघंटा प्रयोग

व्यक्ति के पास धन भले ही न हो, किन्तु स्वास्थ्य आवश्यक है, क्योंकि स्वस्थ होने पर ही वह समस्त भोगों को भोग सकता है, अस्वस्थ व्यक्ति को सभी लोग भार मानते हैं, और उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, इस कारण से बीमार व्यक्ति जहां शारीरिक रूप से कमजोर रहता है, वहीं जीवन में सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकता।

मां दुर्गा के इस चन्द्रघंटा स्वरूप की साधना सभी रोग और व्याधियों को नष्ट करने में सहायक है, जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, वह आरोग्य होकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है। निम्न मंत्र का पाँच माला जप करें-

मंत्र :

ॐ क्लीं रोगान् रोधय चन्द्रघण्टायै क्लीं फट्।

4. कूष्माण्ड सिद्धि प्रयोग

कूष्माण्ड, ब्रह्माण्ड भेदन प्रयोग है अर्थात् ब्रह्माण्ड से सब कुछ प्राप्त कर लेना। ब्रह्माण्ड से जो रश्मियाँ निकलती है, इस निम्न मंत्र की पाँच माला जप करने पर उसके शरीर मे सौन्दर्य की वृद्धि हो जाती है, उसके शरीर का कायाकल्प हो जाता है.. जिसके शरीर में सौन्दर्य नहीं है, आकर्षण नहीं है उसे इस मंत्र का अधिक से अधिक जप करना चाहिए।

मंत्र

ॐ क्लीं कूष्माण्डे कायाकल्पं क्लीं ॐ

5. स्कन्द माता सिद्धि प्रयोग

यदि किसी के सन्तान उत्पन्न नहीं हो रही है या पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हुआ हो उसके लिए शास्त्रों में, वेदों में इस प्रयोग का गोपनीय ढंग से उल्लेख किया गया है, वही प्रयोग यहां पाठकों के लाभार्थ हेतु दिया जा रहा है, जिसे नवरात्रि के पाँचवे दिन, जो कि 'पुत्रेष्टि दिवस' के नाम से प्रसिद्ध है, सम्पन्न करने पर पुत्र-सुख प्राप्त होता है। निम्न मंत्र का पाँच माला जप करें-

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं पुत्रान् देहि ह्रीं ऐं फट्।

6. कात्यायनी सिद्धि सफल्य प्रयोग

कात्यायनी प्रयोग अपने-आप में अत्यधिक तीक्ष्ण एवं दिव्यतम प्रयोग है, जिसका प्रयोग करने पर निश्चित लाभ होता ही है, इस प्रयोग को किये हुए सैकड़ों साधक साक्षी हैं, जो इससे लाभान्वित हुए हैं। कात्यायनी पूर्ण सौन्दर्यमयी हैं, इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हैं अर्थात् साधक जो सोचे, वह हो जाय, इसके लिए निम्न मंत्र का पाँच माला जप सम्पन्न करें-

मंत्र

क्रीं कात्यायनी क्रीं नमः।

7. कालरात्रि दुर्गा प्रयोग

शत्रु का होना जीवन में सबसे दु:खदायी है, एक के रहते हुए भी जीवन कंटकाकीर्ण हो जाता है। जीवन में शत्रु का होना स्वाभाविक है, और ऐसी स्थिति में इस प्रयोग की आवश्यकता होती ही है? क्योंकि कालरात्रि दुर्गा शत्रु संहार करने वाली देवी हैं, जो कि साधक को बल प्रदान कर शत्रुओं से उसकी रक्षा करती है तथा शत्रुओं को परास्त करने में सहायक सिद्ध होती ही है, अत: नवरात्रि के सातवें दिन इस निम्न मंत्र का पाँच माला जप साधक को करना ही चाहिए।

मंत्र

ॐ फट् शत्रून् साधय घातय ॐ

8. महागौरी सिद्धिदायक प्रयोग

दुर्गा की आठवीं शक्ति पूर्ण महालक्ष्मी स्वरूपा हैं, जो साधक को वाहन, भवन निर्माण एवं नवनिधियों की प्राप्ति कराने में सहायक है।

यह भगवती दुर्गा की सौम्य साधना है, जो सरलता से निम्न मंत्र की पाँच माला जप कर सम्पन्न की जा सकती है।

मंत्र

ॐ नवनिधि गौरी महादेवायै नम:।

9. सिद्धिदात्री प्रयोग

हर व्यक्ति की यह आकांक्षा होती है, कि वह उच्च से उच्च पद को प्राप्त करे, जहां पर भी वह कार्यरत है, उसका नाम समस्त देश में फैले, और वह कुछ ऐसा करे, जिससे उसकी कीर्ति दिनोंदिन बढ़ती ही जाय।

जो लोग राजनीति में हैं, उन्हें भी अपना भाग्य अनिश्चित सा लगता है। कब, क्या स्थिति उत्पन्न हो जाय कुछ कहा नहीं जा सकता, अत: यश, सम्मान, ऐश्वर्य प्राप्ति, उच्च पद प्राप्ति हेतु शास्त्रों में इस महत्वपूर्ण साधना का उल्लेख किया गया है।

नवरात्रि का यह अंतिम दिवस 'सिद्धिदायक श्रेष्ठ तांत्रिक दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है, अत: इस दिन कैसी भी तंत्र साधना हो, सफलता मिलती ही है। साधकों को चाहिए, कि वे निम्न मंत्र का पाँच माला जप करें–

मंत्र

ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं सिद्धिदात्र्यै स्वाहा।

जहां ये साधनाएं भौतिक मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु सहायक हैं, वहीं ये आध्यात्मिक स्तर पर भी साधक के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होती हैं। इन साधनाओं को सम्पन्न कर साधक अध्यात्म की श्रेष्ठ ऊंचाइयों को भी छू लेता है।

इन साधनाओं में उस दिन उस साधना का पाँच माला मंत्र जप ही पर्याप्त है, यदि साधक की इच्छा हो, तो वह 11 या 21 माला मंत्र जप भी सम्पन्न कर सकता है।

साधना काल में साधक दुकान, फैक्टरी आदि किसी भी स्थान पर स्वतंत्र रूप से आ–जा सकता है, ऐसा कोई नियम नहीं है, कि घर में ही रहकर नौ दिन तक साधना सम्पन्न करनी है, वह अपने सभी कार्य भली–भांति पूर्ण कर सकता है, किन्तु साधना का समय निश्चित होना चाहिए, और साधना समाप्ति के पश्चात् 21 दिन तक उस सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर रखनेके पश्चात् 22वें दिन किसी जलाशय में उसे विसर्जित कर दें। यदि ऐसा सम्भव न हो, तो किसी देवी मंदिर में चढ़ा दें। इस साधना को घर का कोई भी सदस्य सम्पन्न कर सकता है, उसे लाभ प्राप्त होगा ही।
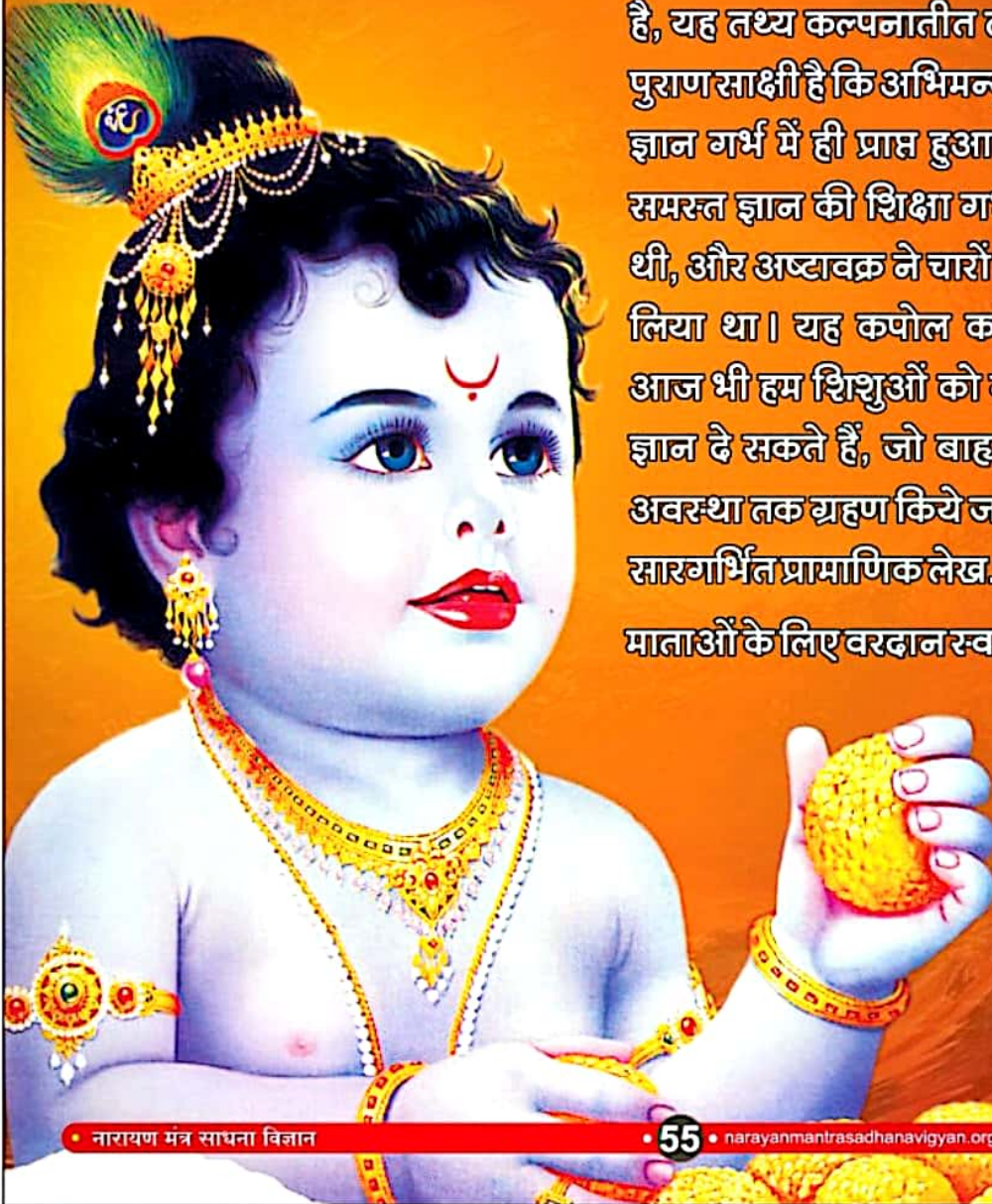
माँ का गर्भ उच्चकोटि का ज्ञान शिक्षण केन्द्र होता है, यह तथ्य कल्पनातीत लग सकता है, पर हमारे पुराण साक्षी है कि अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान गर्भ में ही प्राप्त हुआ था। महर्षि शुकदेव ने समस्त ज्ञान की शिक्षा गर्भ में रहकर ही सीख ली थी, और अष्टावक्र ने चारों वेदों को गर्भ में ही सीख लिया था। यह कपोल कल्पित घटनाएं नहीं हैं, आज भी हम शिशुओं को गर्भ काल में ही वह सब ज्ञान दे सकते हैं, जो बाह्य जीवन में 25 वर्ष की अवस्था तक ग्रहण किये जाते हैं। एक मौलिक और सारगर्भित प्रामाणिक लेख.......

माताओं के लिए वरदान स्वरूप.....

एक शिशु अपनी मां के गर्भ में सर्वथा चैतन्य और पूर्णतायुक्त होता है, एक ऐसा शिशु जिसने अभी जन्म नहीं लिया है, परन्तु जो ब्रह्म का ही साक्षात् अंश है, जिस पर अभी संसार की काली छाया नहीं पड़ी है। जो अभी स्वार्थ से लिप्त नहीं हुआ है, जो अभी किसी प्रकार के संबंधों से बंधा नहीं है, और ऐसा शिशु जो सब कुछ देखने-समझने और सीखने के लिये आतुर है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार तीसरे माह के आरम्भ में गर्भ में स्थापित हुए मांस-पिण्ड में गति और हलचल उत्पन्न हो जाती है, ठीक तीन माह 27 दिन पर उस निर्जीव पिण्ड में प्राणों का संचार हो जाता है, उसमें धड़कन और चेतना व्याप्त हो जाती है, लगभग इसी समय यह बालक या बालिका स्वरूप भी अख्तियार कर लेता है। अब यह भ्रूण एक जागरुक व चैतन्य मानव का रूप ले लेता है।

हमारी यह यात्रा इस समय के आसपास ही शुरू होती है। शास्त्रों के अनुसार चौथे माह के आरम्भ से आठवें माह तक इन पांच महीनों में बालक अत्यधिक चैतन्य और पूर्ण रूप से संग्राहक बुद्धि को लिए होता है। यह ब्रह्म का ही अंश होता है। इसलिए उसमें ग्रहण करने की अत्यधिक क्षमता होती है। इस अवधि में वह जो कुछ भी सीखता है वह ज्ञान स्थायी और अमिट होता है।

चौथे माह के आरम्भ से आठवें माह तक इन पांच महीनों में बालक अत्यधिक चैतन्य और पूर्ण रूप से संग्राहक बुद्धि को लिए होता है। यह ब्रह्म का ही अंश होता है। इसलिए उसमें ग्रहण करने की अत्यधिक क्षमता होती है।

यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि 22 वर्ष के युवक में जितनी ग्रहण शीलता और संग्राहक वृत्ति होती है, उतनी ही संग्राहक वृत्ति गर्भस्थ शिशु में भी होती है। जन्म के बाद ऐसी शिक्षा प्राप्त बालक जल्दी ही उस शिक्षा में पारंगत हो जाता है, क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि पहले से ही सशक्त होती है। अत: माता-पिता को पहले से ही निश्चय कर लेना चाहिये कि गर्भस्थ शिशु को किस प्रकार का ज्ञान और शिक्षण देना है।

मेरे एक शिष्य जो कि प्रसिद्ध गणितज्ञ है, अपने शिशु को विश्वस्तरीय गणितज्ञ बनाना चाहते थे। पत्नी के गर्भवती होने पर वे दंपत्ति मेरे पास आए और मुझसे याचना की कि मैं साधनात्मक विधि से अजन्मे शिशु के शिक्षण की व्यवस्था करूं।

उनके अनुरोध की रक्षा करते हुए उनकी पत्नी को सूर्य विधि के द्वारा मंत्र साधना संपन्न कराई। मेरी आज्ञानुसार वह गणितज्ञ महोदय नित्य अपनी पत्नी के पास बैठकर गणित के समीकरण स्पष्ट करते। ऐसा उन्होंने तीन महीने तक किया।

उचित समय पर बालक उत्पन्न हुआ, और अपनी पांचवी वर्षगांठ पर उसने पिता के समीकरण को गलत सिद्ध करके उसका सही हल भी प्रस्तुत कर दिया। उन्हीं दिनों गणित के अखिल भारतीय सम्मेलन में पांच वर्षीय उस बालक को आमंत्रित किया गया। गणित के गूढ़ रहस्यों को उसने जिस प्रकार स्पष्ट किया उससे सभी विद्वान ठगे से रह गये। सभी विद्वानों ने एक स्वर में यह स्वीकार किया कि यह बालक भविष्य में विश्व स्तरीय गणितज्ञ बन सकेगा।

इस प्रकार के मैंने बहुत से परीक्षण किये हैं, और मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि गर्भस्थ शिशु को सिखाना अत्यन्त सुलभ होता है, और उसे जो भी सिखाया जाता है वह सटीक, प्रामाणिक और अमिट होता है।

पर यह कार्य सम्पन्न कैसे हो। इसके लिये एक परम गोपनीय सूर्य साधना का विधान है। सर्वप्रथम साधक अपने गुरु को प्रसन्न कर सूर्य सिद्धि प्राप्त करे तभी वह सूर्य साधना के माध्यम से गर्भ स्थित शिशु को चेतना युक्त व संग्राहक युक्त बना सकता है। यह साधना 49 दिनों की है, जिसे किसी भी महीने की द्वादशी से प्रारम्भ कर सकते हैं।

सूर्य विधि

नित्य स्नान कर शुद्ध श्वेत धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने मार्तण्ड यंत्र एवं मार्तण्ड चित्र को स्थापित कर दें, जो कि मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो। फिर पंचोपचार विधि से यंत्र एवं चित्र की पूजा करें, अब दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें

विनियोग

अस्य सूर्य मंत्रस्य भृगु ऋषिः गायत्री छन्दः दिवाकरो देवता
ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः गर्भस्थ दृष्य श्रव्य फल सिद्धये जपे विनियोगः।

अब हाथ जोड़कर सूर्य ध्यान करें

ध्यान

रक्तांबुज युग्मभय दानहस्तं केयूरहारांगवकुंडजाद्यम्।
माणिक्यमौलिं दिननाथमीड्ये बंधूक भांति विलसं त्रिनेत्रा।

अब स्फटिक माला से निम्नलिखित मंत्र जप करें

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं तेजसे गर्भस्थ चैतन्य व्रं ह्रीं ॐ ॥

नित्य 51 माला मंत्र जप करें और साधना काल में मात्र दूध का सेवन करें। पूरे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए भूमि शयन करें और मौन रहने का प्रयास करें।

49 दिनों तक साधना संपन्न करने के पश्चात् 11 कुमार बालकों को दूध से बना भोजन करायें, श्वेत वस्त्र पहनायें व दक्षिणा दें, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है।

प्रयोग करते समय गर्भिणी स्त्री को पवित्र अवस्था में अपने समक्ष बैठाएं, अब इसी सूर्य मंत्र से उसके गर्भ का प्रोक्षण करें और शिशु चैतन्य करें। गर्भस्थ शिशु के सामने पांच माला मंत्र जप करने पर वह चैतन्य हो जाता है और वह शिशु तीन घंटे तक चैतन्य रहता है, उस अवधि में उसे जो भी सिखाया जाता है वह मां के द्वारा ग्रहण करता रहता है।

मां को भी अगले तीन महीने तक संयमित रहना है वह नित्य अपने सिर धोकर खुले बालों से सूर्य का पूजन करें और स्फटिक माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। तत्पश्चात् शांत चित्त से पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सफेद आसन पर बैठें तथा जो भी शिक्षण दिया जाये उसे ध्यान पूर्वक सूनें। वास्तव में ही हमारा ज्ञान अत्यधिक समृद्धिशाली है। यह दुर्भाग्य का विषय है कि हम उस क्रिया को विस्मृत कर बैठे हैं, जिससे गर्भस्थ शिशु को शिक्षण दिया जा सके। हमें चाहिये कि अपने सद्गुरु के चरणों में बैठकर इस अद्वितीय विद्या को प्राप्त करें और उत्तम कोटि के बालकों का निर्माण करें, जिससे आगे चलकर वे माता-पिता गुरु और देश का नाम उज्ज्वल कर अतुलनीय यशस्वी हो सकें। (पूज्य सद्गुरुदेव के प्रवचन से साभार)

साधना सामग्री : 450/-

जगदीश्वर विष्णु स्तोत्र

'जगदीश्वर' जो सम्पूर्ण जगत के पालनकर्ता हैं, जिनकी इच्छा से समस्त चराचर जगत गतिशील है, जो पूर्ण पुरुष हैं, जिन्होंने अपने वक्षस्थल में 'श्री वत्स' धारण किया हुआ है और चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए हुए हैं, क्षीर सागर में शेष नाग की शैय्या पर विराजमान हैं, सृष्टि के पालनकर्त्ता हैं, लक्ष्मी जिनकी सेवा में निरंतर अग्रसर रहती हैं, जिनके आश्रय में जाकर निर्बल से निर्बल प्राणी भी स्वयं को बली अनुभव करता है, उन जगतव्यापी जगदीश्वर को भगवान विष्णु भी कहा गया है। ऐसे जगदीश्वर की साधना के फलस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन में आध्यात्मिक स्थिति में तो उच्चता प्राप्त कर ही लेता है, श्री सम्पन्न होने के कारण उसे भौतिक पूर्णता भी प्राप्त होती है।

जगदीश्वर विष्णु ध्यान

उद्यत्-प्रद्योतन-शत-रुचिं तप्त-हेमावदाभम्।
पार्श्व द्वन्द्वे जलधि-सुतया विश्व धात्र्या च जुष्टम्।।
नाना रत्नोल्लसित-विविधाकल्पमापीत वस्त्रम्।
विष्णुं वन्दे वर कमल कौमोदिकी चक्र पाणिम्।।

मूल पाठ

ॐ आदाय वेदाः सकलाः समुद्रान्निहत्य शङ्ख रिपुऽत्युदग्रम्।
दत्ताः पुरा येन पितामहाय, विष्णुं तमाद्यं भज मत्स्य-रूपम्।।
दिव्यामृतार्थं मथिते महाब्धौ देवासुरैर्वासुकि-मन्दराद्यैः।
भूमेर्महा-वेग-विघूर्णितायास्तं, कूर्ममाधार-गतं-स्मरामि।।
समुद्रकाञ्ची सरिदुत्तरीया, वसुन्धरा मेरु-किरीट-भारा।
दंष्ट्राग्रतो येन समुद्धृता भूस्तमादि-कोलं शरणं प्रपद्ये।।
भक्तार्ति-भङ्ग-क्षमया धिया यः, स्तम्भान्तरालादुदितो नृसिंहः।
रिपुं सुराणां निशितैर्नखाग्रैर्विदारयन्तं न च विस्मरामि।।
चतुस्समुद्राऽऽभरणा धरित्री, न्यासाय नालं चरणस्य यस्य।
एकस्य नान्यस्य पदं सुराणां, त्रि-विक्रमं सर्व-गतं नमामि।।
त्रि- सप्त-वारं नृपतीन्निहत्य, यस्तर्पणं रक्त-मयं पितृभ्यः।
चकार दोर्दण्ड-बलेन सम्यक्, तमादि-शूरं प्रणमामि रामम्।।
कुले रघूणां समवाप्य जन्म, विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः।
लंकेश्वरं यः शमयां चकार, सीता-पतिं तं प्रणमामि भक्तया।।

हलेन सर्वानसुरान्निकृष्य, चकार चूर्णं मूषल-प्रहारैः।
यः कृष्णमासाद्य बलं बलीयान्, भक्त्या भजे तं बलभद्र-रामम्॥
पुरा सुराणामसुरान् विजेतुं, सम्भावयंश्चीवर-चिह्न-वेशम्।
चकार यः शास्त्रममोघ-कल्पं, तं मूल-भूतं प्रणतोऽस्मि बुद्धम्॥
कल्पावसाने निखिलैः खुरैः स्वैः संघट्टयामास निमेष-मात्रात्।
यस्तेजसा स्वेन ददाह भीमो, विष्ण्वात्मकं तं तुरगं भजामः॥
शंखं सु-चक्रं सु-गदां सरोजं, दोर्भिर्दधानं गरुडाधिरुढम्॥
श्रीवत्स-चिन्हं जगदादि-मूलं तमाल-नीलं हृदि विष्णुमीडे॥
श्रीराम्बुधौ शेष-विशेष तल्पे, शयानमन्तः स्मित शोभि वक्त्राम्।
उत्फुल्ल-नेत्राम्बुजमम्बुदाभमाद्यं श्रुतीनामसकृत स्मरामि॥

फल-श्रुति

प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम्।
धर्मार्थ-काम मोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमम्।

॥ श्रीविष्णु-स्तवः सम्पूर्णम् ॥

अति भयंकर शंखासुर राक्षस को मार कर असुरों द्वारा समुद्र में प्रक्षिप्त सभी वेदों को निकालकर पितामह ब्रह्मा को समर्पित करने वाले 'मत्स्यावतार' उस आद्यशक्ति विष्णु को नमन करता हूँ।

दिव्यतम अमृत को प्राप्त करने के लिए सुर और असुरों द्वारा वासुकि नाग और मन्दराचल पर्वत के द्वारा समुद्र मंथन से विचलित पृथ्वी को स्तम्भित करने वाले 'कूर्मावतार' भगवान की मैं वन्दना करता हूँ।

समुद्र जिसकी करधनी है, नदी रूपी उत्तरीय धारण की हुई, सुमेरु पर्वत को मुकुट बना कर पहनी हुई वसुमति पृथ्वी को दांत के अग्रभाग पर धारण किये हुए 'शूकर अवतार' भगवान विष्णु का मैं ध्यान करता हूँ।

भक्त प्रह्लाद के कष्ट को दूर करने के लिए स्फटिक के स्तंभ को विदीर्ण करके प्रकट हुए देवों के शत्रु हिरण्यकश्यप को नखों के अग्रभाग से चीर डालने वाले 'नृसिंहावतार' भगवान विष्णु को मैं नमन करता हूँ।

चारों समुद्रों से विभूषित विस्तृत पृथ्वी पर चरण स्थापन के लिए जिसे स्थान नहीं मिला, स्वर्ग में भी द्वितीय चरण रखने के लिये जिसे जगह नहीं मिल पाई, उस 'वामनावतार' भगवान को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिसने अपने भुजबल से इक्कीस बार अनेक उद्दंड क्षत्रिय राजाओं को मारकर अपने पितरों को तृप्त किया, उन आदि वीर 'परशुराम' को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

पावन रघु कुल में जन्म लेकर समुद्र में पुल बांध कर तथा लंका में जाकर रावण का वध करके सीता को प्राप्त करने वाले 'भगवान राम' की भक्ति भाव से वन्दना करता हूँ।

भगवान श्रीकृष्ण की शक्ति से बल प्राप्त करके, हल से खींच कर मूसल प्रहार से अपने समस्त शत्रुओं का संहार करने वाले 'वीरवर बलराम जी' को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिसने असुरों को परास्त करने के लिए चीवर-वेश धारण किया था तथा दिव्यतम शास्त्र ज्ञान को देवताओं में प्रचारित किया, उस मूलभूत 'बुद्धावतार' को मैं नमन करता हूँ।

जिसने कल्प के अंतिम समय में अपने तीखे खुरों के अग्रभाग से समस्त पृथ्वी को खोद डाला तथा सारे संसार को अपने तेज से भस्म करके नष्ट करने वाले भगवान 'हयावतार' को मैं प्रणाम करता हूँ।

चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए, जिनका वक्षस्थल श्री वत्स चिन्ह से सुशोभित है, गरुड़ पर विराजमान, समस्त जगत के आदि पुरुष, श्याम वर्ण 'भगवान विष्णु' को मैं नमन करता हूँ।

फलश्रुति

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए परम पुरुष उस परमेश्वर को इस स्तुति द्वारा प्रसन्न करें।

ध्यान

संसार के समस्त मानसिक तनावों से मुक्ति पाने का एकमात्र साधन है

मनुष्य मन सदा एक विषय से दूसरे विषय की ओर भागता रहता है, विचारों का यह प्रयास अनवरत चलता ही रहता है, अतः यह बात स्पष्ट है, कि किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करने के लिए मन का अनुशासित होना आवश्यक है।

दिनभर के क्रिया-कलापों तथा बाह्य जगत से प्राप्त नित्य-निरंतर उत्तेजनाओं से घिरे हुए, विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त मनुष्य जब नींद की अवस्था में पहुंच कर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, तब उसका अशांत मन अपेक्षाकृत शांत हो जाता है।
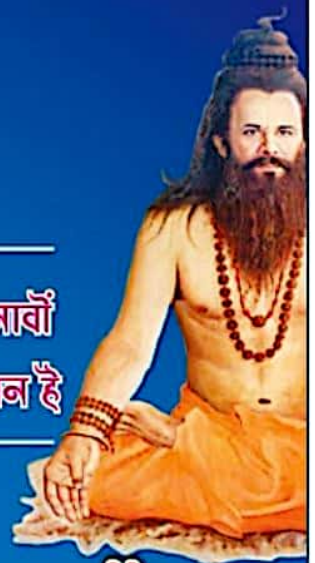
ध्यान क्यों आवश्यक है

यह प्रश्न मनुष्य के मन में उठता ही है। प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों आदि ने 'ध्यान' करने की प्रक्रिया पर ही अधिक जोर दिया है, इसके पीछे जरूर कोई महत्वपूर्ण अर्थ छिपा होगा, युगों का पुराना चिंतन-अनुभव छिपा होगा, जिसके आधार पर उन्होंने मनुष्य को ध्यान करने का उपदेश दिया, आवश्यकता है उस चिंतन को समझने की।

मनुष्य की विभिन्न प्रकृतियां उसके चरित्र पर इतना अधिक दबाव डालती हैं, कि वह बहुधा खिन्न और अप्रसन्न दिखने लगता है। मनुष्य-मन में व्याप्त द्वन्द्व व विचार उसका एक कदम आगे बढ़ाते हैं, तो दूसरा पीछे, तीसरा कदम दायें, तो चौथा बायें, इस तरह वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता और न ही प्रगति कर सकता है, भले ही उसके ये प्रयास अनन्त काल तक चलते रहें, विरोधी इच्छाएं उसे निराशा और असफलता प्रदान कर धराशायी बना देती हैं, ऐसे मनुष्य के लिए यह आवश्यक है, कि अपने भग्नकारी द्वन्द्व को शांत करे तथा एक निश्चित दिशा में प्रगति करने के लिए एकाग्रचित मन से प्रयास प्रारंभ कर दे, तभी वह अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंच सकेगा। जब तक वह ऐसा नहीं करेगा, तब तक वह अपनी शक्ति का अपव्यय ही करेगा और उसके हाथ कुछ भी नहीं लगेगा।

इसलिए मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समन्वित करने की आवश्यकता है, इसके लिए सर्वप्रथम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों में सामञ्जस्य बिठाना अत्यंत आवश्यक है और इस सामञ्जस्य को प्राप्त करने का सरल उपाय है - 'ध्यान'।

ध्यान के माध्यम से मनुष्य अपने अंतर-बाह्य मन में शांति अनुभव करने लगता है और तब इच्छाओं का परस्पराघाती युद्ध समाप्त हो जाता है, वह अपने पथ से विचलित नहीं होता, क्योंकि वह ज्ञान की दृष्टि से जीवन को समग्र रूप से देखने लग जाता है, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहता, जहां उसे सफलता प्राप्त न हो, क्योंकि वह एक ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेता है, जहां उसका प्रयास निरर्थक नहीं जाता और न ही उसकी शक्ति का अपव्यय होता है, तब वह अपनी शक्ति को एकत्रित कर पूर्णता से किसी भी कार्य को सम्पन्न कर लेता है।

अधूरे मन से या अशांत मन से किया गया कोई भी कार्य विपथगामी परिणाम ही देता है। शास्त्रानुसार मनुष्य अनन्त और असाधारण शक्तियों का स्वामी है, किन्तु अन्तर्द्वन्द्वों व तनावों से घिरे रहने के कारण मनुष्य अपने शक्ति-भण्डार का केवल एक कण मात्र ही प्रयोग कर पाता है, अतः निराशा अवश्यम्भावी है। जब तक मनुष्य मन की मूल धारणा को नहीं समझ सकेगा, तब तक वह तनाव युक्त ही रहेगा।

।। मत्वा सीव्यति स मनुष्यः ।।

अर्थात् 'मन' धातु से मनुष्य का अर्थ है, जो चिंतन करे, विचार करे या विवेक पूर्वक कार्य करे और मनुष्य तब तक सही अर्थों में मनुष्य कहलाता है, जब वह मन पर अपना नियंत्रण कर पाने में सक्षम हो पाता है।

।। धीयते इति ध्यानं ।।

अर्थात् 'जिससे मन का स्थिरीकरण हो जाय, वह ध्यान है।' ध्यान के निरंतर अभ्यास से मन को समस्त इन्द्रिय विषयों से हटाया जा सकता है, तब मन पर अंकुश रखने वाली बुद्धि ही यह आदेश देती है, कि वह मस्तिष्क से समस्त विचारों को समाप्त कर केवल एक ही चिंतन-मनन-करे, केवल एक ही बिन्दु पर अपने मन को एकाग्र करे, केवल एक ही सर्वव्यापी सत्ता पर अपना ध्यान केन्द्रित करे।

यह एक सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक साधना है और इस साधना के निरंतर करते रहने पर एक समय ऐसा आता है, जब मन एक ही विषय का चिंतन करने योग्य बन जाता है, और ऐसा मन शक्ति पुञ्ज बन जाता है।

इस स्थिति को प्राप्त कर लेने के उपरांत व अपने वास्तविक रूप को पहिचान लेने के बाद फिर बाहरी क्रियाकलाओं से, संसार के क्षणिक सुखों व अस्थिर दुःखों से वह विक्षुब्ध नहीं होता, फिर न सम्पन्नता उसे बिगाड़ सकती है और न ही विपत्ति उसे गिरा सकती है। मन, बुद्धि के द्वारा ध्यानावस्था में प्राप्त

नित्य ध्यानाभ्यास से शुद्ध चेतना में प्रतिष्ठित मन की अंतर्भेदी दृष्टि के सामने से सारे आवरण हट जाते हैं, फिर सभी जटिलताओं से मुक्त होकर मन कभी भी संशय और भय से ग्रस्त नहीं होता।

बिना ध्यान के जीवन दुःखों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से घिरे होने के कारण तनाव युक्त हो जाता है, इसलिए ध्यान जीवन का उल्लास है, और सही अर्थों में कहा जाए, तो जीवन की पूर्णता है।

।। धीयते इति ध्यान ।।

'जिससे मन का स्थिरीकरण हो जाय, वह ध्यान है।'

सत्-चित्-आनन्द का साक्षात्कार जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। नित्य ध्यानाभ्यास से शुद्ध चेतना में प्रतिष्ठित मन की अंतर्भेदी दृष्टि के सामने से सारे आवरण हट जाते हैं, फिर सभी जटिलताओं से मुक्त होकर मन कभी भी संशय और भय से ग्रस्त नहीं होता।

बिना ध्यान के जीवन दुःखों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से घिरे होने के कारण तनाव युक्त हो जाता है, इसलिए ध्यान जीवन का उल्लास है, और सही अर्थों में कहा जाए, तो जीवन की पूर्णता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि ध्यान कैसे किया जाए?

1 ध्यान के लिए पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए।

2 गृहस्थ साधकों के लिए कुश या ऊन का आसन अनुकूल माना जाता है।

3 सबसे पहले साधक को पूरक, कुम्भक और रेचक विधि से प्राणायाम करना चाहिए, जिससे मन को एकाग्र किया जा सके।

4 इसके बाद तीन बार ॐ की ध्वनि का उच्चारण करना चाहिए।

5 अब ध्यान के लिए एक ऐसी अनुकूल शारीरिक मुद्रा अर्थात् आसन, जिसमें रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी हो, अतः सुखासन, पद्मासन तथा सिद्धासन में से अपनी इच्छानुसार जिस आसन में आप सहजता से बैठ सकें, उसका चयन कर लें।

6 झुकी हुई रीढ़ की हड्डी स्नायु रचना में बाधक बनती है, जिससे भावों एवं विचारों की तारतम्यता छूट जाती है। यदि मेरुदण्ड सीधा रहता है, तो स्वतः मानसिक समत्व बना रहता है।

7 आसन पर बैठने के उपरान्त दृष्टि किसी भी एक बिन्दु पर केन्द्रित होनी चाहिए।

8 इस प्रकार सुखपूर्वक शरीर का तनाव त्याग दें और विचारों के द्वारा स्थूल शरीर में प्रवेश होने की क्रिया करें।

9 यदि मन बहुत चंचल है, तो इसको स्थिर करने के लिए प्रारंभिक अवस्था में मनोवैज्ञानिक विधि अपनाइये, जिससे मन की बाह्य वृत्तियों के रुकने से आभ्यन्तर प्रवेश की स्थिति उत्पन्न हो सके।

आप आँख बन्द करके यह चिंतन करें, जैसे - आप किसी नदी में, नाव में बैठकर धीरे-धीरे बह रहे हैं, नाव लहरों में हवा के झोंके से तैरती हुई कभी नीचे, कभी ऊपर शांत भाव से अपने गन्तव्य की ओर बह रही है, उसमें आप बैठे हुए अनन्त जलराशि को, दूर तक दृष्टि जमाये हुए देख रहे हैं। आपकी नाव लहरों के थपेड़ों से कभी इस किनारे, तो कभी उस किनारे और कभी बीच में आपको ले जा रही है, आप दृष्टा भाव से उसमें बैठकर गहरे चिंतन में खोये जा रहे हैं, किसी अज्ञात आह्लाद से भरकर रोमांचित और प्रफुल्लित हो रहे हैं।

10.इसी तरह आप अपने मन को बाह्य विषयों से अलग करने के लिए अनन्य प्राकृतिक चिंतन का सहारा ले सकते हैं जैसे - जंगल में घूमना, पर्वतों की चोटियों पर स्वच्छन्द विचरण या आकाश में वायु मार्ग से उड़ना आदि, इन विधियों द्वारा धीरे-धीरे आपका मन एकाग्र हो जायेगा और उस ध्यान को जिसे हम 'सम्प्रज्ञात' के नाम से जानते हैं, आपका मन उसमें प्रवेश करने लगेगा।

मनुष्य के लिए ध्यान में उतरना या मन को एकाग्र करना उतना ही आवश्यक है, जितना स्थूल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। मन को सबल और स्वस्थ चिंतन युक्त बनाने के लिए ध्यान अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया है।

A life can be called total only if it encompasses all aspects,

This may sound contradictory but certainly one cannot attain final liberation (Moksha) without understanding enjoyments and desires (Bhog). Without working out all desires one cannot step out of them, one cannot liberate oneself from them.

The Flight from Bhog to Moksha

Today all religions are against pleasures derived through the senses, and they stress on suppressing these senses. The so-called ascetics and saints also preach thus and as a result their personality is split into two. It is because nature has made the body in such a way that it has its own needs which cannot be suppressed in any way.

And those who start working against the natural laws in fact start fighting with themselves by forcibly suppressing their desires. The result is that from inside they remain what they were, ordinary people, but outwardly they pose as celibates and renunciates. This only tends to make the person a hypocrite.....

The reason for it is suppression, the non-acceptance of pleasures and enjoyments. And where such people do not obtain enjoyments, they are also deprived of Moksha as the seeds of desire remain in them.

Moksha means to gain liberation from all desires and such a state can be attained only by enjoying all desires. In fact Bhog and Moksha are two faces of the same coin, if one is **action** the other is the **final result.** Hence if a person is able to enjoy his life to the full, then he will automatically attain to Moksha.

Wise men think alike

Then let it be Krishna, Buddha, Mahavir, Mohammad or Shankaracharya all are of one opinion on this point. The science of Yog too reflects such contemplation. But Tantra crosses all limits and says that if Bhog is the seed then Moksha is the big, Shadowy tree that blooms from it; if Bhog is a bud then Moksha is it's ultimate flowering ! So there is no difference between Bhog and Moksha.

That's why Tantra accepts everything; for it everything is divine, everything is helpful, it never condemns anything....

And the day a person accepts himself totally, alongwith his desires, his passions, he won't need to suppress himself further, and his split personality will become whole. And then without the need of suppression his 'Bhog' would automatically transform into 'Moksha'.

Then even on attaining desirelessness he can enjoy all pleasures without getting stained by them

as Janak did. Such a state can be attained by anyone all one has to do is to live all one's desires and for it there are many Tantrik Sadhanas performing which all one's desires are realised. Wealth, rise in business, promotions, high post, marriage of choice or physical pleasures, all the desires are fulfilled.

Thus enjoying all pleasures the person moves towards a state where no wish is left and he attains to final liberation like Krishana, Mahavir, Buddha, Jesus.....

Beejaawali Shodashi Sadhana

This is a very powerful Tantrik Sadhana which has been credited as the best Sadhana by many Yogis and Tantrik, who say nothing else remains to be done if one accomplishes just this Sadhana.

Procedure

This is a five day practice. Wear white clothes and start the Sadhana at 5.00 in the morning. Sit on a white mat facing North and establish a **Beejawali Shodashi Yantra** on a plate.

Perform Yantra worship with vermilion, unbroken rice grains, flowers, ghee-lamp and fruit. Then offer a **Gauri Shankar Rudraaksha** signifying both Bhog and Moksha on the Yantra and pray for fulfilment of all desires.

Thereafter chant 21 rosaries of the undergiven Mantra with a **'Sfatik Inchhaapoorti Mala'**--

Shreem Hreem Ayeim Kleem Soum Shreem Hreem Kleem Ayeim Hreem Shreem Souh Kleem Ayeim Hreem Shreem.

Do this for five consecutive days. The place of Sadhana must not be frequented by other. Stick to a light vegetarian diet. On the fifth day after the ritual tie the **Yantra, Rudraaksha, Mala,** rice grains etc. in the same white cloth and disperse the bundle in some river, pond or well. On doing so the Sadhana is accomplished, the person gets all his desires fulfilled, and attains to Moksha after leading a life of pleasures and enjoyments.

Sadhana Packet - Rs. 510/-

Fulfil Your Wish

Every person has many wishes in his heart. Everyone also wants to be health, handsome and ever youthful. Everyone wishes for a happy married life and everyone wishes to marry the person of one's choice. But very few are able to realise their wishes. And wishes unfullfilled lead to frustration. In such a situation the best solution is the following Sarvakaamna Prayog, which as the name suggests helps fulfils all one's wishes.

After accomplishment of the Sadhana one becomes healthy and gains an attractive personality. All then wish to be in constant touch with that person. One is able to marry the person of one's choice and one's family life becomes happy and tension free.

Wear pure white clothes after a bath and sit on a white mat facing east early in the morning at 4 am. Cover a wooden seat with white cloth and on it place a Manokaamna Poorti Yantra. Offer on it rice grains, vermilion, flowers, sweet and a lamp. Then chant the following Mantra for 40 minuts.

**Om Kleem Hoom
Manovaanchhitam Siddhaye Phat.**

The next day drop the Yantra in a river or pond and offer food to a girl under ten.

Sadhana Meterial 240/-

Scanned with CamScanner

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित
नारायण मंत्र साधना विज्ञान
कृपया ध्यान दें
1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।
तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।
8890543002
450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।
बैंक खाते का विवरण
खाते का नाम : नारायण साधना
बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड : SBIN0000659
खाता नम्बर : 37219989876
मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर
1 वर्ष सदस्यता 405/-
वशीकरण यंत्र + माला
1 वर्ष सदस्यता 405/-
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
नारायण मंत्र साधना विज्ञान
गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

फोन नं. : 011-79675768, 76975769, 27354368

Printing Date : 15-16 August, 2020
Posting Dadte : 21-22 August, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

आप आने वाले इन दिनों में निम्न विशेष शक्तिपात दीक्षाओं को पूज्य गुरुदेव से प्राप्त कर सकते हैं-

01.09.20	श्री विष्णु स्थापन दीक्षा
श्राद्ध दिनों में	सर्व पितृ मुक्ति दीक्षा
10.09.20	महालक्ष्मी दीक्षा
पुरूषोत्तम मास में	विष्णु वैभव दीक्षा

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002